नंदा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

अल्मोड़ा - अक्टूबर, २०२३ वर्ष - २२ | अंक - २३ विषय - आय सृजन कार्य

सर्वाधिकार सुरक्षित ©

प्रतियाँ – 1200

प्रकाशन सहयोग
राजेश्वर सुशीला दयाल
चैरीटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली

परिकल्पना एवं सम्पादन
अनुराधा पाण्डे

विशेष आभार
पद्मश्री डॉ0 ललित पाण्डे, उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़ी सभी संस्थाएं, ग्राम संकुल एवं महिला संगठन

सहयोग
रमा जोशी, कैलाश पपनै, जी. पी. पाण्डे, धरम सिंह लटवाल, सुरेश बिष्ट, कमल जोशी, जीवन चन्द्र जोशी

कवर डिजाइन
आशीष पाण्डे

सभी फोटो
अनुराधा पाण्डे

टंकण
धरम सिंह लटवाल

उत्तराखंड महिला परिषद्

वर्तमान में सक्रिय संस्थाएं एवं ग्राम संकुल

सक्रिय संस्थाएं :
शेप–बधाणी, कर्णप्रयाग, जिला चमोली
पर्यावरण संरक्षण समिति–पाटी, जिला चम्पावत
नवज्योति महिला कल्याण संस्थान–गोपेश्वर, जिला चमोली

ग्राम संकुल :
मैचून, जिला अल्मोड़ा
बिन्ता, जिला अल्मोड़ा
गल्ला–पाटा, जिला नैनीताल
शामा–गोगीना, जिला बागेश्वर
गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़

प्रकाशक
उत्तराखण्ड महिला परिषद्
द्वारा उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान
अल्मोड़ा–263601

मुद्रक
सत्य शांति प्रेस
लाला बाजार, अल्मोड़ा
फोन–9997157413

पत्रिका में दिये गये विचार लेखक/लेखिका के हैं। परिषद् का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नंदा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

अल्मोड़ा - अक्टूबर, २०२३ वर्ष - २२ | अंक - २३ विषय - आय सृजन कार्य

इस अंक में

क्रम	विवरण	पृष्ठ संख्या
	हमारी बातें–अनुराधा पाण्डे, अल्मोड़ा	1
1	**कम पैसे में नये कौशल सीखे**–रितु आर्या, ग्राम मनीआगर, जिला अल्मोड़ा	7
2	**कल्पना और शिक्षण**–कल्पना गहतोड़ी, ग्राम तोली (पाटी) जिला चम्पावत	10
3	**आय के साधन**–शिवानी आर्या, ग्राम बधाणी, जिला चमोली	13
4	**पारंपरिक रोजगार भी हैं**–कौशल्या रौतेला, ग्राम धारी गोगिना, जिला बागेश्वर	16
5	**कृषि के प्रति रूझान कम**–राजेन्द्र सिंह बिष्ट, गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़	18
6	**दुग्ध उत्पान पर ध्यान**–मानसी बिष्ट, ग्राम कठूड़, जिला चमोली	22
7	**कौशल की आवश्यकता**–अनुष्का बोरा, ग्राम भन्याणी, जिला पिथौरागढ़	23
8	**बदलाव की ओर**–आशा आर्या, ग्राम बानठौक, जिला अल्मोड़ा	25
9	**एक नया माहौल बना**–अनामिका पंवार, ग्राम पुडियानी, जिला चमोली	27
10	**हिनारी में जीवनचर्या**–गीता दानू, ग्राम हिनारी, जिला बागेश्वर	30
11	**आय वृद्धि**–करिश्मा सगोई, ग्राम सुन्दर गाँव, जिला चमोली	32
12	**संस्था द्वारा आय वृद्धि के कार्यक्रम**–पीताम्बर गहतोड़ी, ग्राम तोली (पाटी) जिला चम्पावत	34
13	**बचपन की यादें केन्द्र से जुड़ी है**–शिवानी बिष्ट, ग्राम खल्ला, जिला चमोली	38
14	**कम्प्यूटर एवं सिलाई केन्द्र**–मनीषा बोरा, ग्राम भन्याणी, जिला पिथौरागढ़	40
15	**नयी जानकारियाँ, नये कौशल**–वन्दना पंवार, ग्राम कोली, जिला चमोली	42
16	**आय वृद्धि**–दिया आर्या, ग्राम मल्खा डुगर्चा, जिला बागेश्वर	45
17	**संस्था द्वारा किये जा रहे प्रयास**–रेखा रावत, ग्राम चौण्डली, जिला चमोली	47
18	**आय के साधन**–माया बोरा, ग्राम बोरखोला (खकोली), जिला अल्मोड़ा	51
19	**आय–वृद्धि के लिए प्रयास**–सुनीता गहतोड़ी, ग्राम तोली (पाटी) जिला चम्पावत	53
20	**शिक्षा के प्रति लगन बढ़ी**–बॉबी राम, ग्राम मल्खा डुगर्चा, जिला बागेश्वर	56
21	**आय–वृद्धि के लिए प्रयास एवं लाभ**–विनोद कुमार, ग्राम खोला, जिला अल्मोड़ा	58
22	**सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र बिन्ता**–माया जोशी, ग्राम बिन्ता, जिला अल्मोड़ा	62

23 **आय वृद्धि के लिये प्रशिक्षण**–रचना नेगी, ग्राम जाख, जिला चमोली 64
24 **घर में बहुत काम है**–प्रियंका टाकुली, ग्राम गोगिना हिनारी, जिला बागेश्वर 66
25 **मेरी औली की यात्रा**–रचना नेगी, ग्राम जाख, जिला चमोली 67
26 **रोजगार की आवश्यकता**–ईशा बेरी, ग्राम किमतोला, जिला पिथौरागढ़ 70
27 **लोग खेती को इच्छुक नहीं**–उर्मिला रावत, ग्राम बमियाला, जिला चमोली 71
28 **लगन व निष्ठा से सीखें**–खष्टी रौतेला, ग्राम गोगिना, जिला बागेश्वर 73
29 **रोजगार**–कंचन डसीला, ग्राम डिगारकोली, जिला पिथौरागढ़ 75
30 **कम्प्यूटर केन्द्र काण्डई**–अंजली बर्त्वाल, ग्राम काण्डई, जिला चमोली 76
31 **परिश्रम के हिसाब से दाम कम मिलता है**–पायल बिष्ट, ग्राम कोटेश्वर, जिला चमोली 77
32 **खेती के साथ सिलाई से आय बढ़ायी**–शान्ति रावत, ग्राम सुरना, जिला अल्मोड़ा 79
33 **मेहनत के अनुरूप लाभ मिले**–रेखा बिष्ट, गोपेश्वर, जिला चमोली 81
34 **ग्राम शिक्षण केन्द्र फडियाली**–मनीषा महरा, ग्राम फडियाली, जिला पिथौरागढ़ 83
35 **उचित दाम नहीं मिलते**–पूनम रावत, ग्राम दोगड़ी–काण्डई, जिला चमोली 84
36 **गाँव बदल रहे हैं**–रेनू आर्या, ग्राम कसून, जिला अल्मोड़ा 86
37 **कम्प्यूटर केन्द्र का संचालन**–ज्योति पंवार, ग्राम बछेर, जिला चमोली 88
38 **आय का अर्थ**–अनामिका राणा, ग्राम दोगड़ी–काण्डई, जिला चमोली 91
39 **व्यक्तिगत परिवर्तन हुआ**–माला आर्या, ग्राम नामिक, जिला पिथौरागढ़ 92
40 **ग्राम शिक्षण केन्द्र पल्यूं**–सपना आर्या, ग्राम पल्यूं, जिला अल्मोड़ा 95
41 **सस्ते दाम में बेचना पड़ता है**–साक्षी बिष्ट, ग्राम मण्डल, जिला चमोली 97
42 **महिलाओं के लिए आय के साधन**–सरिता रावत, ग्राम मटेला, जिला अल्मोड़ा 99
43 **नये अवसर मिल रहे**–ईशा रौतेला, ग्राम गोगिना, जिला बागेश्वर 101
44 **प्यारा उत्तराखण्ड**–खष्टी रौतेला, ग्राम गोगिना, जिला बागेश्वर 103

हमारी बातें

नंदा के बीसवें अंक में आजीविका संवर्धन के लिये विभिन्न संस्थाओं द्वारा उत्तराखण्ड के गाँवों में किये जा रहे कार्यक्रमों से उपजे अनुभवों पर एक विश्लेषण दिया गया था। संधान का बिंदु यही था कि पहाड़ी गाँवों में महिलाओं की आर्थिक प्रगति के लिये संचालित कार्यक्रम कितने सार्थक हैं। इस प्रश्न पर चर्चा करना महत्वपूर्ण है क्योंकि बहुधा आय वृद्धि कार्यक्रमों के केन्द्र में स्त्रियाँ है। उनके सशक्तिकरण की अवधारणा के इर्द–गिर्द बुनी गयी रोजगारपरक गतिविधियों का स्वयं महिलाओं तथा ग्राम व्यवस्था पर प्रभाव का आकलन करने से दो बातें स्पष्ट होंगी। पहला, सशक्तिकरण का मतलब क्या है? रोजगारपरक कार्यक्रमों से किस प्रकार का सशक्तिकरण कौन से दायरे में हो रहा है। क्या आर्थिक प्रगति से महिलाएं स्वतः ही सशक्त हो रही हैं अथवा इस चिंतन में अन्य पहलू जोड़े जाने चाहिये? दूसरा पक्ष यह समझना है कि आय वृद्धि कार्यक्रमों में उद्यम कर रही स्त्रियों को उनकी मेहनत के अनुरूप आय प्राप्त हो रही है अथवा नहीं। उदाहरण के लिये अनेक कार्यक्रमों में स्त्रियाँ वही कार्य कर रही हैं जो परंपरागत तौर पर करती आयी हैं। दुग्ध, सब्जी, फल, फूल उत्पादन के कार्यों में स्त्रियों की मेहनत का कोई मूल्य है क्या? दुग्ध उत्पादन के लिये जानवरों की देखभाल (अंदर–बाहर बाँधना, नहलाना, गौशाला की सफाई आदि) एवं घास–चारे की व्यवस्था, सब्जी, फल के लिये खाद–पानी से जुड़ा काम स्त्रियाँ स्वतः ही करती हैं। इस परिश्रम का कोई मूल्य नहीं आंका जाता।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान लगभग पिछले डेढ़ दशकों से महिला और युवा संगठनों के साथ मिलकर आय वृद्धि के अनेक ग्राम–स्तरीय कार्य संचालित कर रहा है। इन प्रयासों में जल–संचय टैंक बना कर फल–सब्जी लगाना एवं पौधों की सिंचाई, फलदार वृक्षों के रोपण को बढ़ावा देना, पॉलीहाउस में सब्जी उत्पादन, मत्स्य पालन, सिलाई–बुनाई, मधुमक्खी पालन, होम स्टे, ब्यूटीशियन प्रशिक्षण, पहाड़ी फल एवं अनाजों का प्रसंस्करण आदि कार्य शामिल हैं। ये सभी कार्य उत्तराखण्ड के विभिन्न पहाड़ी गाँवों में स्थानीय संस्थाओं की देखरेख में संचालित हो रहे हैं। वर्तमान समय में सात सिलाई बुनाई प्रशिक्षण केन्द्र, आठ कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र और एक ब्यूटीशियन केन्द्र अल्मोड़ा, चंपावत, बागेश्वर, चमोली और पिथौरागढ़ जिलों में संचालित किये जा रहे हैं। इस से न सिर्फ हजारों महिलाओं, नवयुवतियों एवं युवाओं ने नये–नये काम सीखे बल्कि अनुभवों पर आधारित एक ठोस समझ भी बनी है। घर–गाँव में उत्पादन बढ़ा है। कुछ नवयुवतियों ने अपने व्यवसाय शुरू किये हैं।

कुछ लोग घर में ही उत्पादन करके, पैसे बाजार में देने की बजाय, बचत कर सके। यह लेख इन कार्यक्रमों से उपजे हुए अनुभवों को उत्तराखण्ड में संचालित हो रहे रोजगारवर्धक प्रयासों के परिप्रेक्ष्य में आकलन करने के लिये एक वैकल्पिक दृष्टि देता है।

साधारणतया महिलाओं के आजीविका संवर्धन कार्यक्रमों का उद्देश्य आय को बढ़ा कर गरीबी दूर करना है। सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा बड़ी–बड़ी योजनाओं में आर्थिक उन्नति को महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण मानक समझा गया है। जन–साधारण तो आय वृद्धि को ''कुछ अतिरिक्त पैसा हाथ में आयेगा,'' ऐसा कहता और समझता आया है। इस प्रकार लोक–समाज में सशक्तिकरण और समानता की विचारधारा उतनी पुख्ता नहीं दिखायी देती जितनी आय संवर्धन की योजनाओं के भारी–भरकम दस्तावेजों में मौजूद होती है। दैनिक जीवन में यह प्रश्न बना हुआ है कि क्या कुछ आमदनी बढ़ने से समाज में व्याप्त स्त्री–पुरूष असमानता की जंजीरें ढ़ीली होंगी या इसके लिये कुछ अन्य कार्य भी करने होंगे?

उत्तराखण्ड में संचालित किये जा रहे प्रयासों से स्पष्ट होता है कि आर्थिक उत्थान से गरीबी कम हो सकती है पर सामाजिक बदलाव की गति धीमी ही रहती है। ऐसा इसलिये क्योंकि सशक्तिकरण तभी होगा जब समाज और सत्ता की मानसिकता परिष्कृत होगी। महिलाएं अर्जित की गयी आमदनी से जुड़े निर्णय स्वयं लेंगी। स्वयं व्यवसाय चलाने का साहस करेंगी। इसके लिये विपरीत परिस्थितियों को दूर कर सकेंगी या कम कर के रोजगारपरक कार्यों के लिये अनुकूल वातावरण बना पायेंगी।

वर्तमान काल में महिलाओं की आय वृद्धि के कार्यक्रमों की शैली तथा दूरगामी रणनीति के प्रश्न अनेक चुनौतियाँ खड़ी करते हैं। पहली चुनौती इस प्रकार के प्रयासों तक स्त्रियों, खासकर गरीब स्त्रियों, की पहुँच बनाना है। पहुँच बनाने के संदर्भ में यह विचार बराबर दर्जे की महत्ता रखता है कि इस से कामगार स्त्री के जीवन में बदलाव होगा या नहीं। स्वयं निर्णय लेने का साहस आयेगा अथवा नहीं। पहले तो आजीविका संवर्धन का अर्थ सिर्फ पैसे कमाने के संदर्भ में देखा जाता था। अब ये मायने बदल गये हैं। अब आजीविका संवर्धन का उद्देश्य आय में बढ़त के साथ–साथ स्त्रियों की अन्य योग्यताओं में वृद्धि और जीवन शैली में बदलाव के साथ देखा–समझा जाता है। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान एवं सहयोगी संस्थाओं के साझे अनुभवों से भी

स्पष्ट होता है कि जब तक व्यक्तिगत और सामाजिक बदलाव न हो, कार्यक्रमों की सफलता की बातें बेमानी है।

व्यक्तिगत और सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया सरल नहीं है। अनुभवों ने सिखाया है कि बदलाव के लिये कुछ विशिष्ट परिस्थितियाँ और प्रयास उपलब्ध होने जरूरी है। उदाहरण के लिये उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान आय–संवर्धन के कार्यक्रम उन्हीं गाँवों में संचालित करता है जहाँ महिला संगठन या युवा संगठन सक्रिय हों और संस्थान के साथ लंबे समय से जुड़े हों। स्थानीय संस्था के प्रमुख आय–संवर्धन के कार्यों में रूचि रखते हों और निरंतर प्रयास करें, तभी कार्यक्रम सफल होता है। ग्राम–समुदाय और संस्था के बीच परस्पर विश्वास और आदर का भाव महिला–केन्द्रित कार्यों के लिये एक अनुकूल वातावरण बनाता है। सहयोगपूर्ण, अनुकूल वातावरण में स्त्रियाँ ऐसे अनेक निर्णय ले पाती हैं जो साधारण या विपरीत परिस्थितियों में संभव नहीं हैं। उदाहरण के लिये, सहयोगी समाज में स्त्रियाँ घर से बाहर निकल कर केन्द्र तक आने और नये काम सीखने का साहस कर पाती हैं। इस प्रक्रिया के अनेक उदाहरण पत्रिका में दिये गये लेखों में परिलक्षित होते हैं।

मनीआगर गाँव जिला अल्मोड़ा में सिलाई–बुनाई, कम्प्यूटर और ब्यूटीशियन प्रशिक्षण केन्द्र एक ही स्थान पर स्थित हैं। आसपास के लगभग पचास गाँवों से आकर महिलाओं ने सिलाई और बुनाई सीखी। इन केन्द्रों का कोई औपचारिक प्रचार–प्रसार नहीं किया गया। संस्था और काम सीखने आ रही स्त्रियों ने एक–दूसरे को केन्द्र के बारे में बताया और प्रोत्साहित किया। एक के मुख से निकली बात कई गाँवों तक जा पहुँची। महिलाएं रोज आठ–दस किलोमीटर पैदल चल कर भी केन्द्र में आयीं। जहाँ सड़क की सुविधा उपलब्ध थी वहाँ पर गाड़ी, जीप आदि वाहनों में टिकट का पैसा खर्च करके महिलाएं काम सीखने पहुँची।

स्त्रियों के कौशल विकास या आय सृजन के लिये उपरोक्त माहौल बनाना सरल कार्य नहीं है। हर एक महिला की अपेक्षा रहती है कि प्रशिक्षण केन्द्र उसी के अपने गाँव में हो। दूर न जाना पड़े। इस मानसिकता से बाहर निकल कर दूर गाँव में जाना और नये काम सीखना, एक परिवर्तनकारी कदम है। सीखने वाली सभी स्त्रियाँ किसान हैं। खेती, पशुपालन, घर के काम, बुजुर्गों–बच्चों की देखभाल के साथ–साथ नये हुनर सीख रही हैं। नवयुवतियाँ कॉलेज में पढ़ाई के साथ–साथ सिलाई–बुनाई सीख रही हैं।

प्रशिक्षण केन्द्र तक महिलाओं की पहुँच बनाने का प्रयास सिर्फ इस बिंदु पर नहीं सिमट जाता कि बहुत से गाँवों से स्त्रियाँ आ रही हैं। केन्द्र में अलग–अलग जाति, आयु, आर्थिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि की स्त्रियाँ आती हैं। कोई बहुत गरीब हैं तो कोई अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति में है। किसी का मायका और ससुराल सड़क से दूर है तथा वह गाँव से बाहर नहीं जाती तो कोई दूर कॉलेज में पढ़ रही है। उनकी आशाएं तथा आकांक्षाएं भी अलग–अलग हैं। गरीब, प्रौढ़ स्त्रियाँ अपना व्यवसाय खोलने को तवज्जो नहीं देती। वे घर में ही परिजनों के कपड़े सिल कर पैसे बचाना चाहती है। दर्जियों को कपड़े सिलने के लिये दिये जा रहे धन की बचत करने से परिवार के अन्य खर्चे चलाये जा सकते हैं। उत्साही नवयुवतियाँ, पढ़ी–लिखी बहुएं खेती का काम नहीं करना चाहतीं। वे सिलाई–बुनाई का व्यवसाय शुरू करना चाहती हैं। ब्यूटीशियन बन कर गाँवों में ही शादी–विवाह तथा अन्य अवसरों पर मेहंदी लगाना, दुल्हन को तैयार करना जैसे कार्यों से आय अर्जित करना उनकी प्राथमिकता में है। अपेक्षाकृत ठंडे स्थानों में ऊनी कपड़ों का व्यवसाय भी अनेक स्त्रियों ने शुरू किया है।

इन परिस्थितियों में संस्थान का ध्यान लगातार ऐसी गरीब स्त्रियों पर रहा जो घर में मशीन न होने के कारण प्रशिक्षण लेने के बाद भी कपड़े नहीं सिल पाती थीं। ऐसी स्त्रियाँ छः माह के प्रशिक्षण के बाद भी केन्द्र में आती रहती हैं। खाली पड़ी मशीनों में कपड़े सिल कर ले जाती हैं। कुछ ऐसी नवयुवतियाँ जिन्होंने लगातार मनोयोग से सिलाई सीखी परंतु मशीन खरीदने में असमर्थ रहीं, उन्हें संस्थान ने सिलाई की मशीनें दीं ताकि वे अर्जित किये गये हुनर का उपयोग कर सकें तथा आय–संवर्धन कर पायें।

मनीआगर केन्द्र में आने वाली अनुसूचित जाति की अनेक नवयुवतियों ने सिलाई के कार्य में निपुणता हासिल की है। बहुत सी लड़कियाँ सिलाई के साथ–साथ कम्प्यूटर और ब्यूटी पार्लर का काम सीख रही हैं। वे अधिक कौशल सीख कर आय बढ़ाते जाने की इच्छा रखती हैं। आय वृद्धि के लिये प्रशिक्षण देने वाली कुछ स्त्रियाँ अनुसूचित जाति के परिवारों से आती हैं। सामाजिक रूप से पीछे समझी गयीं इन प्रशिक्षिकाओं के केन्द्र में हर उम्र, जाति, शिक्षा तथा आर्थिक परिस्थिति की स्त्रियों का आना तथा नये कौशल सीखना भी बदलाव की एक सीढ़ी है।

प्रशिक्षिकाएं निष्ठा और ईमानदारी से काम करती हैं। फीस से प्राप्त हुई धनराशि का साफ–साफ हिसाब रखती हैं। अन्य लोगों को सिखाने के लिए

तत्पर रहती हैं तथापि बाजारवाद से उपजी चुनौतियों का सामना करना भी जरूरी है। उदाहरण के लिये, एक केन्द्र में प्रशिक्षिका अत्यंत अनुभवी एवं कुशल थी। पारिवारिक स्थिति भी अच्छी थी। धीरे–धीरे सिलाई सीखने वाली स्त्रियों की संख्या बढ़ने लगी। प्रशिक्षिका पहले से ही आसपास की सभी स्त्रियों के कपड़े सिलती थी। केन्द्र के काम में विस्तार के साथ अन्य स्त्रियाँ भी कपड़े सिलने लगीं। प्रशिक्षिका को भान हुआ तो आय वृद्धि के लिये पैदा हो रहे नये अवसरों पर एकाधिकार की इच्छा बलवती हो उठी। अब वह काम सीखने के लिये आ रही स्त्रियों को सीमित कटाई–छँटाई के परिधान सिलना बताती ताकि स्वयं का व्यवसाय प्रभावित न हो। यह आय–सृजन के क्षेत्र में उपस्थित स्पर्धा का एक छोटा सा उदाहरण है। यह उदाहरण इस बात को भी दर्शाता है कि केन्द्रों में बहुत से सहयोगी तो कुछ विरोधी प्रकरण चलते रहते हैं। केन्द्रों का काम सफलतापूर्वक तभी आगे बढ़ता है जब आपस में सामंजस्य हो। जो स्त्री नये कौशलों को भली–भाँति सीखे, स्वयं सोच कर नये डिजायन बनाये, विपणन करे, वही अपना व्यवसाय शुरू कर के लाभ अर्जित कर सकती है।

नये काम सीखने के लिये अनुकूल वातावरण बनाने की प्रक्रिया में केन्द्रों की व्यवस्था और सिखाये जा रहे कौशलों का आकलन भी एक महत्वपूर्ण कदम है। ग्रामीण स्त्रियाँ स्वयं का व्यवसाय शुरू कर पा रही हैं क्योंकि उन्हें गाँव में या उस के आसपास ही सीखने का मौका मिला। दूर कस्बों या शहरों में काम सीखने नहीं जाना पड़ा। साथ ही, सीखने के लिये ज्यादा पूँजी नहीं लगानी पड़ी। प्रशिक्षण भी ऐसा मिला जहाँ एक व्यवस्थित तरीके से रोज ही कुछ न कुछ नया सीखा। प्रशिक्षण केन्द्र नियमित रूप से खुले और प्रशिक्षक उपस्थित रहे। साथ ही प्रशिक्षण लेने तथा मनोयोग से पूरा करने की योग्यता अधिकतर स्त्रियों में रही। साथ ही संस्था ने प्रशिक्षिकाओं के लिये मानदेय, मशीनें, फर्नीचर तथा अन्य सामग्री की व्यवस्था की। किसी मशीन के खराब होने पर प्रशिक्षिकाएं और संस्था–प्रमुख तुरंत उसे ठीक करते। जटिल समस्या हो तो अल्मोड़ा भेजते, मरम्मत के अभाव में मशीनें कभी खाली नहीं रहीं। इन सभी अनुकूल परिस्थितियों के तहत ही महिलाएं नये काम सीख पायीं और उनमें से कुछ नवयुवतियों ने सिलाई, बुनाई इत्यादि की दुकान खोलने के निर्णय लिये।

आय वृद्धि कार्यक्रमों पर चिंतन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण इलाकों में कोई स्त्री आय वृद्धि तभी कर पायेगी जब लगातार अनुकूल वातावरण, अच्छा प्रशिक्षण और संस्थानों से निरंतर सहयोग मिले। अपना व्यवसाय शुरू करना या पुराने कामों में नये काम जोड़ने का निर्णय महिलाएं तभी ले पायेंगी जब इस के

लिये पूरी व्यवस्था उपलब्ध हो। ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार की सुव्यवस्था बनाने के लिये अनेक उदाहरण इस अंक में दिये गये हैं। लेखों में स्त्रियों ने बताया है कि जब कम फीस में अच्छा कौशल सीख पाने का मौका मिला, निरंतर केन्द्र खुले, प्रशिक्षिकाओं और संस्था प्रतिनिधियों ने लगातार काम का आकलन किया और आगे बढ़ने के मार्ग खोले, तब ही आय वृद्धि संभव हो पायी।

इस अंक में इतना ही।

अनुराधा पाण्डे

कम पैसे में नये कौशल सीखे

रितु आर्या

उत्तराखण्ड महिला परिषद, अल्मोड़ा, के द्वारा किये जा रहे कार्यक्रमों से हमारे गाँव में अनेक बदलाव आये हैं। पर्यावरण चेतना मंच मैचून के कार्यों के संचालन में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान का बहुत बड़ा योगदान है। इस संस्था द्वारा ही हमारे मनीआगर गाँव में कम्प्यूटर, सिलाई, बुनाई, ब्यूटी पार्लर और ग्राम शिक्षण केन्द्र खोला गया। संस्था ने अनेक केन्द्र इस गाँव में खोले ताकि लोग दूर न जायें और कम पैसे में नये कौशल सीख कर अपनी आय के साधन बढ़ायें। इस प्रकार अनेक लोगों ने सिलाई बुनाई सीखी और आज वे पैसे कमा रहे हैं। लड़कियों ने अलग–अलग गाँवों में सिलाई की दुकानें खोल ली हैं। उनकी आय बढ़ रही है। अगर संस्था केन्द्रों को नहीं खोलती तो हम न सिलाई सीख पाते, न कम्प्यूटर और न ब्यूटी पार्लर का काम। मैं स्वयं भी सिलाई नहीं सीख पाती। हम लोग दूर सिलाई सीखने के लिए नहीं जाते थे, घर से अनुमति नहीं मिलती थी। नजदीक में केन्द्र खुला तो सब सिलाई सीखने गए और आज नये कौशल अर्जित कर के धन कमा रहे हैं।

संस्था ने सिलाई केन्द्र खोला तो इस से गाँव की महिलाओं व लड़कियों को विशेष लाभ हुआ। जो महिलाएं बाड़ेछीना या पनुवानौला बाजार में कपड़े बनाने के लिए देती थीं, आज सिलाई सीख कर अपने कपड़े खुद सिल रही हैं। जब यहाँ सिलाई केन्द्र नहीं था तो लोग दूर अल्मोड़ा बाजार में भी कपड़े सिलवाने के लिए देते थे। सिलाई के पैसे तो लगते ही थे, गाड़ी में जाने के लिये भी अलग से धन खर्च होता था। इससे लोगों के ज्यादा पैसे खर्च होते थे। जब उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा सिलाई केन्द्र खोला गया तो लोगों को बहुत लाभ हुआ। महिलाओं, किशोरियों ने सिलाई सीखी और स्वयं तथा अन्य लोगों के कपड़े सिल कर कुछ धन कमाने लगी। इस प्रकार कपड़े बनाने के लिए जो लोग दूर शहरों और कस्बों में जा रहे थे, वे अब गाँव में ही महिलाओं को कपड़े सिलने के लिए दे रहे हैं।

महिलाओं एवं किशोरियों पर इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है। ज्यादातर लड़कियों ने सिलाई सीख ली है। कुछ लड़कियाँ अपना खर्चा खुद उठा रही हैं। कुछ लड़कियों ने सिलाई–बुनाई सीख कर अपनी दुकानें खोल ली हैं। अगर संस्था सिलाई या बुनाई नहीं खोलती तो लोग इतना आगे नहीं बढ़ पाते और न ही सीख पाते।

संस्था ने गरीबों की मदद की है। जो नवयुवतियाँ और महिलाएं गरीब हैं उन्हें सिलाई के काम के लिए मशीनें दीं। संस्था द्वारा खोले गये सिलाई केन्द्र में काम सीख कर वे अब अपने घरों में स्वयं की मशीनों से कपड़े सिल रही हैं। इससे अच्छी आमदनी हो रही है।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान ने गाँव के गरीब लोगों को फायदा पहुँचाने के लिए कम्प्यूटर का केन्द्र ग्राम मनीआगर में खोला। कम्प्यूटर केन्द्र में मनीआगर और आसपास के अन्य गाँवों की लड़कियाँ और बच्चे सीखने के लिए आते हैं। कुछ किशोरवय लड़कों ने भी कम्प्यूटर सीखा है। इससे हमारे गाँव की लड़कियों और बच्चों का भी विकास हुआ है। पहले लोग कम्प्यूटर सीखने के लिए अल्मोड़ा, बाड़ेछीना, पनुवानौला जाते थे। वहाँ की फीस भी ज्यादा थी। जब यहाँ कम्प्यूटर केन्द्र खुला तो लोगों ने बहुत कम पैसों में कम्प्यूटर सीख लिया। जो गरीब बच्चे ज्यादा फीस की वजह से बाहर कहीं जाकर कम्प्यूटर नहीं सीख पाते थे, वे गाँव में ही कम पैसों में सीख रहे हैं। कम्प्यूटर सीखना भी लोगों के लिए अच्छा है। कम्प्यूटर सीख कर युवक, युवतियाँ अपनी दुकान खोल सकते है। आजकल सब काम ऑनलाइन ही होने लगा हैं। आज के युग में कम्प्यूटर का विशेष महत्व भी है। विशेष तौर पर संस्था द्वारा गरीब बालिकाओं से कम्प्यूटर सीखने को कहा गया। आज के समय में जिसे कम्प्यूटर आता है, जहाँ कम्प्यूटर का कार्य होता है, वहीं पर युवाओं को नौकरी पर रखा जाता है। कम्प्यूटर से किशोरियों को भी अच्छा फायदा होता है। ये कार्य लड़का, लड़की दोनों के लिए आवश्यक है। केन्द्र में कम्प्यूटर सीखने के लिए लड़कियाँ दूर–दूर से आ रही हैं।

इस संस्था द्वारा ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण केन्द्र भी खोला गया है। ब्यूटी पार्लर का प्रशिक्षण लेने से स्वयं को तैयार करना भी आ जाता है। ये सभी केन्द्र मनीआगर गाँव में खोले गये है। ब्यूटी पार्लर सीखने के लिए लोग दूर–दूर से आते है। यहाँ कम पैसे में ब्यूटी पार्लर का काम सिखाया जाता है। ब्यूटी पार्लर का काम सीखने से लड़कियों को फायदा होता है। वे जब कहीं शादी में जाती हैं तो खुद तैयार हो सकती हैं। अगर ब्यूटी पार्लर का कार्य आ जाये तो वे खुद दुकान खोल कर धन कमा सकती हैं। जो लोग ज्यादा पैसे में गाँव से अल्मोड़ा जा कर पार्लर वाली को बुला रहे है, वे घर में ही अपने गाँव की लड़कियों को बुला सकते हैं। यदि किसी महिला को यह काम अच्छी तरह आता हो तो वह अपनी दुकान खोल कर दुल्हनों को तैयार कर सकती है। थ्रेडिंग तो आजकल सभी महिलाएं करा रही हैं। दुकान खोलने से आय सृजन अवश्य ही होगा।

आय वृद्धि से सामाजिक, व्यक्तिगत और पारिवारिक बदलाव आ रहे हैं। महिलाओं और किशोरियों के स्वयं के जीवन में बदलाव आये हैं। पहले लड़कियाँ खाली बैठी रहती थीं। उन्हें रोजगार नहीं मिल रहा था। आज वे खुद अपने घर पर ही सिलाई कर रही हैं। जो लोग महिलाओं को जानते तक नहीं थे, अब उनके हुनर के कारण प्रशंसा करने लगे। अब समाज में लोग महिलाओं की कला से उन्हें जानते हैं। इसी प्रकार सामाजिक बदलाव भी अनेक हैं। महिलाओं के अच्छे कपड़े सिलने के कार्यों को देखकर लोग उन्हें पहचानते हैं। समाज में उनकी प्रशंसा होती है। महिला जो अपने घर तक सीमित थी, आज सिलाई सीख कर अपने परिवार का खर्चा चला रही हैं। परिवार के लोग जो पहले उन्हें ''कुछ नहीं करती है'' कहते थे, आज ''सिलाई करके पैसा कमाती है,'' ऐसा कहते हैं। इस बदलाव के कारण परिवार भी ठीक से चल रहे हैं और आय में वृद्धि भी हो रही है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खोलने से ज्यादातर बच्चे शाम को वहीं पर आते हैं। जब केन्द्र नहीं था तो बच्चे इधर–उधर घूमते रहते थे। आज वे शिक्षण केन्द्र में आ कर पढ़ाई, खेल व अनेक प्रकार के रचनात्मक कार्य करते हैं। उनके भविष्य के लिए भी इस संस्था ने सोचा। बच्चों की शिक्षा को लेकर इस संस्था ने अनेक बदलाव हमारे गाँव में किये। उनकी भलाई के लिए ग्राम शिक्षण केन्द्र खोला और खेल सामग्री दी। खेल व पढ़ने की गतिविधियाँ सोची और उन को गतिविधि पुस्तिका में लिखा। ये गतिविधियाँ केन्द्र में करायी जाती हैं। केन्द्र में कार्य–पुस्तिका के अनुसार ही काम किया जाता है। संस्था ने महिला संगठन बनाकर गाँव के विकास के लिये अनेक प्रयास किये हैं।

सिलाई, बुनाई के अलावा ऐसे अनेक अन्य काम हैं जिस से महिलाएं अपनी आय बढ़ा सकती हैं। वे घर में ही अचार बना कर खुद दुकान खोल कर बेच सकती हैं। इससे आय में वृद्धि होगी। फलों के पेड़ हैं तो फलों को बेच कर पैसे कमा सकती हैं। यदि कम्प्यूटर आता हो वह कम्प्यूटर की दुकान खोल सकती है, इससे भी आय में वृद्धि होगी। जिसे घरेलू दवाएं पता हों वे उसे आय का साधन बना सकती हैं। इससे परिवार के लोगों को भी अच्छा लगेगा कि महिलाओं और किशोरियों में कार्य करने की शक्ति है। आज महिलाएं खेती के अलावा अन्य कार्यों के माध्यम से अपने खर्च निकाल रही हैं। यह बदलाव हमारे अपने क्षेत्र के अलावा उत्तराखण्ड के अन्य गाँवों में भी हो रहा है।

◆◆●◆◆

कल्पना और शिक्षण

कल्पना गहतोड़ी

मेरा जन्म चम्पावत जिले के पाटी ब्लॉक के तोली गाँव में हुआ। गाँव में हरियाली है। बचपन में गाँव की सड़क से विद्यालय और घर के बीच आना–जाना, पढ़ाई करना ही उद्देश्य था। मैं अपनी ही कल्पनाओं में सिमटी रहती। समाज के साथ मेल–जोल कम था। मुझे लगता था कि समाज के साथ अच्छा सामंजस्य नहीं बना सकती पर ऐसा भी नहीं था कि मैं गाँव से बिल्कुल अलग थी। उम्र बढ़ने के साथ–साथ सामाजिक कार्यों में रूचि बढ़ने लगी। अब मैं विद्यालय या घर में गुमसुम नहीं रहती थी। सामाजिक या अच्छे कार्यों में सहभागिता करना मुझे बचपन से ही अच्छा लगता था किन्तु अब खुले मन से खुश होकर सहयोग करने लगी। मैं हमेशा प्रसन्न रहती और कम बोलती। विद्यालय की पढ़ाई पूरी होने के पश्चात् कॉलेज की पढ़ाई की।

मार्च 2022 में मेरे सामने एक बात आयी जो ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़ी थी। मैं बच्चों से जुड़ी थी लेकिन मन में अनेक आशंकाएं थीं। मुख्य चिंता तो यही थी कि क्या बच्चों के साथ रह कर कुछ रोचक कार्य कर सकती हूँ अथवा नहीं। धीरे–धीरे मुझे लगा कि ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़ना चाहिए। बच्चों के साथ रहने से मैं स्वयं काफी नयी गतिविधियाँ सीख सकती हूँ, ऐसे विचार मेरे मन में आये। इस प्रकार अप्रैल 2022 में ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़ी। अब रोज दो से तीन घण्टे का समय बच्चों के साथ केन्द्र में बीतने लगा।

शुरूआत में बहुत परेशानी हुई। बीस–पच्चीस बच्चों को सम्भालना मुश्किल था। वो भी तब जब कि बच्चों का आयु वर्ग अलग–अलग हो। मेरे लिए तो शायद ज्यादा ही कठिन था। इससे पहले मैं ना ही बच्चों के साथ ज्यादा मिला–जुला करती थी और ना ही बातें करती थी। मुझे ये सब बहुत ही पेचीदा लग रहा था। ऐसा लग रहा था कोई मुसीबत फट पड़ी है। केन्द्र में बच्चे गुमसुम से रहते और सिर्फ खेलना पसंद करते थे।

एक महीना बीत गया। धीरे–धीरे बच्चों से बातें करना मुझे अच्छा लगने लगा। तत्पश्चात् मई माह में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा में प्रशिक्षण हुआ। वहाँ पर नये लोगों से मिलने के बाद उनके अनुभवों को समझा। इससे मुझे बहुत से बेहतर एवं उत्कृष्ट नजरिये मिले। बच्चों के साथ रहने और खेलने का तरीका, उनके मन को बदलने के तरीके, नये–नये खेलों के माध्यम से बच्चों को सिखाना, मनोरंजन करना सीखा। इस प्रशिक्षण ने

एक नयापन ला दिया था। अल्मोड़ा से आने के पश्चात् मैं नियमित रूप से केन्द्र में जाने लगी पर अभी भी ये काम आसान नहीं लगता था। यह मुझे चुनौती से भरा ही लगता था। धीरे–धीरे समय बीता और बच्चों के साथ मेरा लगाव बढ़ने लगा। अब बच्चे भी मेरे साथ प्रसन्न रहने लगे। अब मैं बच्चों के साथ खूब बोलने लगी थी। गाँव में गतिविधियों के लिये घूमने लगी थी।

बच्चों के अलावा उनके माता–पिता एवं अन्य परिजनों के साथ एक जुड़ाव हो गया। बच्चे मेरे द्वारा कही गई बातों को मानने और समझने लगे। अपने कुछ कामों को स्वयं करने लगे। जैसे कपड़े व्यवस्थित रखना, घर के कार्यों में मदद करना, मेरे द्वारा दिये गये प्रश्नों को घर में हल करना आदि। उनके परिजनों से मुझे यह पता चल रहा था। तब मुझे लगा कि मैं बच्चों के साथ अच्छा कार्य कर रही हूँ। अब जब भी केन्द्र की छुट्टी होती, बच्चे मेरे घर पर आ जाते। वे फोन पर मुझे जल्दी केन्द्र में आने के लिए बोलने लगे थे। मुझे जब कभी अवकाश की आवश्यकता होती तो बच्चे कहते कि अगले दिन हम आज के हिस्से का भी केन्द्र में रहेंगे। यह बात मुझे काफी खुशी देती थी। बच्चों के बिना मुझे भी समय खाली सा लगने लगा था।

धीरे–धीरे महिलाओं के साथ भी बातों का स्तर बढ़ने लगा। महिला संगठन के साथ भी बहुत सी बातें होने लगी। हमारे क्षेत्र में 25 दिसम्बर 2023 को बाल–मेला हुआ। मैंने मंच संचालन का कार्य किया। पहली बार मंच संचालन करने में झिझक सी हुई परंतु थोड़ी देर बाद ही मेरा आत्म विश्वास बढ़ गया और कार्यक्रम सफल रहा।

आज भी बच्चों के साथ मेरा अच्छा संपर्क है। अभी भी काफी कुछ करने की आवश्यकता है अर्थात् आसान तो नहीं है। इससे जो भी रुपया मुझे मिलता है उसे अपनी आवश्यकता के कार्यों में लगाती हूँ। कभी अपनी कुछ जरूरी चीजें लानी

होती हैं। कभी पढ़ाई के लिए कुछ सामग्री खरीदने में छोटी सी सहायता मिल जाती है। अब नई गतिविधियों को बच्चों के साथ करने में बहुत अच्छा लगता है।

फरवरी 2023 में महिला सम्मेलन में भी काफी नयी बातें सीखने को मिलीं। नये अनुभव मिले। महिलाएं आज भी कितना डरती हैं? उनके गाँवों की स्थिति और घबराहट के कारण भी सामने आये। सम्मेलन में कुछ महिलाएं और किशोरियाँ ऐसी भी थीं जो अपने बारे में बहुत तेजी और स्पष्ट तरीके से बता रही थीं। उन्होंने संस्था से जुड़ कर अपने विचार रखना सीखा है। आज सक्षम होने के बाद वे संस्था से जुड़ कर अन्य लोगों को सिखाने का कार्य कर रही हैं। कुछ नवयुवतियों और महिलाओं ने स्वयं आय वृद्धि के कार्य शुरू किये हैं और अच्छी कमाई कर लेती हैं। संस्था से चल रहे आय वृद्धि के प्रशिक्षण कार्यों के कारण उनके लिए बहुत सुगम और कमाई कर सकने का एक श्रेष्ठ माध्यम सामने आया है। इससे उनका अच्छा अभ्यास होता है और ग्रामवासियों को भी सिलाई–बुनाई की सुविधा मिलती है।

पाटी क्षेत्र में बहुत सी महिलाओं और लड़कियों ने संस्था से सिलाई–बुनाई, कम्प्यूटर का कार्य सीखा है। वे इन कार्यों को कर रही हैं और अपना खर्च निकालने में समर्थ हैं। कम्प्यूटर सीख कर सार्थक कार्य कर रही महिलाओं में एक उदाहरण आशा दीदी का है। उन्होंने संस्था से चल रहे कार्यक्रम में कम्प्यूटर सीखा और आज वे स्वयं एक कम्प्यूटर केन्द्र सम्भाल रही हैं। वे बच्चों को इस विषय में शिक्षित कर रही हैं। इसी प्रकार पाटी क्षेत्र में एक वर्ष में लगभग साठ महिलाओं ने सिलाई का प्रशिक्षण लिया है। वे सभी अपने कपड़े तो सिलती ही हैं लेकिन कुछ महिलाएं अपना व्यवसाय शुरू कर चुकी हैं। वे कपड़े सिलकर अपना खर्च निकाल लेती हैं। इससे पहले दूसरों पर निर्भर रहती थीं पर वो कहते हैं ना कि ''दुनिया में कोई काम असंभव नहीं होता, बस हौसला और मेहनत की जरूरत होती है,'' यह संस्था के कारण ही संभव हो पाया है। कम खर्च में व्यवसायपरक शिक्षा पाने के कारण हम आगे बढ़ पाये हैं। बाजार में सीखने का तो माह में पाँच–सात सौ रुपये का शुल्क देना पड़ता। संस्था के इन कार्यों के कारण महिलाओं–किशोरियों को बहुत लाभ हुआ है। आज बहुत सी महिलाएं अपनी आजीविका के संसाधनों को बढ़ा पायी हैं और सफलता के साथ आगे बढ़ रही हैं।

◆◆●◆◆

आय के साधन

शिवानी आर्या

उत्तराखण्ड के गाँवों में रहने वाली प्रायः सभी महिलाओं एवं किशोरियों में कोई न कोई प्रतिभा होती है। उन्हें सिर्फ अच्छे मार्गदर्शन, सही जानकारी व सलाह की आवश्यकता होती है। सिलाई–बुनाई व सब्जी उत्पादन के अतिरिक्त महिलाओं व किशोरियों को अपनी रूचि पर ध्यान देना आवश्यक है कि वे किस प्रकार का कार्य करना चाहती हैं। ऐसे कौन से काम हैं जो सहज है और वे उन कार्यों को करने में सक्षम है।

हर घर में रोज ही फल खाये जाते हैं। गाँवों में लोग फलों से बीजों को निकाल कर अलग–अलग थैलियों में डाल कर उगा लेते हैं। मुख्यतः संतरा, आम, आड़ू, नारंगी, दाड़िम, नींबू इत्यादि फलों को उगा कर प्रति पौधा बीस से पचास रुपये में बेच कर आय प्राप्त की जा सकती है।

इस के साथ–साथ फूलों के बीजों को छोटे–छोटे डिब्बों में उगाया जा सकता है। बेचने के लिए डिब्बों को विभिन्न रंगों द्वारा आकर्षक बनाया जा सकता है। बाजार में फूल बेचने वाली गाड़ियाँ दो सौ पचास रुपये में फूलों के गमले बेचती हैं। इसी प्रकार घरों में थोड़ी मेहनत करने से गमले तैयार करके बेचने लायक बनाये जा सकते हैं।

आजकल शादी समारोहों में दुल्हनें व परिवार के अन्य लोग बाहर जाकर मेहंदी लगवाना पसंद करते हैं। ऐसे में किसी लड़की या महिला को ड्राइंग में रूचि हो तो वह शादी समारोहों में मेहंदी लगाने का कार्य अपने गाँव तथा पड़ोसी गाँवों में कर सकती है। इससे आय–सृजन हो सकता है।

कई नवयुवतियाँ जो पढ़ाई में रूचि रखती हों, छोटे बच्चों को घर पर रह कर ट्यूशन पढ़ा सकती हैं। यह भी आय अर्जित करने का एक अच्छा साधन है। परीक्षा के समय बच्चे अक्सर अपना चार्ट या मॉडल दूसरों को बनाने के लिए देते हैं। मार्केट में चार्ट या मॉडल तैयार करने की अच्छी खासी फीस वसूली जाती है। ऐसे में ग्रामीण क्षेत्रों में इस कार्य को भी रोजगार के रूप में देखा जा रहा है।

किसी भी प्रकार के समारोह के लिए सजावट करना आवश्यक होता है, जिससे वह जगह आकर्षक लग सके। महिलाएं एवं किशोरियाँ भी इस कार्य को कर सकती हैं। जैसे–सफाई, बैठने की व्यवस्था, मंच की सजावट इत्यादि कई प्रकार के कार्य किये जा सकते हैं।

गाँवों में अनेक महिलाएं पुरानी साड़ियों से नयी चीजें तैयार कर लेती हैं। जैसे–घास लाने और गाय–भैसों को बाँधने के लिए रस्सी तैयार करना। पुरानी साड़ियों व कपड़ों से पायदान तैयार करके बेचना भी आय का एक साधन बन सकता है। जो महिलाएं सिलाई का कार्य जानती हैं, वे पुराने कपड़ों या सिलाई के दौरान बची हुई कतरनों से पायदान तैयार कर सकती हैं।

घरों को साफ करने के लिए रोज झाड़ू की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे में लोग बाबला (बाबिल) घास से निर्मित झाड़ू या खजूर से अच्छा सा झाड़ू तैयार करके आय कमा सकते हैं। घर पर पड़ी पुरानी चीजों से नयी चीजें तैयार करना या उन्हें एकत्रित करके कबाड़ खरीदने वालों को बेचना भी एक कार्य ही है। जैसे–लोहा, काँच की बोतलें, प्लास्टिक, पुरानी कॉपी, किताब इत्यादि को उपयोग चक्रण के लिये बेचा जा सकता है।

लोग घरों को सजाने के लिए कई प्रकार की चीजें खरीदते हैं। जैसे–तोरण, वाल–हैंगिंग इत्यादि। इन चीजों का निर्माण युवतियों द्वारा घर पर रह कर किया जा सकता है। इसके लिए बाजार से थोड़े से सामान को खरीदने की आवश्यकता पड़ती है जो आसानी से मिल जाता है।

कुछ किशोरियों को क्रोशये का मेजपोश व अन्य प्रकार के कवर तैयार करना आता है, वे रोजगार के रूप में इस व्यवसाय को अपना सकती हैं। आजकल ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार के सामान का उपयोग हो रहा है।

महिलाएं व किशोरियाँ अचार व जैम इत्यादि बना कर बेच सकती हैं, जिससे वे आय प्राप्त कर सकें। ये उत्पाद गाँव में होने वाली सब्जियों तथा फलों से तैयार किये जा सकते हैं। ग्रामीण महिलाएं पशु पालन का काम करती हैं। दूध व घी बेच कर भी अच्छी आय का सृजन किया जा सकता है।

जिन महिलाओं व किशोरियों में योग्यता हो वे विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग ले सकती हैं। जैसे–नृत्य, संगीत, चित्रकारी, भाषण इत्यादि। उनका हुनर सामने आयेगा तो सभी लोग उनकी प्रतिभा का सम्मान करेंगे और सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

हर व्यक्ति को अपना जीवनयापन करने के लिए रोजगार का कोई न कोई साधन चुनना पड़ता है। ग्रामीण इलाकों में पहले की अपेक्षा आधुनिक युग में आय अर्जित करना काफी चुनौतीपूर्ण है। बढ़ती जनसंख्या के कारण रोजगार की कमी हो गयी है। दिन प्रतिदिन महंगाई लगातार बढ़ती जा रही है। इस कारण आय में वृद्धि होना भी जरूरी हो गया है, जिससे आर्थिक स्थिति को संतुलित किया जा सके। प्रत्येक गाँव में लोग आय के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के कार्यों को कर रहे हैं। कृषि, पशु पालन, सब्जी एवं फल उत्पादन इत्यादि कार्य ग्रामवासी सहजता से करते हैं।

आय में वृद्धि होने से व्यक्तिगत तौर पर कोई भी पुरूष, महिला, किशोर, किशोरी स्वयं को आर्थिक रूप से मजबूत महसूस करते हैं। आय में वृद्धि से दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से हो जाती है। आय–वृद्धि से भविष्य में आने वाली आकस्मिक समस्याओं के लिए भी महिलाएं एवं युवतियाँ अर्जित धन का एक छोटा सा भाग सुरक्षित रख सकेंगी। कुल आय में से बचत की गयी राशि से अतिरिक्त व्यवसाय या स्वरोजगार किया जा सकता है। व्यक्तिगत तौर पर आय–वृद्धि से नवयुवतियों के रहन–सहन पर प्रभाव पड़ता है तथा जीवन–स्तर अच्छा होता है।

संस्था द्वारा किये जा रहे प्रयासों में कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्रों का संचालन एक प्रमुख कार्यक्रम है। कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र बधाणी में कुछ गाँव में रहने वाले लड़कों ने कम्प्यूटर सीखा। अब वे कर्णप्रयाग क्षेत्र के अंतर्गत सी.एस.सी. (कॉमन सर्विस सेंटर) में काम करते हुए आय अर्जित कर रहे हैं।

आय–वृद्धि के लिए संस्था द्वारा किये जा रहे प्रयासों में किशोरियों व महिलाओं के साथ गोष्ठियों तथा सम्मेलनों में उन तक सही एवं रोजगारपरक जानकारी पहुँचाना शामिल है। साथ ही संस्था द्वारा सिलाई–बुनाई कार्यक्रम के तहत इन कौशलों को सिखाये जाने के बाद जो लोग पारंगत हो गए है उनके कार्यों का प्रचार–प्रसार किया जाता है। क्षेत्र में अनेक महिलाएं एवं किशोरियाँ सिलाई–बुनाई सीख कर कपड़े सिलने का व्यवसाय शुरू कर रही हैं।

◆◆●◆◆

पारंपरिक रोजगार भी हैं

कौशल्या रौतेला

गोगिना गाँव में कम्प्यूटर और सिलाई सीख कर किशोरियाँ और युवतियाँ अपने कौशल बढ़ा रही हैं। पहले किशारियाँ कौशल बढ़ाने के कार्य नहीं करती थीं। वे घर के कार्यों में लगी रहती थीं। आय बढ़ाने के लिये कोई साधन नहीं थे। जब से सिलाई और कम्प्यूटर कार्यक्रम आया, गाँव में आय–सृजन के लिये नये द्वार खुल गये। स्त्रियाँ सिलाई सीख कर अपनी आमदनी बढ़ाने लगीं। वे अपने और अन्य ग्रामवासियों के कपड़े सिल कर रोजगार बढ़ा रही हैं।

गोगिना–शामा क्षेत्र में ज्यादातर किशोरियाँ आय व रोजगार के कार्यों में ध्यान नहीं देती हैं क्योंकि उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति अभिभावक कर देते हैं। सभी किशोरियाँ स्कूल जाती हैं। बाईस–तेईस साल के बाद लड़कियों की शादी हो जाती है। वर्तमान समय में गाँव में किशोरियाँ कम हैं। किशोरियों का रोजगार भी कम है क्योंकि वे काम कम करती हैं। इण्टर पास होने के बाद कुछ लड़कियाँ कॉलेज में पढ़ने के लिये गाँव से बाहर चली जाती हैं। कुछ लड़कियों की शादी हो जाती है।

गोगीना क्षेत्र में महिलाओं के लिए बहुत से पारंपरिक रोजगार उपलब्ध हैं। महिलाएं बिना रोजगार के नहीं रहती हैं। वे गाय और भैसों को पाल कर घी बेचती हैं। भेड़–बकरियों के साथ जंगलों में जाती हैं, उनका ऊन बेचती हैं। ऊन से विभिन्न प्रकार के कोट, पायजामा, कम्बल आदि बना कर भी बेचे जाते हैं। गर्मी और बरसात के मौसम में महिलाएं गाय, बकरियों और भेड़ों के साथ ऊँचे जंगलों और बुग्यालों में जाती हैं। भेड़–बकरियों को लेकर बहुत से पुरूष

भी जाते हैं, वे वही रहते हैं। सितम्बर–अक्टूबर के महीने में वे सभी गाँव–घरों में वापस आ जाते हैं। वे हर साल वर्षा ऋतु में जंगलों में जाती हैं। घर में एक दो से ज्यादा गाय–भैंस नहीं रखते हैं। वहीं पर घी बना लेते हैं और धीरे–धीरे बेचती रहते हैं।

यदि परिवार के पास भेड़–बकरियाँ नहीं हैं तो स्त्रियाँ पत्थर ढ़ोने जाती हैं। कुछ नवयुवतियाँ सिलाई से आय वृद्धि कर रही हैं। साथ ही महिलाएं एवं पुरूष रिंगाल का काम करते हैं। वे बेचने के लिये टोकरी, सूप, मोस्टा आदि बनाते हैं। महिलाएं गाँव में खेती–बाड़ी का काम करती हैं। मोटा अनाज जैसे मडुआ, गुरूंश, राजमा, चौलाई व सोयाबीन उगाती हैं और बाद में बेचती हैं। इन फसलों का प्रयोग घर में भी किया जाता है। घर में बच्चों की देख–रेख करते हुए महिलाएं आय बढ़ाने के लिये काम करती हैं। इस क्षेत्र में महिलाएं अधिक काम करती हैं। खेती, जंगल से घास–लकड़ी लाना, जानवरों की देखभाल, बच्चों की देखरेख, बड़े–बूढ़ों की सेवा, पानी की व्यवस्था, खाना बनाना, कपड़े–बर्तन धोना, घर की सफाई आदि कार्य महिलाओं द्वारा किये जाते हैं।

इस क्षेत्र की महिलाएं दूर–दूर ऊँची चट्टानों में जा कर धूप, छीपा और कटिक नाम की औषधी लाती हैं। यह सामग्री किलों के हिसाब से बहुत महंगी बिकती है। बाहर शहरों में लोगों को पूजा आदि कार्यों में इस की आवश्यकता होती है। इस कारण जो महंगा होने के कारण नहीं खरीदना चाहता वह भी थोड़ा खरीद लेता है। इस के अतिरिक्त महिलाएं रेता, पत्थर और सीमेन्ट ढ़ोती हैं। बहुत से स्त्रियाँ कंकड़ तोड़ती हैं और कट्टे के हिसाब से बेचती हैं। किसी–किसी परिवार की दुकानें हैं। यदि पुरूष किसी काम से बाहर गये हों तो महिलाएं दुकानें भी संभालती हैं। हमारे गाँव में महिलाएं कभी खाली नहीं बैठी रहतीं। औसतन घर का सारा काम निपटा कर इन कार्यों से औसतन चार–पाँच सौ रुपया महीना कमा लेती हैं। इस आमदनी से वे घर की आवश्यकताएं पूरी करती हैं।

◆◆●◆◆

कृषि के प्रति रूझान कम

राजेन्द्र सिंह बिष्ट

उत्तराखण्ड के गाँवों में रोजगार या आय संवर्धन की बात करें तो सबसे पहले ध्यान खेती–किसानी की ओर ही जाता है। आज भी गाँवों में आय का एक प्रमुख साधन कृषि है। लंबे समय तक खेती ग्राम समुदाय को पोषित करने में सक्षम रही है। कालान्तर में घटती कृषि जोत, मौसम में आये बदलाव, जंगली जानवरों द्वारा फसलों को नुकसान पहुँचाने तथा नई पीढ़ी का कृषि के प्रति रूझान कम होने के कारण गाँवों में खेती सिमट रही है। खेती के साथ ही पशु पालन प्रमुख घटक रहा है। वर्तमान में ग्रामवासी जानवर भी सीमित संख्या में पालने लगे हैं। लोगों ने बैलों को पालना लगभग समाप्त कर दिया है। आज गाँवों में एक दो परिवारों के पास ही बैल मिलेंगे। जानवरों के कम होने से गोबर की खाद में भी कमी आ गई है। इस का सीधा असर अनाज और सब्जी–फल के उत्पादन पर पड़ा है। जिन गाँवों में पारम्परिक खेती की जाती है वहाँ पर भले ही खेती से सीधे आय न होती हो लेकिन परिवारों की कई जरूरतें पूरी हो जाती हैं। निश्चित रूप से परिवारों पर आर्थिक बोझ भी कम होता है।

परिवारों में खेती के लिए लोगों का होना बहुत आवश्यक है। आज लोगों की जरूरतें बढ़ गई हैं। इस कारण आर्थिक बोझ भी बढ़ा है। खेती का पारम्परिक तरीका ग्रामवासियों की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं रहा। इस कारण गाँवों में तेजी से पलायन बढ़ा है।

हम विगत कई वर्षों से गणाई गंगोली क्षेत्र, जिला पिथौरागढ़, के गाँवों में रहने वाले लोगों के साथ कार्य कर रहे हैं। हमने मुख्य रूप से शैक्षणिक कार्य को प्राथमिकता दी। सीधे तौर पर रोजगारपरक कार्य नहीं किये परन्तु लोगों को इसके लिए जागरूक करने एवं स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार स्थापित करने के लिए सतत् रूप से प्रेरित करने का कार्य किया है।

यह एक गर्म घाटी का क्षेत्र है। यहाँ पर मुख्यतः धान, गेहूं, मडुआ, भट्ट, गहत प्रमुख फसलें हैं। साथ ही कहीं–कहीं आम, अमरूद भी प्रचुर मात्रा में होता है। कृषि पर आधारित रोजगारपरक गतिविधियों को देखा जाये तो क्षेत्र में कुछ संभावनायें दिखायी देती हैं। इन संभावनाओं पर कार्य करके स्थानीय स्तर पर स्वयं का रोजगार खड़ा किया जा सकता है। जैसे–यहाँ पर आम प्रचुर मात्रा में होता है। इसका अचार तैयार कर सकते हैं। साथ ही आंवला भी स्थानीय

स्तर पर उपलब्ध है। इसके भी अनेक उत्पाद तैयार किये जा सकते हैं। सब्जी उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सकता है। गाँवों में सब्जी का उत्पादन नाम मात्र ही होता है। पहाड़ी दालों को प्रोत्साहित कर उसे आय का साधन बनाया जा सकता है।

गाँव में कुछ परिवारों की आय का साधन दुग्ध उत्पादन और बकरी पालन बन सकते हैं। कुछ उत्पाद स्थानीय स्तर पर भी बेचे जा सकते हैं। इससे बहुत बड़ा रोजगार तो नहीं होगा लेकिन स्थानीय स्तर पर आय संवर्धन के काम की शुरूआत तो की जा सकती है। इससे कुछ परिवारों की थोड़ी बहुत आय अवश्य बढ़ सकती है। यदि कृषि उत्पादों को बाहर के बाजार तक पहुँचाना है तो इसके लिए गाँव स्तर पर उत्पादन बढ़ाना जरूरी है। साथ ही किसी भी उत्पाद को बाजार में लाने से पहले उसकी शुद्धता, पैकेजिंग, गुणवत्ता, उपलब्ध मात्रा जैसे कई बिन्दुओं की जानकारी रखना बहुत जरूरी है।

गणाई गंगोली क्षेत्र में समय–समय पर कई लोगों ने कृषि के अलावा अन्य प्रकार के स्वरोजगार के लिये पहल की है। इसमें बेकरी, सिलाई, ब्यूटी पार्लर, लोहारगिरी, होटल, वैल्डिंग का कार्य इत्यादि शामिल हैं। कुछ लोग सफलता से कार्य कर रहे हैं परंतु कई लोगों ने अपना काम बंद कर दिया है। इसमें से कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने लंबे समय तक शहरों में काम किया है और अब वापस गाँव में लौट आये हैं। इसका लाभ यह है कि उनके पास काम का अनुभव है, गुणवत्ता भी मौजूद है।

महिलाओं के संदर्भ में देखा जाये तो गणाई गंगोली क्षेत्र के गाँवों में कुछ स्त्रियाँ सिलाई, बुनाई के कार्य से आय अर्जित कर रही हैं। गणाई गंगोली बाजार में लगभग दस महिलाओं ने स्वयं के प्रयासों से दुकानें खोली है। इसमें मुख्यतः सिलाई, बुनाई, रेडीमेड कपड़ों की दुकान, ब्यूटी पार्लर, लेडीज सामान इत्यादि की दुकानें हैं। गाँवों में जो महिलाएं इस कार्य को कर रही हैं वे साथ में खेती, पशु पालन भी करती हैं। जब कि जो महिलाएं बाजार में नये कार्य शुरू करती हैं वे पूरी तरह उसी पर निर्भर हैं।

आज जिस तरह से बेरोजगारी बढ़ रही है यह आवश्यक हो गया है कि लोग वैकल्पिक रोजगार की ओर बढ़ें। महंगाई बढ़ रही है तो स्थानीय उत्पादों के दाम भी बढ़ रहे हैं। एक प्रकार से यह हमारे गाँवों के उत्पादों के लिए एक अवसर भी है। पहले पहाड़ी उत्पादों के लिये ग्राहक नहीं मिलते थे। आज गाँव का कोई भी उत्पाद ऐसा नहीं है जिसे खरीदने वाले न हों। लेकिन जब तक खेती के प्रति उत्साह नहीं होगा तब तक बेचना–खरीदना संभव नहीं है।

निश्चित रूप से खेती के साथ चुनौतियाँ बहुत हैं लेकिन कई लोगों ने इसको सफलतापूर्वक कर के दिखाया है। हमें उनसे सीखने की जरूरत है। गणाई गंगोली क्षेत्र में नेपाली मूल के एक व्यक्ति ने धपना गाँव में किराये पर जमीन लेकर वर्षों से खेती को आय का मुख्य जरिया बनाया है। उन्होंने सब्जी उत्पादन का एक अच्छा मॉडल विकसित किया है। वह बीजों के चयन, फसल में लगने वाली बीमारियों के लिए समय–समय पर विशेषज्ञों की राय लेते हैं। साथ ही, समय–समय पर नई फसलों को उगाने के लिये अभिनव प्रयोग करते हैं। इस तरह की लगन व निपुणता हमें भी विकसित करनी होगी। खेती में अभिनव प्रयोग करने होंगे तभी हम इसे आय वृद्धि का माध्यम बना पायेंगे। गाँवों मे उद्यान विभाग द्वारा हर वर्ष फलदार पौधों का वितरण किया जाता है। ज्यादातर पौधे बर्बाद हो जाते हैं। उसका मुख्य कारण यही है कि हमने जानने और सीखने का प्रयास ही नहीं किया कि फलदार पौधों के रोपण के लिए गढ्ढा कैसे तैयार करें, एक से दूसरे पौधे के बीच की दूरी क्या हो। यदि जमीन पथरीली है तो उस जगह पर गढ्ढे कैसे तैयार करें, पौधों में पानी की जरूरत को कैसे पूरा करें इत्यादि। जब तक यह सब नहीं जानेंगे तब तक बागवानी संभव नहीं है। कमोबेश यही हाल अन्य फसलों का भी है।

खेती एक सामुहिक कर्म है जिसमें अन्य लोगों की मदद की जरूरत होती है। साथ ही जिस तरह से जंगली जानवर फसलों को नुकसान पहुँचा रहे हैं उसमें और भी जरूरी है कि सभी लोग एक तरह की खेती करें। चाहे सब्जी उत्पादन का कार्य हो या फिर बागवानी। इस का लाभ यह है कि उत्पाद को बाजार तक पहुँचाना आसान होगा। साथ ही नुकसान भी कम होगा क्योंकि ज्यादातर लोगों की भागीदारी फसलों को बचाने में रहेगी। साथ ही सभी साथी एक दूसरे से सीखते चलेंगे।

महिलाओं के रोजगार के संबंध में देखें तो कुछ कार्यों के लिये सामूहिक पहल की जा सकती है। कुछ अलग–अलग क्षेत्रों में ऐसे कार्य हो भी रहे हैं। इस के लिए उसी प्रकार की कार्य–संस्कृति विकसित करने में समय, श्रम व लागत लगती है। इस दिशा में भी हमें सोचना चाहिए। क्या हम मिलकर कोई सामुहिक उद्यम विकसित कर सकते हैं? इसके साथ ही व्यक्तिगत रोजगार की पहल की जा सकती है। कुछ महिलाओं ने गाँवों में ऐसे कार्य किये है। इसमें मुख्यतः सिलाई का कार्य है। इससे गाँव में एक दो लोग ही रोजगार पा सकते हैं। हमें अन्य विकल्पों पर भी सोचना चाहिए।

गाँवों में आज भी कुछ कामों को सिर्फ पुरूषों द्वारा किया जाता है। जैसे–इलेक्ट्रिक उपकरणों की मरम्मत का कार्य, मोबाइल रिपेयर, बिजली फिटिंग, कम्प्यूटर संबंधी कार्य इत्यादि। यदि हमारे गाँवों की नवयुवतियाँ इन विकल्पों पर सोचें तो निश्चित रूप से एक अच्छा रोजगार उपलब्ध हो सकता है। स्थानीय संस्थाओं को इस दिशा में सोचना चाहिए कि जो किशोरी ऐसे कार्यों में रूचि रखती हो, कुछ नया करने की सोच हो, उसे प्रोत्साहित करें ताकि उसके रोजगार के साथ ही अन्य लोगों को प्रेरित करने वाला कार्य बन सके। हमें गाँवों में तरह–तरह के रोजगारपरक प्रशिक्षण आयोजित करने होंगे। जिसमें सिलाई, बुनाई, अचार, जूस बनाना, ब्यूटिशियन, बैग–मेकिंग, साफ्ट–टायज का निर्माण आदि व्यवसाय शामिल हैं। ये सभी कार्य व्यक्तिगत रूचि, कुशलता पर निर्भर करते हैं। कुछ लोग इन कार्यों में अपनी लगन व जरूरत के अनुसार निपुणता हासिल करेंगे। उनके कार्य को प्रोत्साहित कर के रोजगार लायक बनाया जा सकता है।

इस दिशा में हमारे ग्राम समाज, महिला संगठनों को भी चिंतन करने की जरूरत है। इसके लिए गाँवों में सतत् संवाद की जरूरत है। हम अपने समाज को कैसा देखना चाहते हैं, इसके बारे में सभी को सोचने की जरूरत है। हम अपने गाँव के संसाधनों को बचाने के लिए क्या कर रहे हैं? पानी के स्रोत कैसे बचेंगे? जंगल बचाने के लिये क्या प्रयास हो रहे हैं? बच्चों की शिक्षा व खेलने की क्या व्यवस्थाएं हमने अपने गाँवों में की है? खेती को अधिक उत्पादक व रोजगारपरक कैसे बना सकते हैं? इन सब विषयों पर सोचने व कार्य करने की जरूरत है। इन में शिक्षा प्रमुख है। यह सब निर्भर करता है कि हम बच्चों का शिक्षण कैसा कर रहे हैं। अधिकतर लोग शिक्षा को व्यक्तिगत प्रयास मानते हैं जबकि यह भी एक सामुहिक कर्म है। हम अपने ग्राम समाज से अलग हो कर बच्चों का शिक्षण नहीं कर सकते हैं। हमारे अपने प्रयासों के साथ ही यह भी जरूरी है कि समाज से बच्चे को अच्छी शिक्षा मिले। हमने अपने समाज को देखने का जो नजरिया बच्चे में विकसित किया है, वह भी एक प्रकार से शिक्षा ही है।

◆◆●◆◆

दुग्ध उत्पान पर ध्यान

मानसी बिष्ट

मेरे गाँव का नाम कठूड़ है। यह गाँव चमोली जिले में गोपेश्वर मुख्यालय के पास स्थित है। गाँव के बहुत से परिवार कृषि के अलावा दूध उत्पादन में अधिक ध्यान दे रहे हैं। पुरूषों और महिलाओं के लिए आजीविका के नये स्रोत बन गये हैं। अब गाँव में लोग दूध उत्पादन से आय वृद्धि कर रहे हैं। गाँव में पशु पालन, मुर्गी पालन, घास बेचना, मजदूरी, वेतन आदि कुछ ऐसे अन्य स्रोत हैं जिनसे लोगों को आय मिल रही है। पहले गाँव की फसलों में गेहूं, धान, कोदों और सब्जी में टमाटर, आलू, बींस, गोभी, कद्दू, प्याज, लौकी, भिन्डी, राई, मटर लगाते थे। फलों में संतरा, आड़ू, अखरोट, नारंगी, प्लम आदि होते थे। अब बंदरों के आतंक के कारण लोगों ने मक्का लगाना छोड़ दिया है। मटर को भी बंदर, लंगूर नुक्सान पहुँचाते हैं। साथ ही फलों का उत्पादन भी घटा है। बंदर, लंगूर फलों को नष्ट कर देते हैं।

गाँव में कृषि से लोगों को कोई लाभ नहीं मिल रहा है। ज्यादातर लोग पलायन करके कोई अन्य कार्य कर रहे हैं। लोग आजीविका के लिए कृषि के अलावा अन्य साधनों को अपना रहे हैं। लोग दुग्ध व्यवसाय एवं मजदूरी के साथ थोड़ा कृषि का काम कर लेते हैं। हमारे गाँव में पुरूषों ने आजीविका के लिए दुकानें, होटल आदि खोले हैं। कुछ लोग गाँव से बाहर शहरों में पलायन करके कम्पनियों में कार्य करते हैं, इससे उन्हें आय प्राप्त होती है।

जंगली जानवरों का खेती पर प्रकोप बढ़ रहा है। रात में जंगली जानवर इधर–उधर घूमते रहते हैं। जंगली जानवरों के कारण लोगों ने खेती करना कम कर दिया है। अब पहले जैसी खेती नहीं होती है। जानवरों ने खेती को चौपट कर दिया है। इससे लोगों की मेहनत बेकार हो जाती है। हमारे यहाँ अब कृषि बहुत ही कम लोग करते हैं। अब लोग कृषि पर मेहनत भी कम करते हैं। गाँव में तो अधिक खेत बंजर या व्यर्थ भूमि हो गये हैं। जब खेतों में खूब उत्पादन होगा तभी तो हम उसे बेचकर कुछ रुपये कमा सकते हैं ताकि अपने परिवार के लिए कुछ जरूरी सामग्री ला सकें। आज के समय में कृषि रोजगार का साधन नहीं बन पा रही क्योंकि खेतों से अनाज का उत्पादन घट गया है। समय से वर्षा–पानी नहीं हो रहा। इस कारण लोग गाँवों से पलायन करना चाह रहे हैं।

◆◆●◆◆

कौशल की आवश्यकता

अनुष्का बोरा

मेरे गाँव का नाम भन्याणी है। यह गाँव पिथौरागढ़ जिले में आता है। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश परिवार कृषि तथा पशु पालन करते हैं। महिलाएं व युवतियाँ मुख्य रूप से खेती का काम करती हैं। वे जितनी मेहनत खेतों में करती हैं उतना अनाज उत्पन्न नहीं हो पाता। पिछले कई वर्षों से हम देखते आ रहे हैं कि जंगली जानवरों का आतंक बढ़ता जा रहा है। जंगली जानवर फसलों को बहुत हानि पहुँचा रहे हैं। इसका स्पष्ट परिणाम नजर आता है कि ग्रामवासी अनाजों, सब्जियों एवं अन्य खाद्य सामग्री के लिये बाजार पर निर्भर होते जा रहे है। महंगाई दिन–प्रतिदिन आसमान की ऊँचाइयों को छू रही है। इस कारण महिलाओं को अतिरिक्त कौशल विकास करने की आवश्यकता है जिससे वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से कर सकें। महिलाओं को यह जानने की आवश्यकता होगी कि ऐसा क्या–क्या काम किया जा सकता है, जिससे वे आय बढ़ा सकती हैं।

कृषि के क्षेत्र में इन बातों पर विचार करना होगा कि कौन सी फसलों की पैदावार अच्छी होगी। जलवायु परिवर्तन के वातावरण के अनुरूप कौन सी फसलें, सब्जियाँ, दालें हैं जो उत्पादन के लिये उपयुक्त हैं। साथ में ध्यान रखना होगा कि कौन सी फसलों को जंगली जानवरों के नुकसान से बचाया जा सकता है। कुछ फसलें ऐसी होती है जिन्हें जंगली जानवर नुकसान नहीं पहुँचाते। हम ग्रामवासी उन फसलों को प्राथमिकता दें तो अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

अनेक महिलाओं को सिलाई का शौक होता है। इस काम को घरेलू कामों के साथ भी किया जा सकता है। कुछ साल पहले हमारे गाँव में सिलाई प्रशिक्षण का कार्यक्रम उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सहयोग से स्थानीय संस्था द्वारा किया गया था। इसमें किशोरियों और महिलाओं ने सिलाई करना सीखा और अपने कपड़े स्वयं ही सिलने लगे। मुझे भी सिलाई का काम अच्छा लगता था। मेरी मां स्वयं घर के कामों के साथ–साथ सिलाई करती थी। मैं जब कक्षा ग्यारह में थी तब से उनके साथ थोड़ा–थोड़ा सिलाई का काम करती थी। बाद में सलवार सूट, ब्लाउज इत्यादि बनाना सीख गई। मैं अपने कपड़े स्वयं सिलती और धीरे–धीरे गाँव के अन्य लोगों के कपड़े भी सिलने लगी। अब मैं फैशन डिजाइनर कपड़े भी बना लेती हूँ। इससे मुझे बहुत लाभ हुआ। मुझे अपनी आवश्यकताओं के लिए घर वालों से पैसे मांगने की जरूरत नहीं पड़ती। सिलाई का काम घर में ही रोजगार प्राप्त करने का एक अच्छा विकल्प है। इस काम को गाँव की अन्य युवतियाँ व महिलाएं भी सीखना चाहती हैं ताकि खुद कपड़े सिल कर स्वरोजगार कर सकें।

आजकल महिलाएं ब्यूटी पार्लर के लिए दूर बाजार तक जाती हैं। यदि इस कार्य को नवयुवतियाँ गाँव में ही करें तो यह बहुत ही फायदेमंद हो सकता है। इसके साथ–साथ बुनाई का काम भी किया जा सकता है। हाथ से बनाये गये ऊनी वस्त्रों की मांग अधिक रहती है। इसके लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

मैं जब से इस संस्था में जुड़ी हूँ, कुछ नया सीखने को मिला। जीवन में आगे बढ़ने के लिए आत्मविश्वास बढ़ा। हमारे गाँव में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा 2019 में कम्प्यूटर शिक्षण केन्द्र खोला गया। इससे ग्रामवासियों को बहुत फायदा हुआ। इससे पहले कम्प्यूटर सीखने के इच्छुक बच्चों और किशोर–किशोरियों को बहुत दूर जाना पड़ता था। सभी लोगों के लिए दूर जा कर सीख पाना संभव भी नहीं हो पाता। जब से गाँव में कम्प्यूटर केन्द्र खुला, बच्चे, किशोरियाँ सभी सीख रहे हैं। दूसरे गाँवों से भी बच्चे कम्प्यूटर सीखने हमारे गाँव में आते हैं। इस संस्था के माध्यम से मुझे भी कम्प्यूटर सीखने का अवसर प्राप्त हुआ।

गाँव की किशोरियाँ, महिलाएं कौशल विकास (सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, ब्यूटी पार्लर) आदि सीखना चाहती हैं। इसके लिए उन्हें प्रशिक्षण तथा केन्द्र खोलने के लिये आर्थिक मदद की आवश्यता है।

◆◆●◆◆

बदलाव की ओर

आशा आर्या

हमारे गाँव बानठौक में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों से अनेक बदलाव आये हैं। हमारे यहाँ अनेक घरों में पॉलीहाउस दिये गये। पॉलीहाउस में सब्जियों का उत्पादन ज्यादा हो रहा है। पहले से जंगली जानवर घरों के आस–पास के खेतों में लगायी गयी सब्जी को नष्ट कर देते थे। अब पॉलीहाउस से बहुत फायदा हो रहा है। ग्रामवासी पॉलीहाउस में सब्जी का उत्पादन कर के दुकानों में बेच रहे हैं। इस प्रकार पॉलीहाउस से आमदनी बढ़ रही है। संस्था में जुड़ कर ग्रामवासियों को अनेक लाभ हो रहे हैं।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा मनीआगर गाँव में कम्प्यूटर, सिलाई, बुनाई, ब्यूटी पार्लर केन्द्र संचालित किये गये हैं। पहले से लोग कपड़ों की सिलाई के लिये अल्मोड़ा, बाड़ेछीना, पनुवानौला इत्यादि स्थानों में जाते थे। सिलाई के पैसे तो लगते थे। गाड़ी में आने–जाने के पैसे अलग लगते थे। इससे लोगों के ज्यादा पैसे खर्च होते थे। मनीआगर में सिलाई केन्द्र खोला गया तो लोगों को बहुत लाभ हुआ। महिलाओं और किशोरियों ने सिलाई सीखी। आज वे अपने व रिश्तेदारों के कपड़े सिल कर आमदनी बढ़ा रही हैं। इसी प्रकार सिलाई के लिए जो लोग पहले दूर जाते थे वे कपड़े सिलने के लिए अपने गाँव में ही दे रहे हैं। हमारे गाँव में लड़कियों पर इसका अच्छा प्रभाव रहा है। बहुत सी लड़कियों ने सिलाई सीख ली है। कुछ नवयुवतियों ने अपनी दुकानें भी खोल ली हैं। इस प्रकार वे अच्छी आमदनी कमा रही हैं। वे सिलाई सीख कर अपना खर्चा खुद उठाती हैं।

कई लड़कियों ने ब्यूटी पार्लर का काम सीखा है। पहले से गाँव में कोई शादी होती थी तो बाजार जाना पड़ता था। वहीं से थ्रेडिंग इत्यादि एवं अन्य सब मेकअप कर लौटते थे। इसमें बहुत पैसे खर्च होते थे। गाड़ी में आने–जाने का किराया भी अधिक था। जब से संस्था में जुड़े, कई लड़कियों ने ब्यूटी पार्लर का काम सीख लिया। अब वे स्वयं शादियों में दुल्हन एवं परिवार के अन्य लोगों को तैयार करने जाती हैं। इससे उनकी अच्छी आमदनी हो जाती है।

अनेक महिलाओं ने घर पर भैंसें या गायें पाली हैं। वे दूध और घी बेचती हैं। इन सभी कार्यों से लोग अपनी आय बढ़ा रहे हैं। जो लोग खेती करते हैं, वे दालें बेच कर अपनी आमदनी बढ़ाते हैं। साथ ही कुछ लोग बिच्छू, झुलू, त्वेसी, मोरपंखी, पोदिना इत्यादि बेच कर अपना खर्चा चला रहे हैं। बुरांश के फूल भी बेचे जाते हैं। पहले आय बढ़ाने के लिये इस प्रकार के कार्य ग्रामवासी नहीं करते थे। अब बदलाव हो रहा है। लोग नये–नये विकल्प तलाश रहे हैं जिससे आय में वृद्धि हो सके। कुछ गरीब महिलाएं कंकड़–पत्थर तोड़ कर अपनी आमदनी बढ़ाती हैं। इसके अतिरिक्त हमारे गाँव में लोहार हैं। वे दराती–कुदाल इत्यादि कृषि के औजारों को बेच कर अपने घर–परिवार की देखभाल कर रहे हैं।

◆◆●◆◆

एक नया माहौल बना

अनामिका पंवार

पुडियाणी गाँव, जिला चमोली, में ग्राम शिक्षण केन्द्र सन् 2014 में शुरू हुआ। शिक्षण केन्द्र खुलने से गाँव में एक अच्छा और नया माहौल बना। साथ ही गाँव में सभी बच्चों का बौद्धिक व तार्किक रूप से विकास हुआ। ग्राम शिक्षण केन्द्र में सभी बच्चों को कहानी पढ़ना, लिखना, अधूरी कहानी को पूरा करना, खेल–खेल के माध्यम से शिक्षण सिखाया। वहाँ पर बच्चे किसी भी बन्धन में नहीं बँधे थे तथापि बच्चों में अनुशासन का भाव बढ़ता चला गया। रोज केन्द्र में आना, भावगीत और शैक्षिक गतिविधियों को सुचारू रूप से आगे बढ़ाना एक अद्‌भुत प्रयास है जो बच्चों का मनोबल बढ़ा कर के उन्हें आत्मविश्वास से भर देता है।

मैं बचपन में स्वयं ग्राम शिक्षण में पढ़ने जाती थी। मुझे वहाँ सभी चीजें अच्छी लगती थी क्योंकि पहले हमें स्कूलों में अन्य पुस्तकें पढ़ने का अवसर नहीं मिलता था। ग्राम शिक्षण केन्द्र में नई–नई कहानियों की किताबें पढ़ना, खेलना, चित्रकला करना अच्छा लगता था। जो किताबें न तो हमें स्कूलों में मिलीं और ना ही खरीद सकते थे, वे हमें ग्राम शिक्षण केन्द्र के माध्यम से मिली हैं। जब मैंने ग्राम शिक्षण केन्द्र में बच्चों के साथ काम शुरू किया तो मुझे लगा कि हम शिक्षिकाओं को स्वयं सीखने को बहुत कुछ नया मिला है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र में बच्चों के तार्किक गुणों को उभार कर उनके मानसिक विकास में सहयोग देना बहुत ही अच्छा प्रयास है। केन्द्र न केवल बच्चों के लिए लाभदायक है बल्कि गाँव के युवाओं, महिलाओं, बुजुर्गों, सभी के लिए उपयोगी है। ग्राम शिक्षण का अर्थ ही है कि पूरे गाँव का शिक्षण करना। गाँव के लोग देखने आ सकते हैं कि केन्द्र में बच्चों को क्या शिक्षा दी जा रही है। वे खुद देख सकते हैं कि उनके बच्चों की रूचि किस क्षेत्र में है ताकि आगे चलकर जिस क्षेत्र में बच्चों का ध्यान हो उसे पूरा करने में सहयोग प्रदान कर सकें। घर वाले बच्चों पर दबाव न बनायें, उनकी पसंद की पढ़ाई व रूचि का काम करने दें। बच्चे का जिस क्षेत्र में मन होगा, वह उसी कार्य को करना चाहेगा। मुख्य रूप से परिजनों का योगदान यही रहेगा कि बच्चों को अच्छे सुझाव दें, ठीक से निर्देश दे सकें।

ग्राम शिक्षण केन्द्र के खुलने से शिक्षा व विकास के प्रति पूरे गाँव के विचारों में बदलाव आया है। महिला संगठन की गोष्ठियों में मन में दबे विचार, भाव आगे लाये जाते हैं और गरीब स्त्रियों को बोलने का मौका दिया जाता है। ग्राम शिक्षण

केन्द्र की विशेषता यही है कि कोई सिखायेगा नहीं, बल्कि सभी एक दूसरे से सीखेंगे।

कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र खुलने से गाँव में एक नया माहौल बना। सभी ग्रामवासी खुश हुए कि कम्प्यूटर केन्द्र खुला है और बच्चे नये कौशल सीखेंगे। इससे पहले बहुत कम बच्चों ने गाँव से बाहर जा कर कम्प्यूटर का कोर्स किया था। उन्हें वहाँ जाने में गाड़ी का खर्चा लगता तथा समय भी व्यर्थ जाता। एक महीने में कम्प्यूटर की फीस भी सात सौ रुपया देनी होती। जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, वे बच्चों को कम्प्यूटर नहीं सिखा पाते थे। ये सब मैंने स्वयं अनुभव किया है। मैंने गाँव से बाहर जाकर कम्प्यूटर सीखा। मैं इस संबंध में दैनिक कठिनाइयों से पूरी तरह परिचित हूँ। कम्प्यूटर की फीस, समय, गाड़ी का किराया, ये सब करना पड़ता है।

अब तक केन्द्र में तीस बच्चों ने कम्प्यूटर सीख लिया है। बच्चे बहुत उत्साह के साथ कम्प्यूटर सीखते हैं। उनके लिए कम्प्यूटर के कार्य, सॉफ्टवेयर और उस के उपयोग जानना एक नया अनुभव है। जो बच्चे गाँव से बाहर कम्प्यूटर सीखने नहीं जा सकते थे उन्होंने तीन महीने का कोर्स पूरा किया। उन्हें प्रमाण पत्र भी मिला। हमने गाँव में सभी महिलाओं के साथ गोष्ठी में प्रमाण पत्र वितरित किये।

गाँव में कुछ बच्चे इतने मेहनती थे कि वे दोपहर को स्कूल से आने के बाद समय न मिलने के कारण सुबह चार और पाँच बजे कम्प्यूटर सीखने आया करते। मुझे इस बात से अत्यधिक खुशी हुई कि बच्चों और गाँव के विकास में मेरा भी योगदान रहा। वे बच्चे बहुत मेहनती थे। उन्होंने लगन से पूरा कोर्स किया। कम्प्यूटर केन्द्र खुलने के बाद गाँव की कुछ महिलाएं भी सीखने आयीं। वे अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा बनीं।

वर्तमान काल में कम्प्यूटर का प्रयोग हर क्षेत्र में हो रहा है। शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन, वैज्ञानिक अनुसंधान, समाचार, बैंकिग और अन्य सभी व्यवसायों में कम्प्यूटर का प्रयोग हो रहा है। इस कारण कम्प्यूटर में काम करने का कौशल प्राप्त करना बच्चों के लिए एक अति महत्वपूर्ण कार्य है। ग्रामवासियों के लिए केन्द्र बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ क्योंकि माता–पिता बच्चों को इस चीज के बारे में जानकारी देना चाहते थे। उन्हें कम फीस देने पड़ी। इस बात से भी गाँव में सभी लोग बहुत खुश हैं।

मैंने अपने गाँव में कम्प्यूटर केन्द्र अगस्त 2022 से चलाया। यह जरूरी नहीं कि सीखने के बाद बच्चे कम्प्यूटर के ही किसी क्षेत्र में काम करें। कम्प्यूटर की

जानकारी होना भी आवश्यक है। कम्प्यूटर केन्द्र के माध्यम से हम ये भी लोगों को बता सकते हैं। एक अनुभव जो मुझे हुआ वह यह है कि गाँव से बाहर जाकर मैंने उतना नहीं सीखा जितना अल्मोड़ा में पाँच दिन की ट्रेनिंग में सीखा। हम पहले गाँव से बाहर सीखने जाते तो थे, पर ज्यादा कुछ सीख नहीं पाये। फीस तो पूरी देनी थी लेकिन गुणवत्ता कम रही।

ग्राम शिक्षण केन्द्र में ही हम किशोरियों की बैठकें भी करते हैं। उनके आत्मविश्वास, शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास, शिक्षा या कम उम्र में शादी, पढ़ाई न करने पर आ रहे सामाजिक दबावों पर चर्चा करते हैं। वे आगे बढ़ें, स्वयं आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहें, जीवन में सुधार लायें, ये सब बातचीत करते हैं। आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए किशोरियों को बताया जाता है कि वे अपने लिए लक्ष्य निर्धारित करें। सामाजिक कार्यों में पूर्ण सहयोग दें जिससे कि आत्मविश्वास बढ़े। आत्मविश्वास बढ़ने पर हम अन्य कई कार्य स्वयं कर सकते हैं। किशोरियाँ अपनी बातें कहें, खुद पर विश्वास रखें और अपने कार्यों को करने के लिए खूब प्रयास करें। खुद की तुलना दूसरों से न करें। दूसरों की मदद करें और अच्छे लोगों की संगत में रहें। हम अपनी सोच हमेशा अच्छे विचारों की ओर ढ़ालें जिससे स्वस्थ मन का विकास हो।

सिलाई और कढ़ाई का काम संस्था के माध्यम से हुआ। इससे भी ग्रामवासियों को बहुत लाभ मिला। सभी प्रशिक्षार्थियों ने अपने कपड़े खुद सिले। कुछ महिलाओं ने इससे आय का स्रोत भी शुरू किया। इसके अतिरिक्त आय–सृजन के लिये युवतियाँ गाँव में बच्चों को ट्यूशन देने का काम कर सकती हैं। घरों में पुराने सामान को एकत्रित करके उसे नया रूप दे सकती हैं। इससे उनकी आय में वृद्धि होगी। गाँवों में अनेक ऐसे फल होते हैं जो अचार बनाने के काम में आते हैं। ग्रामवासी अचार बना कर आय बढ़ा सकते हैं। गाँव में सब्जियों का उत्पादन कर स्वयं भी अच्छी सब्जी खायें और बाजार में बेचकर आय का स्रोत बढ़ायें तो ग्रामवासियों को लाभ होगा। मिट्टी वाले घरों में मशरूम का उत्पादन करके भी आय बढ़ायी जा सकती है।

वर्तमान समय में स्वास्थ्य पर ध्यान देना बहुत ही महत्वपूर्ण है। अच्छे स्वास्थ्य के बिना हम कुछ भी कार्य नहीं कर सकते। गाँवों में एक योग सेंटर खोला जा सकता है। गाँव में जो बुर्जुग शाम के समय बैठे रहते हैं वे वहाँ पर जा कर स्वास्थ्य लाभ ले सकते हैं।

◆◆●◆◆

हिनारी में जीवनचर्या

गीता दानू

मेरे गाँव का नाम हिनारी है। यह गाँव जनपद बागेश्वर में स्थित है। पर्यावरण एवं शिक्षा समिति शामा के साथ हमारे गाँव की स्त्रियाँ, बच्चे, युवा सभी जुड़े हैं। हिनारी तोक, गोगिना धारी गाँव से दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। चढ़ाई में चढ़ना पड़ता है। मैं सुबह पाँच बजे उठती हूँ। हाथ–मुँह धोकर आग जलाती हूँ। गाय दुहती हूँ। अपना सारा काम करती हूँ। बच्चों के लिए नाश्ता बनाती हूँ। दो बेटियों को स्कूल के लिए तैयार करती हूँ। दो छोटे बच्चे घर पर रहते हैं। खेतों में गुड़ाई करना, गायों के लिए घास काटना जैसे काम रोज करती हूँ। खेतों से घर वापस आ कर बच्चों को देखती हूँ, खाना खिलाती हूँ। यदि बारिश हो तो बच्चों को लेने के लिये उन के स्कूल जाती हूँ। उस के बाद तीन बजे ग्राम शिक्षण केन्द्र खोलती हूँ। खेल–खेल में विभिन्न गतिविधियाँ, भाव गीत और खेल कराती हूँ। केन्द्र में साढ़े पाँच बजे छुट्टी होती है।

हमारे गाँव में महिलाएं सुबह पाँच बजे उठ कर बहुत दूर जंगल में जाती हैं। वहाँ से गाय–भैसों के लिए हरा चारा काट कर लाती हैं। घर आने के कुछ समय बाद खेतों में काम करने जाती हैं। गोगिना क्षेत्र में मडुआ, चुआ, गुरूँस, राजमा, मक्का, आलू की खेती होती है। स्त्रियाँ सारे घरेलू काम करती हैं। बच्चों को स्कूल पहुँचाना और घर वापस लाना, उनकी देखभाल और खेती–बाड़ी का काम महिलाएं ही करती हैं। सास या बुजुर्ग महिलाएं गाय–भैसों के साथ घर से पच्चीस–तीस किलोमीटर दूर जंगल लमतरा में जाती हैं। वे बरसात के मौसम में जानवरों को वहाँ ले जाती हैं। कुछ लोग अन्य ग्रामवासियों की गायें भी ले जाते हैं। वे वहाँ पर जानवरों की अच्छी तरह से देखभाल करते हैं। दूध देने वाली गायों और भैसों को चारा काट कर भी खिलाते हैं। दूध से घी बनाते हैं।

घी बेचते भी हैं। एक किलो घी छः सौ रुपये में बेचते हैं। इस आमदनी से घर का खर्चा चलाते हैं। बच्चों की फीस देना, बचत करना आदि काम इसी से पूरे होते हैं।

आंगनवाड़ी दूर होने के कारण छोटे बच्चे केन्द्र में नहीं जा पाते। जंगल का रास्ता है और वह भी खराब है। इस कारण बच्चे आंगनवाड़ी नहीं जा पाते हैं। बच्चे ग्राम शिक्षण केन्द्र में ही सीखते हैं। वे उठना–बैठना, बोलना, खेलना, अपना परिचय देना, पढ़ना आदि शिक्षण केन्द्र में ही सीखते हैं। बच्चों को हाव–भाव और मुखौटों के द्वारा कहानी सुनाने से वे नये–नये शब्द सुनते और बोलते हैं। बच्चों को छः साल में कक्षा एक में भर्ती करते हैं। पहले तो बच्चे स्कूल जाने से डरते थे। उन्हें हिन्दी बोलना नहीं आता था। आज ग्राम शिक्षण केन्द्र के कारण बच्चे अच्छी तरह से हिन्दी बोल पाते हैं। जब से हमारे गाँव में शिक्षण केन्द्र खुला तब से बच्चों में बहुत बदलाव हुआ है।

महिलाएं हर माह में गोष्ठी करती हैं। रास्तो में सफाई, हर किसी की मदद करना, यह ग्राम शिक्षण केन्द्र के खुलने से संभव हुआ। महिलाओं में विकास के काम करने के लिये एकता हुई। वे अपने काम करती हैं और एक दूसरे को सहयोग देती हैं। मोहनी देवी और परूली देवी ऊन का काम करती हैं। भेड़ बकरियों के ऊन से बखूला, पायजामा, कोट, कम्बल आदि बनाती हैं। बहुत से ग्रामवासी रिंगाल का कार्य करते हैं। मुन्नी देवी टोकरी, चटाई, डलिया और मोस्टा बनाती हैं। इस सामान को खरीदने के लिए ग्राहक घर पर ही आते हैं। महिलाएं जंगल से सूखी लकड़ी और पत्तियाँ लाती हैं। गाय–भैसों के लिये चारा लाती हैं। पत्थर–बजरी कंकड़ तोड़ कर भी महिलाएं अपने बच्चों की फीस का इंतजाम करती हैं। हिनारी तोक में कुल सोलह परिवार निवास करते हैं।

◆◆●◆◆

आय वृद्धि

करिश्मा सगोई

सुन्दर गाँव चमोली जिले के कर्णप्रयाग ब्लॉक में स्थित है। मैं अपने गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र का संचालन करती हूँ। हमारे गाँव में केन्द्र खुलने से बहुत परिवर्तन हुआ है। बच्चों, किशोरियों, महिलाओं एवं अन्य सभी ग्रामवासियों को फायदा हुआ है।

महिलाओं और नवयुवतियों ने सिलाई बुनाई जैसे कार्य संस्था की मदद से सीखे। मेरे गाँव की चार किशोरियों ने संस्था द्वारा संचालित सिलाई केन्द्र जाख में सिलाई सीखी। वे स्वयं और कभी–कभी अन्य ग्रामवासियों के कपड़े सिलती हैं। दो नवयुवतियाँ सिलाई करके पैसे कमा रही हैं। वे महीने का एक हजार से पन्द्रह सौ रुपया कमाती है। ग्राम शिक्षण केन्द्र एवं महिला संगठन के सहयोग से महिलाएं अनेक कार्यों जैसे–पशुपालन, कृषि, बकरी पालन, मुर्गी पालन, सिलाई, खेतीबाड़ी इत्यादि को आगे बढ़ा कर आय प्राप्त कर रही हैं। वे नकदी फसलों के साथ–साथ फल, सब्जियों का भी उत्पादन कर रही हैं। दुकानें, ब्यूटी पार्लर जैसे कार्य करके भी महिलाएं पैसे कमाती हैं। पशु पालन में गाय, भैंस को पाल कर दुग्ध उत्पादन करती हैं। दूध बेच कर आजीविका प्राप्त करती हैं।

महिलाएं अपनी आय से घर–परिवार एवं अन्य खर्चों में योगदान दे रही हैं। सन् 2017 में राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन परियोजना के तहत संस्था द्वारा महिलाओं को सब्जी के बीज उपलब्ध कराये गये। फूलगोभी, मटर, राई, पालक आदि के बीजों से सभी ने सब्जियों का अच्छा उत्पादन किया। कुछ बीज खराब भी हो गये।

संस्था के कार्यकर्त्ता महिला संगठनों की गोष्ठियों में रोजगार के अवसरों के बारे में जानकारियाँ देते हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र एवं संगठन के कारण महिलाएं एकजुट हो कर कार्य कर रही हैं। गाँव में महिला संगठन की नियमित मासिक बैठकें आयोजित की जाती हैं। वे अपनी–अपनी समस्याओं, कार्यों, लाभ–हानि जैसे किस व्यवसाय में मुनाफा है, किस में नहीं तथा आय वृद्धि के अन्य स्रोतों के बारे में चर्चा करती हैं। सभी एक–दूसरे की बातों को सुनते हैं और अपनी बातें बताते हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र, महिला संगठन व किशोरी संगठन के माध्यम से सभी को व्यवसाय–संबंधी नई जानकारी प्राप्त होती है। महिला संगठन के

गठन के बाद ही महिलाएं आत्मनिर्भर बनीं। पहले वे स्वयं की बातों को रखने में हिचकिचाती थीं परन्तु अब ऐसा नहीं है।

अब महिलाएं सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक सभी कार्यों में पूर्ण सहयोग देती है। कोई भी कार्य करने से पूर्व वे गोष्ठी में चर्चा करती हैं। सभी पहलुओं पर चर्चा होती है। संगठन शुरू होने के बाद महिलाएं बहुत जागरूक हुई हैं। विद्यालयों, ब्लॉक, तहसील तथा अन्य बैठकों में भी महिलाएं प्रतिभाग करने जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कई महिलाएं पढ़ी–लिखी नहीं होतीं परन्तु संगठन की गोष्ठी में उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। वे आत्मविश्वास प्राप्त करती हैं। निडर बनती हैं और निर्भीक हो कर विचार प्रकट करती हैं।

पहले किशोरियों को भी झिझक रहती थी कि एक–दूसरे से कैसे बात करें। अब ऐसा नहीं है। अब वे खुल कर अपनी बातों को बोल पाती हैं। संगठन से महिलाओं की दिनचर्या, जानकारी, कौशल और व्यक्तित्व में बहुत बदलाव आये। जो समय फालतू कामों में गुजरता था, अब अच्छी बातों और आय–सृजन की क्रियाओं में गुजरता है।

◆◆●◆◆

संस्था द्वारा आय वृद्धि के कार्यक्रम

पीताम्बर गहतोड़ी

पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी द्वारा 1989–90 से मत्स्य पालन का एक कार्यक्रम शुरू किया गया। इस कार्यक्रम में ग्राम तोली, जौलाड़ी, रौलामेल, किम्वाड़ी, लखनपुर, रानीचौड़, पाटी, कमलेख, गरसाड़ी, बिगराकोट, ढ़रौंज, बिसारी, जैरोली, गूम, पम्तोला, भट्यूड़ा, छत्रिद्यार आदि गाँव के अस्सी लोगों ने मत्स्य पालन को अपनी आय का साधन बनाया। मत्स्य पालन के अलावा मौन पालन, सब्जी उत्पादन का कार्य हुआ। आज इस क्षेत्र में बीस प्रतिशत परिवारों द्वारा बाजार में बेचने के लिये सब्जी–उत्पादन किया जा रहा है। पाँच प्रतिशत लोगों ने इस कार्यक्रम को बागवानी से भी जोड़ा है। क्षेत्र में सेब, आड़ू, खुबानी, प्लम, कीवी, अंगूर आदि का उत्पादन हो रहा है। सौ वर्ग मीटर के तालाब से एक वर्ष में बारह हजार से बीस हजार रुपये तक आय होती है। बागवानी एवं सब्जी उत्पादन से एक वर्ष में पन्द्रह हजार से तीस हजार तक आय हो रही है। मत्स्य पालन कार्यक्रम को क्षेत्र में एक क्रान्ति के रूप में देखा जा रहा है। इस कार्यक्रम से जल संरक्षण में भी भारी मदद मिल रही है। मुख्यतः सब्जी उत्पादन तथा बागवानी, भूमि में नमी और मृदा–संरक्षण के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध है। इससे कृषि बची हुई है और ग्रामवासी खेतों को बंजर नहीं छोड़ते।

मेरे पास ग्राम तोली में चार तालाब हैं। ढ़ाई सौ वर्ग मीटर का एक, सौ वर्ग मीटर के दो और एक पचास वर्ग मीटर का तालाब है। ये चार तालाब मत्स्य पालन के साथ–साथ सिंचाई के लिये उपयोग में आते हैं। मछली, सब्जी उत्पादन, मौन पालन आदि कार्यों से वर्तमान में अच्छी आय हो जाती है। मत्स्य पालन में बारह संस्थानों से राज्य एवं जिला स्तर के अवार्ड मिल चुके हैं। इससे सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ी और एक नयी पहचान मिली। साथ ही पारिवारिक आय में वृद्धि हुई। इसके अलावा पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी द्वारा बालवाड़ी, स्वास्थ्य, पुस्तकालय, संध्या केन्द्र, ग्राम शिक्षण केन्द्र, किशोरी एवं महिला कार्यक्रम किये गये। इन पर्यावरणीय कार्यक्रमों से क्षेत्र में सामाजिक बदलाव हुए हैं।

श्री कृष्णानन्द गहतोड़ी, ग्राम तोली, के पास पाँच तालाब हैं। दो तालाब ढ़ाई सौ वर्ग मीटर, दो तालाब सौ वर्ग मीटर तथा एक पचास वर्ग मीटर का है। आड़ू के दस पेड़, सेब के पन्द्रह, नींबू के पाँच, खुबानी के दो, प्लम के दो, कीवी के दो, माल्टा के दो, अंगूर के दो पेड़ हैं। सब्जी उत्पादन, मौन पालन

आदि से वर्तमान में अच्छी आय हो जाती है। मत्स्य पालन आदि कार्यक्रमों में लगभग बारह संस्थानों से राज्य स्तरीय तथा जिला स्तरीय अवार्ड मिल चुके हैं। इससे सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ी ओर पारिवारिक आय में वृद्धि हुई।

ग्राम पम्तोला में चिन्तामणी भट्ट जी रहते हैं। वे एक मेहनती किसान हैं। वे बागवानी में अधिक रूचि रखते हैं। इनके पास सेब के तीन सौ, कीवी के बीस, माल्टा और प्लम के लगभग बीस पेड़ हैं। इसके अलावा तीन मत्स्य तालाब सौ वर्ग मीटर, डेढ़ सौ वर्ग मीटर और पचास वर्ग मीटर के हैं। खास बात यह है कि वे 2010 में हिमाचल प्रदेश से कीवी के पौधे लाये और क्षेत्र में एक अच्छी शुरूआत की। आज की स्थिति को देखा जाये तो बहुत से कृषक कीवी उत्पादन का कार्य कर रहे हैं। उन्हें कीवी, अन्य फलों तथा सब्जी उत्पादन से अच्छी आय हो रही है।

ग्राम जौलाड़ी के निवासी सुरेश राम एक मत्स्य पालक हैं। इनके पास सौ वर्ग मीटर के चार तालाब हैं। वे सब्जी उत्पादन का कार्य भी करते हैं। इसके अलावा, ग्राम जौलाड़ी के ही निवासी श्री बहादुर सिंह, पाटी के श्री राजेन्द्र लाल, किम्वाड़ी के श्री दीपक पचौली, रौलमेल के श्री गुमान सिंह, जौलाड़ी के शिवराज सिंह, ग्राम कमलेख के श्री किशोर सिंह, ग्राम बिसारी के श्री पूरन राम, ग्राम भुम्वाड़ी के श्री प्रेम राम, बिगराकोट के श्री दया राम, कोटा के श्री पूर्णानन्द भट्ट व श्री मनोज भट्ट, रानीचौड़ के श्री भगवान राम आदि प्रतिभावान कृषकों की श्रेणी में आते हैं। ये किसान सब्जी उत्पादन, मत्स्य पालन, बागवानी एवं मौन पालन आदि कार्यों से एक वर्ष में पचास हजार से अधिक की आय प्राप्त कर रहे हैं। ये सभी कृषक पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी से कई वर्षों से जुड़े हैं। इन सभी कार्यक्रमों को उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के आर्थिक सहयोग द्वारा क्रियान्वित किया गया है।

सन् 1990 से पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी, उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सहयोग से समाज में कार्य कर रही हैं। कुछ बदलाव निम्नवत् हैं–

सन् 1990 के दशक में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सहयोग से प्रत्येक परिवार को शौचालय निर्माण के लिए एक हजार रुपये की सहायता दी और कच्चे शौचालय बने। इस कार्यक्रमों से ग्रामवासियों में प्रेरणा जागी और उन्होंने स्वयं अपने घरों में पक्के शौचालय बनाये। उन्हें देख कर अन्य लोगों में भी प्रेरणा जागृत हुई और लोगों का ध्यान स्वच्छता की तरफ गया। लगभग तीस गाँवों में सैकड़ों शौचालय बने। इससे ग्रामीण स्वच्छता के

क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आये। व्यक्तिगत सफाई, घर–बाहर की सफाई, शौचालयों की स्वच्छता और उपयोग के बारे में लगातार वर्षों तक चर्चा चलती रही। समाज में इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

संस्था द्वारा सन् 1990 में ग्राम तोली में जल संरक्षण का कार्य किया गया। संस्था द्वारा जल संरक्षण के विभिन्न तरीकों के बारे में जानकारियाँ दी गयी। लोगों ने जल के महत्व को समझते हुए अपने–अपने घरों में एल्काथीन पाइपों के द्वारा व्यक्तिगत रुप से पानी लाकर उसका उपयोग तथा संरक्षण किया। इस तरह के कार्यक्रम को देखकर ग्राम पम्तोला, किम्वाड़ी, रौलामेल, भुम्वाड़ी, बरौला, भट्यूड़ा, छत्रिद्यार, गरसाड़ी आदि गाँवों में भी जल प्रबन्धन एवं संरक्षण से सब्जी उत्पादन, बागवानी, नमी संरक्षण का कार्य हुआ। घरेलू कार्यों के लिये पानी सुलभ हुआ तो महिलाओं को आराम मिला।

1992–93 में संस्था द्वारा उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा के सहयोग से एक आदर्श नर्सरी की स्थापना की गयी। 2001 के आसपास इसे एक वन का रूप दे दिया गया। इस वन में बाँज, बुराँश, काफल, पॉपलर, उतीस, शहतूत, बड़ी झाड़ियाँ आदि मिलाकर लगभग पन्द्रह हजार पेड़ हैं। इस वन को देखकर आसपास के अन्य गाँवों जैसे–कूँण, भुम्वाड़ी, गरसाड़ी, जौलाड़ी आदि में व्यक्तिगत तथा सामूहिक वन बनाये गये। इस तरह पूरे क्षेत्र के गाँवों में वनों का एक अच्छा मॉडल विकसित हुआ। इस वन का पूर्ण पर्यावरणीय लाभ क्षेत्र के लोगों को मिल रहा है।

उपरोक्त कार्यक्रमों को देखकर समाज में बहुत से बदलाव आये। जिन लोगों ने खेती करना छोड़ दिया था उन्होंने कुछ लोगों की व्यक्तिगत आय को देख कर अपने बंजर खेतों में बागवानी, सब्जी उत्पादन, मत्स्य पालन आदि का काम शुरू किया। आज वे सफलतापूर्वक अपनी आजिविका चला रहे हैं। ये लोग अपने परिवार के उपयोग तथा बेचने के लिए सब्जी, फल, दुग्ध आदि का उत्पादन करते हैं और पूर्ण लाभ ले रहे हैं। चाहे अनेक से ग्रामवासी आय–वृद्धि कम कर रहे हैं लेकिन बाजार से उपरोक्त चीजें खरीद नहीं रहे हैं। इस पारिवारिक बचत के कारण लोगों को संतोष तो मिला ही, पैसा भी बचा। बचत का धन कुछ न कुछ काम में आया। इसमें पुरूषों के साथ–साथ महिलाएं भी हाथ बँटा रही हैं।

बालवाड़ी, किशोरी कौशल विकास, महिला संगठनों में भागीदारी एवं उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान में प्रशिक्षण और गोष्ठियों के माध्यम से सैकड़ों किशोरियाँ एवं महिलाएं आत्मविश्वास बढ़ा सकी हैं। महिलाओं एवं किशोरियों में व्यक्तिगत तथा सामुहिक बदलाव आया है। जैसे–अपने विचारों को समाज में रखना, स्वावलंबी होना, बच्चों को शिक्षा देना, बच्चों की सही देखरेख करना, बैंकों में लेनदेन, संगठनों से जुड़ना, सरकारी, अर्द्धसरकारी, गैर सरकारी संस्थानों में काम करना, आंगनवाड़ी और आशा कार्यकर्त्ती बनना, गाँव के संगठनों में बातचीत एवं गोष्ठियों में सक्रिय भागीदारी करना आदि गतिविधियाँ शामिल हैं।

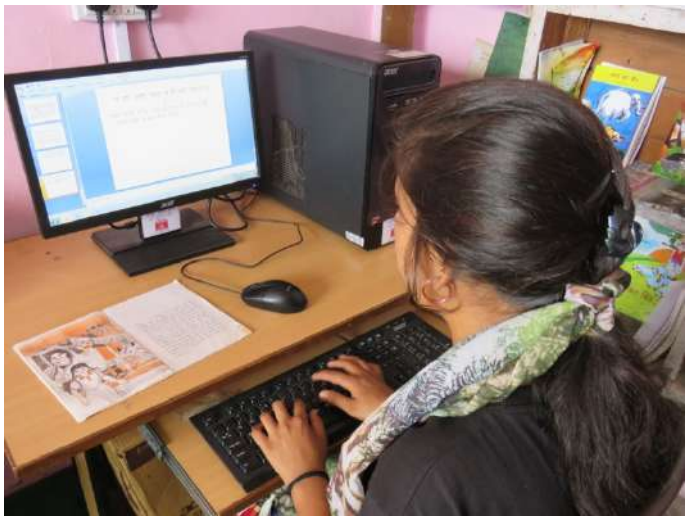

उपरोक्त कार्यक्रमों से इस क्षेत्र में व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक बदलाव हुए। आज ग्रामवासी खेती के माध्यम से आय–वृद्धि के नये–नये साधन ढूँढ़ रहे हैं। महिलाएं आय सृजन करने के लिये नये–नये तरीके अपना रही हैं। महिलाओं पर पहले की अपेक्षा कम सामाजिक दबाव है और वे आत्मनिर्भर हो रही हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों में किशोर और किशोरियों को भी जोड़ा जा रहा है। लोगें में घर और बाहर जैसे रास्ते, गधेरे, नौलों की स्वच्छता को लेकर अच्छा प्रभाव पड़ा है।

◆◆●◆◆

बचपन की यादें केन्द्र से जुड़ी है

शिवानी बिष्ट

जब मैंने एक जुलाई 2022 से खल्ला–कोटेश्वर गाँव में शिक्षण केन्द्र का संचालन आरम्भ किया तो उस दिन बारह बच्चे आये थे। फिर मैंने बच्चों के अभिभावकों से बात की। गाँव में सभी से कहा कि अपने बच्चों को शिक्षण केन्द्र में भेजो। उसके बाद सभी परिवारों ने बच्चों को शिक्षण केन्द्र में भेजा। लगभग पन्द्रह–सोलह बच्चे केन्द्र में आने लगे। अब मेरे केन्द्र में बड़े तथा छोटे बच्चे आते हैं।

सबसे पहले हम सभी मिल कर केन्द्र की सफाई करते हैं। बच्चे अपनी चप्पलों को लाइन से लगाकर अन्दर बैठते हैं। उसके बाद सभी मिल कर प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना के बाद हम सभी पन्द्रह मिनट मूक अध्ययन या पाठन करते हैं। मैं बच्चों से उनके द्वारा पढ़ी गयी कहानी के बारे में पूछती हूँ। जो किताब उन्होंने पढ़ी हो उस का नाम पूछती हूँ। एक–एक करके सभी बच्चे पढ़ी गयी बातों को बताते हैं। मैं भी उन्हें कहानी सुनाती हूँ। कहानी के बीच–बीच में प्रश्न पूछती हूँ जिससे बच्चों का ध्यान कहानी से न हटे। बच्चों को कहानी सुनना अच्छा लगता है। स्वाध्याय के बाद बच्चों को साप्ताहिक गतिविधि कराती हूँ। उन्हें हर दिन एक नयी गतिविधि सिखाती हूँ। उनसे भी नयी–नयी क्रियाएं करने को कहती हूँ।

बच्चे गतिविधियों को ध्यान से सीखते हैं और स्वयं भी कर लेते हैं। गतिविधियाँ बच्चों को अच्छी लगती हैं क्योंकि वे स्कूल में कुछ अन्य तरीके से पढ़ते हैं। केन्द्र में कुछ नयी चीजें सीखते हैं। बच्चों के लिए गतिविधियाँ नयी हैं इसलिए वे रूचिपूर्वक सभी चीजें सीखना चाहते हैं। बच्चे हर रोज नयी–नयी बातें सीखना पसंद करते है। इस कारण वे हमेशा केन्द्र में आते हैं।

मैं गतिविधि करने के लिए बच्चों को एक गोले में खड़ा करती हूँ। हमेशा दो भावगीत करवाती हूँ। बच्चों को भावगीत करना बहुत अच्छा लगता है। भावगीत करने में उन्हें और स्वयं मुझे बहुत मजा आता है। बच्चों को फेर–फुंदी वाला भावगीत सबसे अच्छा लगता है। भावगीत के बाद बच्चों को एक गोले में बैठा कर खेल करवाती हूँ। खेलों में उन्हें ठंडा गर्म, नमस्ते जी और कुछ स्थानीय खेल अधिक पसंद है। बच्चों के साथ खेलने में मुझे भी आनन्द आता है।

जब मैं छोटी थी, लगभग छः–सात साल की, तो उस समय सुन्दरी बुआ केन्द्र चलाती थी। तब मैं भी रोज केन्द्र में जाती थी। केन्द्र में जाकर नयी–नयी बातें सीखती थी। मुझे भाव गीत, चेतना गीत, कहानी, खेल ये सारी चीजें पहले से ही आती थीं। मैं बुआ की मदद भी करती थी। सभी बच्चों को सिखाती थी। सुन्दरी बुआ के साथ–साथ मैं भी भाव गीत, चेतना गीत बच्चों को कराती थी। बाल मेले में भाग लेने का अनुभव भी था। मैंने डांस, ड्रॉइग, खेलकूद, कविता, कहानी लगभग सभी कार्यों में भाग लिया था। जब छोटे–छोटे बच्चों को सिखाना आरम्भ किया तो वे भी बाल मेले में भाग लेने लगे। हमारा केन्द्र सदैव एक नम्बर पर आता है। सुन्दरी बुआ को केन्द्र चलाते–चलाते दस साल हो गये थे। मैं भी उनके कार्यकाल में लगातार केन्द्र में गयी थी।

उसके बाद कुछ मजबूरियों के कारण सुन्दरी ने केन्द्र छोड़ दिया। उसके बाद राखी चाची ने केन्द्र चलाया। मैं उनके साथ भी केन्द्र में जाती थी। जिज्ञासा होती कि मैं भी केन्द्र चलाऊँ लेकिन उस समय बारहवीं की कक्षा होने के कारण मेरा बोर्ड था। ग्रामवासियों ने पूछा भी था लेकिन बोर्ड की परीक्षा के कारण मैंने मना कर दिया। राखी चाची के बाद चन्दा दीदी ने केन्द्र सम्भाला। बाद में तबियत खराब होने के कारण वे केन्द्र न चला सकीं। परिणामस्वरूप ग्रामवासियों ने पुनः मीटिंग की और मुझे भी बुलाया। उन्होंने मुझ से पूछा कि केन्द्र चला सकती हो अथवा नहीं। मैंने सहमति दे दी। मेरी बचपन की सारी यादें केन्द्र से जुड़ी थीं। हमेशा से इच्छा थी कि केन्द्र का संचालन करूँ। मुझे लगभग सब गतिविधियाँ कराना आता था। फिर मैंने अल्मोड़ा में पाँच दिनों की ट्रेनिंग ली। ट्रेनिंग में बहुत कुछ सीखा। कुछ मेरे लिए नया था और कुछ पहले से ही आता था। अब मैं नियमित रूप से शाम को चार से छः बजे तक केन्द्र चलाती हूँ। गर्मी के मौसम में देर तक उजाला रहता है। इस कारण केन्द्र को छः बजे के बाद भी खुला रखती हूँ।

कम्प्यूटर एवं सिलाई केन्द्र

मनीषा बोरा

मेरा गाँव पिछले बाइस सालों से उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान से जुड़ा है। सबसे पहले संस्था द्वारा हमारे गाँव में बालवाड़ी खोली गयी। इसके माध्यम से गाँव की महिलाओं ने मिलकर एक संगठन बनाया। सभी महिलाओं ने हर महीने मात्र दस रुपये जमा करके गाँव में होने वाले मांगलिक कार्यक्रमों में उपयोग होने वाली सामग्री जोड़ी। अब हमें सामुहिक कार्यों के लिये सामग्री खरीदने या किसी अन्य से मांगने की आवश्यकता नहीं होती है। यह सामग्री गाँव में सभी लोगों के लिए निःशुल्क है। इसके लिए उन्हें कोई कर नहीं चुकाना पड़ता है। इस कार्य से लोगों का काफी खर्चा बच जाता है।

मेरे ग्राम भन्याणी में ग्राम शिक्षण केन्द्र भी है। ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़ कर मुझे काफी लाभ हुआ। नयी–नयी किताबें पढ़ने को मिलीं। नयी गतिविधियाँ, खेल और गीत सीखे। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा किया गया एक प्रयास यह भी था कि भन्याणी गाँव में बहुत पहले एक सिलाई केन्द्र खोला गया। इसमे तीन महीने का प्रशिक्षण था। बहुत सी महिलाओं और किशोरियों ने सिलाई सीखी। 2019 में कम्प्यूटर केन्द्र खोला गया और संस्था के द्वारा दो कम्प्यूटर दिये गये।

सिलाई केन्द्र खोलने के बाद महिलाओं व किशोरियों ने सिलाई सीखी। इससे गाँव की महिलाओं व किशोरियों को काफी फायदा हुआ। वे अपने कपड़े स्वयं सिलती हैं। साथ ही गाँव के अन्य लोगों के कपड़े सिल कर धन कमा रही हैं। कम्प्यूटर केन्द्र खोलने से गाँव के लोगों को कम पैसों में कम्प्यूटर सीखने का अवसर प्राप्त हो रहा है। लोगों को कम्प्यूटर सीखने के लिए गाँव से बाहर

नहीं जाना पड़ता है। इस तरह वे अपने समय और धन की बचत कर पा रहे हैं।

कम्प्यूटर केन्द्र खुलने से सबसे अधिक लाभ मुझे हुआ है। मैंने पहले यहीं से कम्प्यूटर प्रशिक्षण लिया और अब मैं स्वयं केन्द्र चला रही हूँ। अब बच्चों के साथ–साथ मुझे भी कम्प्यूटर की काफी नयी जानकारियाँ प्राप्त हो रही हैं। नये कौशल सीखने को मिल रहे हैं। साथ ही पड़ोस के ग्रामवासियों को भी काफी लाभ हो रहा है।

मैं उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान का तहे दिल से आभार व्यक्त करती हूँ। कि उन्होंने हमारे गाँव के विकास के लिये इतना प्रयास किया। हमारे गाँव में कम्प्यूटर जैसी सुविधाएं उपलब्ध हुई। पहले तो हमने कभी यह सोचा भी नहीं था कि गाँव में ही कम्प्यूटर केन्द्र होगा और सभी बच्चे या अन्य इच्छुक लोग कम्प्यूटर का कौशल हासिल कर पायेंगे। संस्था के कारण हमें यह सौभाग्य मिला और ग्रामवासियों ने इस मौके का अच्छा लाभ उठाया है।

◆◆●◆◆

नयी जानकारियाँ, नये कौशल

वन्दना पंवार

हमारे गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र जून 2022 से खुला। गाँव में रहने वाले छः से चौदह वर्ष तक के बच्चे शाम के समय यूँ ही इधर–उधर घूमते–फिरते रहते थे। केन्द्र खुलने से वे एक जगह पर आ कर नयी–नयी जानकारियाँ लेकर नये–नये कौशल सीखने लगे। ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से गाँव में एक अच्छा माहौल बन गया है। बच्चों को सरल तरीके और खेलों के माध्यम से भाषा, गणित, सामान्य ज्ञान आदि विषय कराये जाते हैं। मैंने अल्मोड़ा में प्रशिक्षण के दौरान सीखा कि बच्चों के साथ कैसे काम करना है। प्रार्थना, भावगीत, कहानी और अनेक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को सरल तरीके से सिखाया जाता है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से बच्चों का ही नहीं पूरे गाँव का शिक्षण होता है। जैसे महिला, पुरूष, किशोरी, किशोर केन्द्र से किताबें पढ़ने के लिए घर ले जाते हैं। राजकीय प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका ने कहा कि केन्द्र से बच्चे प्रार्थना, भावगीत, सामान्य ज्ञान व कहानियाँ सीख कर विद्यालय में आते हैं। केन्द्र बहुत अच्छा है।

इससे बच्चे ही नहीं बल्कि महिलाओं में काफी बदलाव आया है। हर महीने महिलाओं की गोष्ठी होती है। महिलाएं हर महीने पूरे गाँव के साथ–साथ केन्द्र में भी सफाई करने के लिए आती हैं। केन्द्र खुलने से पहले मैं घर के कामों में माँ का हाथ बँटाती थी। खाली वक्त पर घर में ही रहती थी। केन्द्र खुलने के बाद मेरे सारे काम समय पर होते हैं। पहले मैं ग्रामवासियों के साथ कम रहती थी। उनसे बातें करने में झिझक होती थी। अब मैं रोज महिला गोष्ठी में जाती हूँ और अपनी बातें रख पाती हूँ। गोष्ठी में बताती हूँ कि बच्चों को केन्द्र में क्या–क्या सिखाया जाता है। कभी–कभी महिलाएं केन्द्र में बच्चों का कार्य देखने आती हैं। केन्द्र खुलने से पूरा गाँव बहुत खुश है।

हमारी संस्था द्वारा सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र जाख गाँव में खोला गया। हमारे गाँव से छः किशोरियाँ सिलाई सीखने जाती थीं। मैं भी उसी ग्रुप में जाती थी। हमने संस्था से सिलाई मशीन ले कर सूट, सलवार, पेटीकोट, ब्लाउज, पैंट वाली सलवार–सूट, काज, बटन, तुरपन करना सीखा। अब मैं अपने कपड़े खुद सिलती हूँ। माँ, दादी के लिये भी कपड़े सिलती हूँ। हमारे गाँव में दो नवयुवतियाँ स्वयं व गाँव की अन्य महिलाओं के कपड़े सिलती हैं। इससे अच्छी

खासी आमदनी करती हैं। वे एक हजार से पन्द्रह सौ रुपया प्रतिमाह तक कमा रही हैं। एक युवती गाँव में दो–तीन महिलाओं को सिलाई का काम सिखा रही है। इस से उन महिलाओं को सीखने का अवसर मिल रहा है।

गाँव की किशोरियाँ या महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए संस्था द्वारा कई तरह के कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं। शेप संस्था की पूरी कोशिश है कि नवयुवतियाँ आर्थिक रूप से मजबूत व स्वतंत्र बनें। नवयुवतियों को आत्म–निर्भर बनाने के लिए संस्था द्वारा सिलाई की शुरूआत की गयी है। सिलाई और कढ़ाई के काम से महिलाएं रोजगार के अवसर बढ़ा सकती हैं। सिलाई एक ऐसी कला है जिसकी जरूरत हर पीढ़ी के लोगों को होती है। महिलाओं के लिए यह रोजगार का एक बहुत अच्छा माध्यम है। इसमें आसानी से काम करते हुए आय सृजन किया जा सकता है।

घरेलू महिलाओं के लिए व्यवसाय के रूप में ट्यूशन पढ़ाना एक अच्छा विकल्प हो सकता है। अगर किसी को बच्चों को पढ़ाना पसंद है या फिर खुद क्रिएटिव बनना चाहे तो बच्चों को आसानी से घर पर ही पढ़ाया जा सकता है। अक्सर देखा जाता है कि बच्चे अपने परिजनों से पढ़ना पसंद नहीं करते हैं। ऐसे में नवयुवतियाँ बच्चों का मार्गदर्शन कर सकती हैं और इस तरह स्वयं का व्यवसाय भी शुरू कर सकती हैं।

आज के समय में यू–ट्यूब काफी लोकप्रिय हो चुका है। अगर कोई गृहणी कहीं बाहर जाकर काम नहीं करना चाहती है तो वह अपना यू–ट्यूब चैनल बना सकती है। उसमें उसे जिस काम के बारे में अच्छी जानकारी है, उसे लोगों के बीच पहुँचा सकती है।

अगर किसी क्षेत्र विशेष के बारे में जानकारी नहीं है तो भी यू–ट्यूब की मदद से अन्य कार्य किये जा सकते हैं। जैसे महिलाओं को खाना बनाना आता है। लोगों को अलग–अलग तरह के पहाड़ी व्यंजन बनाना सिखाया जा सकता

है। इसके अलावा अगर कोई नवयुवती किसी विषय में बहुत अच्छी है तो वह शिक्षा के चैनल द्वारा भारत के हर राज्य के बच्चों से जुड़ सकती है।

यू–ट्यूब में ज्यादा खर्च भी नहीं करना पड़ता। सिर्फ एक माइक खरीदना होता है। इसके बाद कॉइन मास्टर की मदद से फ्री में वीडियो को संपादित करके अच्छा बना सकते हैं। जो विषय लिया है उसे यू–ट्यूब पर अपलोड किया जा सकता है।

पौधों की नर्सरी बना कर बेचना एक लाभदायक व्यवसाय है। गाँव में खेतों की सुविधा तो होती ही है। खेतों में पौधों की नर्सरी का काम किया जा सकता है। खेतों में सब्जियाँ, फूलों के साथ–साथ छोटे पौधे जैसे नींबू, संतरा, अमरूद इत्यादि के पौधे उगाने हैं। तैयार पौधों को आसपास के कस्बों और शहरों में उचित दामों में बेचा जा सकता है।

शहरों या सड़कों के किनारे की बसासतों में रहने वाली महिलाएं खेती का काम नहीं करतीं या बहुत ही कम करती हैं। घर का काम खत्म करने के बाद वे सोच में पड़ जाती हैं कि खाली समय में क्या करें। ऐसे में महिलाएं घर के आसपास अपनी दुकान शुरू करें तो अच्छी–खासी कमाई हो सकती है। वे इन दुकानों में महिलाओं और बच्चों के उपयोग की सामग्री रख कर अपना व्यवसाय बढ़ा सकती हैं। आजकल बहुत सी स्त्रियाँ श्रृंगार का सामान तथा घरेलू सामान बेच कर आमदनी बढ़ा रही हैं। इस से समय कट जाता है और मन भी लगा रहता है।

◆◆●◆◆

आय वृद्धि

दिया आर्या

मैं जिला बागेश्वर, तहसील कपकोट के ग्राम मल्खा डुगर्चा में रहती हूँ। मैं राजकीय इण्टर कॉलेज रातिर केठी में कक्षा ग्यारह में पढ़ती हूँ। हमारे गाँव में 2017 में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा ग्राम शिक्षण केन्द्र शुरू किया गया। मैं कक्षा पाँच से नौ में पढ़ने तक केन्द्र में गयी। हमने केन्द्र में प्रार्थनाएं, भाव गीत, चेतना गीत, खेल और गणित, भाषा, पर्यावरण आदि विषयों पर विविध गतिविधियाँ सीखी। केन्द्र में विद्यालय से अलग गतिविधियाँ होती हैं। केन्द्र के शिक्षण में बच्चे रूचि लेते हैं। जो गतिविधियाँ केन्द्र में होती थीं मैं लगातार उन का पालन करती थी। जब सावित्री दीदी की परीक्षा थी तो उस वक्त मैंने दो महीने केन्द्र का संचालन किया। मुझे बच्चों के साथ रहना, उन्हें पढ़ाना और खेल कराना बहुत अच्छा लगता था।

पहले हमें केन्द्र के बारे में कुछ पता नहीं था। जब हमारे गाँव में केन्द्र नहीं था तो बच्चे यूँ ही इधर–उधर घूमते हुए वक्त बर्बाद कर देते थे। पढ़ाई भी विवेकपूर्ण ढंग से नहीं करते थे। जब केन्द्र शुरू हुआ तो सभी बच्चे विद्यालय से आने के बाद शाम को केन्द्र में आने लगे।

मैंने 2020 में सिलाई सीखी। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा ग्राम गोगिना में सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया। मैं कोविड–19 लॉक डाउन की छुट्टियों में रातिर गाँव से गोगिना गाँव सिलाई सीखने के लिये गयी। गोगिना केन्द्र में कुछ महीने सिलाई सीखी। विद्यालय खुलने के कारण मैं सिलाई ज्यादा नहीं सीख पायी। फिर भी दो माहों में मशीन की जानकारी के साथ–साथ तुरपन, बटन–काज, हुक, पेपर में समीज की कटिंग,

कपड़े में समीज को सिलना, बेबी सैट, अम्ब्रेला फ्रॉक, चुन्नट वाली फ्रॉक, धोती–सलवार, पेटीकोट दो कली, चार कली, पटियाला सूट–सलवार सिलना सीखा। उसके बाद अभिभावकों ने एक सिलाई मशीन खरीद दी। पहले मैंने अपने कपड़े बनाये। उसके बाद अपने परिवार के सदस्यों के लिये कपड़े सिले। तब से ग्रामवासी मेरे पास कपड़े सिलने के लिये देने लगे।

मैं कपड़े सिल कर महीने में लगभग तीन हजार रुपये तक कमाती हूँ। मैं अपने विद्यालय की फीस स्वयं देती हूँ। परिवार के खर्चों में सहायता करती हूँ। मैं रातिर गाँव में रहने वाले बच्चों के स्कूल के कपड़े भी बनाती हूँ। मुझे सिलाई करने में बहुत रूचि है। सिलाई के साथ–साथ पढ़ाई और घर के अन्य काम भी करती हूँ।

केन्द्र के माध्यम से हमारे अपने गाँव मल्खा डुगर्चा में दस अप्रैल 2023 को सिलाई व कम्प्यूटर केन्द्र शुरू हुआ। इसे सुनीता दीदी संचालित करती है। मैंने दस अप्रैल से पाँच जुलाई 2023 तक कम्प्यूटर सीखा। हमने तीन महीने में बहुत कुछ सीखा। पहले कम्प्यूटर के बारे में जानकारी प्राप्त की। उसके बाद कम्प्यूटर को ऑन, ऑफ करना सीखा। कम्प्यूटर में पेन्टिंग बनाना, फोल्डर बनाना, फाइल सेव करना, टाइपिंग, एम. एस. वर्ड, एक्सेल, पावर पाइण्ट आदि में काम करना सीखा। पहले पाँच दिनों तक कम्प्यूटर के विषय में प्रैक्टिकल जानकारी ली। उसे ऑन–ऑफ करना सीखा। पेन्टिंग का फोल्डर बनाया और फाइल सेव की। उस के बाद पन्द्रह दिन तक लगभग आधा घंटा पेन्टिंग, लगभग आधा घंटा टाइपिंग और दस मिनट तक एम. एस. वर्ड में काम किया। उसके बाद कम्प्यूटर के बारे में एम. एस. वर्ड में लिखा।

मैं सुबह साढ़े सात बजे विद्यालय जाती हूँ। लगभग एक बजे विद्यालय से वापस आती हूँ। एक से तीन बजे तक सिलाई करती हूँ। तीन बजे कम्प्यूटर कोर्स के लिये जाती हूँ। चार बजे वापस आती हूँ। पाँच से सात बजे तक पढ़ाई करती हूँ। उसके बाद घर का कार्य कर के रात को नौ से ग्यारह बजे तक लिखने का काम करती हूँ। सुबह साढ़े चार बजे से छः तक पढ़ाई करती हूँ। मुझे ये सब कार्य करने में आनन्द आता है। मैं हर कार्य को सीखने में रूचि लेती हूँ। ये सब कार्य करने के बावजूद हाई स्कूल में पचहत्तर प्रतिशत अंक आये थे। हम एक दुर्गम क्षेत्र के निवासी हैं। हमारे क्षेत्र में सभी लोग मेहनती व कर्मशील हैं।

◆◆●◆◆

संस्था द्वारा किये जा रहे प्रयास

रेखा रावत

हमारे गाँव चौण्डली के बुजुर्ग बताते हैं कि पहले जलापूर्ति के लिए जल–स्रोतों से पानी को गूल के माध्यम से गाँव के नजदीक किसी एक धारे तक पहुँचाया जाता था। जहाँ सभी ग्रामवासी पानी भरने व कपड़े धोने के लिये जाते थे। धीरे–धीरे समय बदला और पाइप लाइन की योजनाएं गाँवों में आयीं। इसी क्रम में जल–स्रोत से पाइप लाइन की सहायता से पानी को चौण्डली गाँव के मध्य में लाया गया। साथ ही चार स्टैंड–पोस्टों का निर्माण किया गया। सात–आठ से अधिक परिवार एक स्टैंड–पोस्ट से पानी भरने लगे। धीरे–धीरे स्टैंड–पोस्ट में पानी की मात्रा कम होने लगी। गाँव में पानी के कनेक्शन बढ़ते गये तो समस्या गंभीर हो गयी। गर्मी के मौसम में कई दिनों तक पानी आता ही नहीं था। लोग लगभग एक किलोमीटर दूर से पानी भर कर लाते थे। मवेशियों के लिए पानी एक किलामीटर दूर सेरा गधेरा से लाना होता था। सब्जी इत्यादि की सिंचाई के लिए पानी नहीं होता था। इस कारण सिर्फ बरसात के मौसम में सब्जी उगाया करते थे। एक दिन महिला संगठन की गोष्ठी में यह बात आयी कि पानी की बहुत समस्या है। इस समस्या का निदान संगठन के द्वारा संभव है या नहीं, इस विषय पर चर्चा हुई।

सन् 2017 में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा के तत्वाधान में शेप संस्था द्वारा राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन परियोजना का संचालन किया गया। महिला संगठन की माँग पर गाँव में पानी की समस्या को दृष्टिगत रखते हुए चौण्डली गाँव में एक पानी की टंकी का निर्माण किया गया। जल स्रोत से पाइप लाइन की सहायता से पानी को टंकी तक पहुँचाया। इसके बाद दो स्टैंड पोस्टों का निर्माण हुआ। एक पाइप लाइन टंकी से उस दूसरी पाइप लाइन तक मिलायी गयी जहाँ से पूरे गाँव के लिये पानी आता है। अब गाँव में गर्मी के मौसम में भी पानी की समस्या नहीं होती। पूरे गाँव को पानी की पूर्ति हो जाती है।

इसके साथ–साथ महिलाओं को सब्जी के बीज उपलब्ध कराये गये। महिलाओं द्वारा फूलगोभी, पत्तागोभी, मटर, राई, पालक आदि सब्जियों का उत्पादन किया गया। गोभी के बीजों को सभी महिलाओं ने एक ही खेत में उगाया। सभी ने मिलकर खुदाई की व खाद डालकर पौध उगाये। सभी ने मिलकर सब्जी का उत्पादन किया। उस समय सब्जी घर में ही उपलब्ध हो गयी और बाजार से नहीं खरीदनी पड़ी। इस तरह सब्जी में खर्च होने वाले पैसों की बचत हुई। इसको हम प्रत्यक्ष रूप से आय वृद्धि तो नहीं कहते किन्तु यदि इसी प्रकार अधिक मात्रा में सब्जियों का उत्पादन करें तो यह आय का साधन हो सकता है। राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन के तहत हमारे गाँव चौण्डली के साथ–साथ जाख, दियारकोट, कुकड़ई, पुडियानी, सुन्दरगाँव में भी महिलाओं को बीज उपलब्ध कराये गये। इन सभी गाँवों में महिला संगठनों ने सब्जियों का अच्छा उत्पादन किया।

संस्था द्वारा जाख गाँव में सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया। इस केन्द्र में हमारे गाँव से किशोरियों व महिलाओं ने सिलाई का प्रशिक्षण लिया। कुछ महिलाएं स्वयं तथा परिवार के कपड़े सिलकर आय अर्जित करने लगी। सिलाई की दुकान खोल कर आय वृद्धि की जा सकती है। कुछ महिलाएं एक माह में तीन से साढ़े तीन हजार रुपया तक कमा रही हैं। इस कौशल को बढ़ा कर आय का मुख्य साधन बना सकते हैं। इस के अतिरिक्त कपड़े सिलने के बाद जो कतरनें बच जाती है उसे फेंकना नहीं चाहिए। कतरनों का पुनः प्रयोग करके पायदान, तकिया, तोरण व घर की सजावट की अन्य चीजें बना सकते हैं।

पशु पालन भी आय वृद्धि का एक साधन है। गाय, भैंस का पालन करके दूध उत्पादन से डेयरी प्रोडक्ट जैसे घी, पनीर, छाछ, मक्खन, दही आदि बना कर बेचना भी रोजगार का जरिया हो सकता है। यदि यह काम अकेले करने के बजाय महिलाएं साथ में मिलकर संगठन के माध्यम से करें तो अच्छा होगा। यदि गाँव में डेयरी है तो दूध बेचकर धन अर्जित किया जा सकता है।

अचार बना कर आय कमाना भी एक साधन है। महिलाएं रसोई–कुशल तो होती ही हैं। वे स्थानीय उत्पादों से अचार बना कर बेच सकती हैं। क्षेत्र में आसानी से उपलब्ध फलों तथा सब्जियों जैसे–आम, नींबू, आंवला, गाजर, तिमल, म्याराल, मिर्च इत्यादि का अचार तैयार कर के बेचा जा सकता है। गाँव में तैयार किया गया अचार शुद्ध और पौष्टिक होगा। इसी तरह घर में पापड़ बना कर बेचे जा सकते हैं। पापड़ बनाने वाली मशीन खरीद कर उड़द दाल, साबूदाना, चावल, आलू मसाला पापड़, सूजी के पापड़, मक्के के पापड़, मूंग दाल, तिल पापड़, चना दाल, बेसन पापड़, आटा पापड़, केला पापड़, आम पापड़ आदि बनाये जा सकते हैं। इससे महिलाएं आय अर्जित करने की दिशा में आगे बढ़ सकती हैं।

गाँवों में अनेक प्रकार के फल–फूल होते है। महिलाएं जूस बनाकर आय अर्जित कर सकती हैं। जूस बनाने के लिए कुछ महिलाओं को एक साथ मिल कर काम करना होगा। कर्णप्रयाग क्षेत्र में माल्टा, बुरांश, आंवला, गुलाब, पुदीना, अदरक, एलोवेरा आदि के जूस तैयार किये जा सकते हैं। बुरांश, आंवला जंगलों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। उसमें पैसा खर्च नहीं होगा। माल्टा गाँव से ही खरीदना होगा। इसमें ग्रामवासियों को भी माल्टा बेचने के लिये स्थानीय बाजार मिल जायेगा। गाँव वाले ही जूस खरीद लेंगे। अगर गाँव में ही जूस बनेगा तो बाजार नही जाना पड़ेगा। प्रेरित होकर ग्रामवासी भी अधिक पेड़ लगायेंगे।

यदि गाँव में अदरक का उत्पादन किया जायेगा तो बाजार से नहीं खरीदना पड़ेगा। यह सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। साथ ही, अदरक को बाजार में आसानी से बेचा जा सकता है। खाली पेट अदरक का जूस पीने से पाचन तंत्र मजबूत होता है। अपच में भी राहत दिलाता है। यदि हम इन सभी जूसों का फायदा बताते हुए बेचेंगे तो अधिक मुनाफा होगा। पुदीना तो गाँवों में होता ही है। इसका जूस बनाना भी आसान है। गुलाब का भी जूस बनाया जा सकता है। यदि फायदा हुआ तो गुलाब की अधिक पौध, कलमें लगा कर उगायी जा सकती हैं। खेतों में ऐलोवेरा भी आसानी से उगाया जा सकता है। यह भी फायदेमंद है। यदि हम सब्जी का उत्पादन कर रहे हैं तो मशरूम

उगाना अच्छा है। यह बाजार में सबसे महंगी सब्जी है। मशरूम उगाने के लिये बीज खरीदना है और भूसा अपने घर पर ही तैयार कर के फसल तैयार की जा सकती है। यदि कुछ महिलाएं एक साथ मिलकर यह काम करें तो आमदनी बढ़ सकती है।

आय वृद्धि से बहुत से व्यक्तिगत बदलाव हो रहे हैं। पहला बदलाव तो यह है कि महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं। उन्हें छोटे–मोटे कामों के लिए दूसरों से धन नहीं मांगना पड़ता। वे अपने आप में सक्षम होती जाती हैं। महिलाओं के जीवन में अन्य बहुत से बदलाव आते है। अपने मन के मुताबिक कपड़े पहनना, बच्चों के लिए व अपने लिए निर्णय लेना आदि। यदि महिला आर्थिक रूप से सक्षम है तो परिवार में उसका महत्व भी बढ़ता है। यदि घर में कोई काम हो तो उस का निर्णय महत्वपूर्ण माना जाता है। परिवार की आर्थिक स्थिति सुधरती है।

आज के इस महंगे दौर में पति–पत्नी दोनों कमाने वाले हैं तो अच्छा है। इस से परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक बनी रहेगी। यदि महिला गाँव में रह रही है, कुछ काम करके आय अर्जित कर रही है तो इस से भी परिवार को अच्छी मदद मिलती है। उदाहरण के लिए शेप संस्था द्वारा सिलाई प्रशिक्षण किया जा रहा है। प्रशिक्षण में सीखने के बाद ही हमारे गाँव की कुछ महिलाएं और नवयुवतियाँ आत्मनिर्भर बनीं। वे कपड़े सिलकर पैसा कमा रही हैं। नवयुवतियाँ अपना खर्चा, कॉलेज की फीस भरना, कॉलेज आने जाने का खर्चा पूरा कर पा रही है तथा परिवार को भी कुछ मदद कर रही हैं। महिलाएं परिवार की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने की कोशिश कर रही हैं। इन सभी कामों से स्वरोजगार बढ़ रहा है। समाज में भी एक अच्छी पहचान बन रही है। समाज का देखने का नजरिया भी बदला है। यदि महिलाएं और नवयुवतियाँ आय अर्जित करें या अच्छा काम करें तो उन्हें समाज में भी महत्व मिलता है।

◆◆●◆◆

आय के साधन

माया बोरा

आजकल महिलाएं कई प्रकार के रोजगार अपना कर के समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। रोजगार का माध्यम चाहे सब्जी उद्योग हो, सिलाई–कढ़ाई–बुनाई हो अथवा डेयरी उद्योग, हर क्षेत्र में महिलाओं ने खुद को साबित किया है। वे आत्मनिर्भर बनी हैं। समाज में अपनी एक अलग छवि बनाने में सक्षम हुई हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में रह रही महिलाएं घरेलू कार्य करने के अलावा अन्य छोटे–छोटे कार्य करके अपनी आय बढ़ा सकती हैं। वे स्वयं आत्मनिर्भर होंगी। साथ ही अपने परिवार व समाज को सकारात्मक परिवेश प्रदान करने में योगदान दे सकती हैं। इस से समाज में उनकी एक सामाजिक एवं सकारात्मक छवि बनेगी।

बिन्ता क्षेत्र में लगभग सभी घरों में गायें या भैंसें है। महिलाएं दूध का कार्य कर सकती हैं। दूध की जरूरत हर जगह है। अगर इस कार्य को आय वृद्धि के लिए किया जाये तो काफी अच्छा है। दूध के साथ–साथ घी, छाछ आदि भी डेयरी या दुकानों में दे सकती हैं। इस से महिलाओं की अच्छी आमदनी हो सकती है।

अचार हर घर की जरूरत है। लगभग सभी घरों में इसकी पहुँच है। ज्यादातर लोग बाजार के बदले घर का बना हुआ अचार खाना पसंद करते है। अगर आय वृद्धि के लिए किया जाए तो यह एक बढ़िया काम है। यह काम महिलाओं के साथ मिल कर किया जा सकता है। बने हुए अचार को स्थानीय दुकानदारों को बेचने के लिए दे सकते हैं। इससे महिलाओं को आय का एक साधन प्राप्त होगा।

हर रसोईघर में मसाले एक खास स्थान रखते हैं। जहाँ ये खाने का स्वाद बढ़ाते हैं वहीं कुछ मसाले छोटी–मोटी बिमारियों में भी काम आते हैं। हल्दी, तुलसी, काली मिर्च आदि मसालों का उपयोग विभिन्न प्रकार के रोगों के इलाज के लिये किया जाता है। आजकल शुद्ध मसाले मिलना मुश्किल है लेकिन गाँवों में यह व्यवस्था हो सकती है।

आय वृद्धि से जहाँ महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं वहीं समाज में एक शक्ति के रूप में सामाजिक पहचान भी बना रही हैं। लोग सामाजिक कार्यों में उनकी राय ले रहे हैं। अपनी मेहनत के बल पर महिलाओं ने अपना एक अलग

मुकाम बनाया है। ऐसी महिलाएं समाज की मुख्य धारा में जुड़ कर कंधे से कंधा मिला कर सभी प्रकार के कार्यों में पूर्ण सहयोग दे रही हैं।

ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ महिलाओं ने अपनी छाप नहीं छोड़ी है। चाहे वो संस्था या उद्योग कार्यक्रम के हों या शिक्षा के कार्य हों, महिलाओं ने हर क्षेत्र में छाप छोड़ी है। महिलाएं आत्मनिर्भर बन कर हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है।

आय वृद्धि से जहाँ महिलाओं का स्वावलम्बन बढ़ा, वहीं आत्मबल में बढ़ोत्तरी हुई है। अब महिलाएं किसी भी कार्य को करने में खुद को सक्षम महसूस करती है। आय वृद्धि के कारण छोटी–छोटी जरूरतों के लिए उन्हें किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। वे स्वयं अपनी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हैं। इस कारण वे स्वयं को ऊर्जावान महसूस करती हैं।

महिलाओं की आय वृद्धि ने परिवारों के लिए संजीवनी का कार्य किया है। परिवार की जरूरतों के अतिरिक्त बचत में योगदान हो रहा है। परिवार की जरूरतों को पूरा करने में भी सहयोग हो रहा है। इससे ग्रामवासी बच्चों को अच्छी शिक्षा दे रहे हैं। वे बच्चों को अच्छे विद्यालयों में पढ़ा रहे हैं। लड़कियों की पढ़ाई में सहयोग कर रहे हैं। आय वृद्धि होने से परिवार में सभी को लाभ होता है। सभी लोग एक अच्छी जिंदगी जीना चाहते हैं। आय वृद्धि होने से परिजनों में आपसी मनमुटाव में कमी आती है। रोजमर्रा की जरूरतों के लिये दूसरे व्यक्ति से पैसे नहीं माँगने पड़ते। इससे झगड़ों और मनमुटाव में भी रोक लगती है। सार यही है कि आय वृद्धि तभी होगी जब लोग मेहनत करेंगे। आपस में सहयोग और सौहार्दपूर्ण वातावरण जरूरी है। कोई भी व्यवसाय अकेले नहीं चलाया जा सकता। लोगों की मदद की जरूरत हमेशा रहती है। गाँवों में बनाये गये महिला संगठन एक ऐसा मंच हैं जहाँ सभी महिलाएं मिल कर काम करती हैं। यदि वे आपस में मिल कर आय सृजन के कार्य करें तो निश्चित ही सफलता मिलेगी।

आय–वृद्धि के लिए प्रयास

सुनीता गहतोड़ी

पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों के तहत सन् 1994–95 से वर्तमान तक महिला संगठनों को सुदृढ़ करते हुए किशोरी शिक्षा बढ़ाने के लिये अनेक कार्य किये गये। इन कार्यों से महिलाओं और किशोरियों का आत्मविश्वास बढ़ा। साथ ही वे अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति सजग हो रही हैं। महिलाओं का संकोच कम हुआ है। अपनी बातों को कहने की क्षमता बढ़ी है।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा में गोष्ठियों एवं प्रशिक्षणों के माध्यम से उनका अच्छा विकास हुआ है। महिलाएं किसी न किसी रूप में अपने रोजगार के लिए आगे आ रही हैं। जैसे–संगठनों से जुड़ी महिलाएं अनेक प्रकार की सरकारी योजनाओं को क्रियान्वित कर रही हैं। इस के अलावा आँगनवाड़ी, वार्ड सदस्य, प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य तथा संगठनों में अध्यक्षाएं बनी हैं। वे उत्तराखण्ड महिला परिषद से जुड़कर एक बड़े संगठन का रूप लेती हैं और शासन–प्रशासन में अपनी बातों को रखने की क्षमता विकसित कर रही हैं। गोष्ठियों सम्मेलनों और विद्यालयों में कौशल विकास कार्यक्रम से जुड़ कर किशोरियाँ आत्मविश्वासी हो रही हैं। संस्था द्वारा विद्यालयों में किशोरी कार्यशालाओं का आयोजन भी किया गया। विद्यालयों में कई गाँवों की किशोरियाँ एक साथ मिल जाती और कार्यशालाओं में बढ़–चढ़ कर भाग लेती। इस से वे स्वयं निर्णय लेने की क्षमता बढ़ा पायी हैं। किशोरियाँ शादी के उपरान्त जहाँ भी जा रही हैं, इन कार्यक्रमों के प्रभाव से सामाजिक कार्यों, रोजगार के लिए आगे आ रही हैं। आज नवयुवतियाँ आत्मविश्वास के साथ समाज में कार्य कर रही हैं।

इस क्षेत्र में अनेक कारणों से महिला संगठन पूर्ण रूप से सक्रिय नहीं हो पाये। संस्था द्वारा बहुत प्रयास किये जाने पर जो संगठन सक्रिय हुए वे जंगल बनाने–बचाने के अतिरिक्त सामाजिक कार्यों में हाथ बंटाना, ग्राम विकास के कार्यों में सहयोग करना आदि कार्य कर रहे हैं।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सहयोग से पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी द्वारा किशोरियों एवं महिलाओं की जागरूकता एवं सशक्तिकरण के लिए अनेक बिन्दुओं पर चर्चा होती है।

• सूचना अधिकार अधिनियम 2005 • किशोरी कौशल • महिला स्वास्थ्य, पोषण एवं टी.बी. (डॉट्स) • पंचायतों में महिला अधिकार, जागरूकता एवं कार्यों को समझाना • क्षेत्रीय विकास के मुद्दे • जंगल व्यक्तिगत और सामूहिक • सुअरों, बन्दरों, लंगूरों का आतंक एवं खेती को जंगली जानवरों से बचाने के उपाय • शराब का प्रचलन कम करना • रोजगार गारन्टी योजना • व्यक्तिगत एवं ग्राम समुदाय की स्वच्छता • संगठनों को आगे बढ़ाने हेतु कार्य योजना बनाना • सरकार की पहुँच से दूर गरीब, निःसहाय लोगों की मदद करना जैसे–पेंशन, जमीन को नाम में करवाना आदि

विगत वर्षों में महिलाओं द्वारा आय वृद्धि के लिए अनेक कार्यक्रम किये गये हैं। उदाहरणतः ग्राम कमलेख में महिलाओं द्वारा सब्जी उत्पादन किया जाता है। इसके साथ ही पारगोशनी, जोश्यूड़ा, हौली, बुंगा कमलेख आदि गाँवों में महिलाएं सब्जी उत्पादन में आगे आ रही हैं। इन गाँवों में कुछ परिवारों द्वारा एन.एम.एच.एस कार्यक्रम के तहत पॉलीटनल बनाये गये। इसमें सब्जी उत्पादन के साथ–साथ सब्जियों के बीज एवं पौधों का उत्पादन किया गया। कुछ लोगों ने बागवानी में कीवी, प्लम, सेब आदि फलदार पेड़ लगाये। इससे उनकी आय बढ़ी है।

इसी कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए ग्राम जोश्यूड़ा, पिपलाटी, लधौन, बुंगा कमलेख, पोखरी, जनकाण्डे, हरोड़ी, त्यारसों, शिलिंग, कानीकोट, बरकाण्डे, सकदेना, निलौटी, रौलमेल, किम्वाड़ी, बड़ेत, जौलाड़ी, तोली पाटी, गरसाड़ी, पूनाकोट, मूलाकोट, भट्यूड़ा, बस्वाड़ी, बसान, डुंगराकोट, पटनगाँव, थुवामौनी, जखौला, बिसारी, चौड़ाकोट, मौनकांडा, गहतोड़ा, कूंण, चखड़िया, छत्रिद्यार, गूम आदि गाँवों की कम से कम पाँच सौ महिलाओं ने सिलाई एवं बुनाई में प्रशिक्षण प्राप्त कर के आय में वृद्धि करने का बीड़ा उठाया है। श्रीमती ममता नेगी लगभग तीन हजार, श्रीमती हेमा सौराड़ी दो हजार पाँच सौ, श्रीमती पूजा पचौली तीन हजार, श्रीमती मुन्नी देवी तीन हजार, श्रीमती पूजा तीन हजार, श्रीमती दीपा मेहरा तीन हजार पाँच सौ, श्रीमती प्रभा देवी तीन हजार, श्रीमती लक्ष्मी देवी चार हजार, कु0 सीमा आर्या एक हजार पाँच सौ, कु0 मेनका आर्या एक हजार, श्रीमती पूजा जोशी एक हजार पाँच सौ, विभा गहतोड़ी (सिलाई व

बुनाई) चार हजार, श्रीमती जानकी दो हजार पाँच सौ, हिमानी गहतोड़ी तीन हजार, कु0 पिंकी तीन हजार पाँच सौ, श्रीमती मुन्नी बोहरा चार हजार, श्रीमती जानकी देवी चार हजार, श्रीमती दीपा दो हजार, श्रीमती विद्या पाटनी तीन हजार, कु0 भारती चार हजार, श्रीमती अनीता फर्त्याल चार हजार रुपये प्रतिमाह तक

अर्जित कर रही हैं। इसके अलावा मुन्नी मौनी, दुर्गा मण्डल, दुर्गा आर्या आदि उद्यमी महिलाओं ने अपनी दुकानें खोली हैं। ये सभी महिलाएं अच्छी आय प्राप्त कर रही हैं। साथ ही इन्होंने आय वृद्धि कर के क्षेत्र की अन्य महिलाओं के लिये एक मिसाल कायम की है। इसके अलावा साठ प्रतिशत महिलाएं अपने परिवारों के लिये तथा पड़ोसियों एवं रिश्तेदारों के कपड़े सिल रही हैं। जो महिलाएं घर में कपड़े सिल रही हैं वे कपड़ों की सिलाई बचा कर उसका उपयोग अन्य पारिवारिक जरूरतों को पूरा करने में करती हैं।

उपरोक्त कार्यक्रम से महिलाओं तथा किशोरियों के सामाजिक विकास के साथ–साथ पारिवारिक और आर्थिक स्थिति में भी सुधार आया है। महिलाएं अपने बल पर कार्य करने के लिए सक्षम हो रही हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, रोजगार, शासन–प्रशासन में अच्छी पकड़ तथा अपने परिवार की दशा और दिशा सुधारने के लिये प्रयास किये गये हैं। क्षेत्र में पित्रसत्ता है तथापि काफी जागरूकता आयी है। आय–संवर्धन के कार्यों एवं जागरूकता कार्यक्रमों से किशोरियों एवं महिलाओं की सोच में अन्तर देखा गया है।

◆◆●◆◆

शिक्षा के प्रति लगन बढ़ी

बॉबी राम

हमारे गाँव का नाम मल्खा डुगर्चा है। यह गाँव हिमालय की वादियों में स्थित है। हमारा गाँव नामिक ग्लेशियर के पास बसा हुआ है। यह गाँव कृषि और पशु पालन पर आधारित है। मुख्य फसलें गेहूँ, मक्का, मडुआ, धान, जौं, गुरूँस, सोयाबीन, भट्ट, चौलाई एवं अन्य कई प्रकार की दालें हैं। यह एक सीमान्त गाँव है जो बागेश्वर जिले के कपकोट ब्लॉक में स्थित है।

हमारे गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र की शुरूआत सन् 2017 में हुई। हमने ग्राम शिक्षण केन्द्र में नयी–नयी बातें सीखी। कई प्रकार की अन्य जानकारियाँ प्राप्त हुईं। पहले हमें केन्द्र के बारे में कुछ भी पता नहीं था। जब से मल्खा डुगर्चा में केन्द्र शुरू हुआ बच्चों में शिक्षा के प्रति लगन बढ़ गयी। जो गतिविधियाँ स्कूल में नहीं कराई जाती थी वे केन्द्र में होने लगीं।

जैसे नयी प्रार्थनाएं, भाव गीत, चेतना गीत, विभिन्न प्रकार के खेल और शैक्षिक गतिविधियाँ आदि। इस कारण हम केन्द्र में जाने में बहुत रूचि रखते हैं। पहले केन्द्र को सावित्री दीदी संचालित करती थीं। वे हमें पढ़ाई के साथ–साथ खेल–कूद व आसपास के वातावरण के बारे में भी अध्ययन कराती थीं। पहले जब गाँव में केन्द्र नहीं था तो बच्चे स्कूल से आ कर सीधे खेलने, नहाने के लिए नदी–तालाबों में जाते थे। जब से केन्द्र खुला तब से सभी बच्चे स्कूल से आकर केन्द्र में जाने लगे।

क्षेत्र के सभी ग्राम शिक्षण केन्द्रों के बीच वर्ष में एक बार बाल–मेला का आयोजन किया जाता है। इसमें कई प्रकार के कार्यक्रम किये जाते हैं। हम रूचि से इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं। हम पहले लोगों से खुल कर बात नहीं

कर पाते थे। जब से केन्द्र में गये हिचक कम हो गयी क्योंकि वहाँ पर कभी चेतना गीत, भाव गीत तो कभी कहानी सुनाने के लिए आगे आना पड़ता था। इस कारण अब हम लोगों के सामने अपनी बातों को बेहिचक बोल लेते हैं। अब हम अपनी बातों को विद्यालय में अध्यापकों के सामने रख पाते हैं। जो भी नयी बात हम केन्द्र में सीखते हैं उसे अगले दिन स्कूल में अपने दोस्तों को बताते हैं जिससे वे भी प्रेरित हों। पहले हमारे गाँव में रास्तों की सफाई नहीं होती थी परन्तु अब अपनी व्यस्त दिनचर्या से थोड़ा वक्त निकाल कर सफाई करते हैं। इस से हमारा गाँव और भी सुन्दर लगने लगा है।

हमारे गाँव में दस अप्रैल 2023 को कम्प्यूटर केन्द्र व सिलाई केन्द्र शुरू हुआ। यह केन्द्र उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सहयोग से खुला है। पहले हमें कम्प्यूटर के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। सिर्फ कम्प्यूटर का नाम सुना था। जब से कम्प्यूटर केन्द्र में प्रवेश लिया तब से कम्प्यूटर के पुर्जों और सॉफ्टवेयर के नाम जाने। जैसे–सोनमा टाइपिंग, एम. एस. वर्ड, पेन्टिंग, वर्ड, एक्सेल, पावर पॉइंट आदि के माध्यम से कम्प्यूटर का उपयोग करना सीखा। पहले कम्प्यूटर को छूने में डरते थे कि कहीं खराब न हो जाये। अब समझ गये हैं कि डरने जैसा कुछ है नहीं। अब हम बेझिझक मशीन को ऑन कर लेते हैं, टाइपिंग करते हैं। काम पूरा होने पर मशीन को बंद भी कर लेते हैं। इस प्रकार झिझक कम हुई और आत्म सम्मान बढ़ा।

◆◆●◆◆

आय–वृद्धि के लिए प्रयास एवं लाभ

विनोद कुमार

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के साथ मिल कर हमारी संस्था पर्यावरण चेतना मंच मनीआगर और मैचून क्षेत्र के बारह गाँवों में शिक्षण केन्द्र, महिला एवं किशोरी संगठनों के साथ शैक्षिक व जागरूकतापरक काम करती है। संस्था द्वारा महिलाओं और किशोरियों की आय वृद्धि के लिए अनेक महत्वपूर्ण प्रयास किये गये हैं। महिलाओं और किशोरियों की आय वृद्धि के लिए मनीआगर में सिलाई, बुनाई, ब्यूटीशियन व कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र खुले हैं। इन केन्द्रों में लगभग पचास गाँवों की किशोरियाँ और महिलाएं प्रशिक्षण ले चुकी हैं। सिलाई, बुनाई, ब्यूटीशियन व कम्प्यूटर केन्द्रों के अतिरिक्त सब्जी उत्पादन हेतु पॉली हाउस निर्माण करके ग्रामवासी आय में वृद्धि कर रहे हैं। इन सभी कार्यक्रमों में महिलाओं की आय वृद्धि महत्वपूर्ण है।

सिलाई एक ऐसा कौशल है जिसको सीखने के बाद महिलाएं इसे व्यवसायिक रूप में लेकर अपनी आमदनी बढ़ा सकती हैं। संस्था का प्रयास है कि महिलाएं सिलाई सीखकर, अपनी दुकान खोलकर, आय सृजन करें। यह एक रूचिकर कार्यक्रम है। इसकी शुरूआत तब हुई जब सिलाई केन्द्र का विचार गिरचोला गाँव में महिला गोष्ठी के दौरान जीवन कौशल पर बातचीत के बीच में उठा। गोष्ठी के दौरान महिलाओं एवं किशोरियों ने गाँव में सिलाई केन्द्र खोलने की बात कही। बात तो अच्छी लगी पर केन्द्र खोलने के लिए संस्था के पास स्थान, मशीन आदि कोई संसाधन नहीं थे। आपस में चर्चा कर के इस बात पर सहमति बनी कि गाँव में पंचायत घर है। इसमें संस्था का केन्द्र भी चलता है। गाँव में लोगों के पास मशीनें हैं। सीखने वाले भी हैं।

मशीनें पंचायत घर में लाने की बात हुई और एक न्यूनतम फीस, सौ रुपया मासिक, तय किया गया। नवयुवतियाँ सिलाई सीखने लगी। कुछ समय बाद इसी प्रकार की व्यवस्था से मैचून गाँव में भी महिलाएं व किशोरियाँ सिलाई सीखने लगीं। गाँव में सिलाई सिखाने वाली प्रशिक्षिका न होने के कारण जालबगाड़ी (मनीआगर) से दो युवतियाँ आयीं। इन दोनों ही गाँवों में महिलाओं की गोष्ठी होती थी। गोष्ठी में महिलाओं और नवयुवतियों ने सिलाई के प्रति रूचि दिखाई। शिक्षिकाओं को जितना आता था उन्होंने सिखाया। किशोरियाँ नये–नये फैशन के कपड़े सिलना सीखना चाहती थीं। एक कुशल प्रशिक्षिका की जरूरत थी।

गाँव की गोष्ठियों में सिलाई केन्द्र खोलने के विषय में बातचीत होती रही। अन्ततः जून 2017 को पच्चीस–तीस गाँवों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए मनीआगर–जालबगाड़ी में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सहयोग से केन्द्र खुला। इस केन्द्र में सिलाई व बुनाई सिखाने के लिए प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का चुनाव हुआ। इस केन्द्र में छः वर्षों में लगभग पचास गाँवों की चार सौ पचास महिलाओं व नवयुवतियों ने सिलाई सीख ली है। इनमें अधिकतर महिलाएं गाँवों में ही कपड़े सिल कर आय वृद्धि का काम कर रही हैं। कुछ महिलाएं अपने व परिजनों के कपड़े सिल कर पैसे बचा रही हैं।

वर्तमान में इस केन्द्र में सिलाई सीखने के लिए दूर–दूर गाँवों से महिलाएं व नवयुवतियाँ बीस किलोमीटर दूर गाँवों से आना–जाना करती हैं। अनेक गाँवों में सड़कों की सुविधा नहीं है। मनीआगर से सुप्योला गाँव तक जंगल ही जंगल है। बातचीत करने पर महिलाएं कहती हैं कि सिलाई में रूचि है। वे सीखने के लिये आ–जा सकती हैं। एक महिला लगभग बाइस किलोमीटर दूर कुंजरतोड़ा तिलाड़ी से तीन किलोमीटर आगे के क्षेत्र से सिलाई सीखने आती है। वह बताती है कि बचपन से ही सिलाई सीखने का शौक था। वह कहती है कि उस के सपने के अनुरूप ही केन्द्र मिला है। वह बड़ी लगन के साथ सीखती है। बाद में व्यवसाय के रूप में अपना कर आजीविका चलाना चाहती है।

इसी तरह एक युवा जो रीढ़ की हड्डी में परेशानी के कारण मेहनत–मजदूरी नहीं कर पाता, केन्द्र में आया। उसे सिलाई का शौक था पर कहीं सीखने का मौका नहीं मिल रहा था। एक दिन संस्था कार्यकर्त्ताओं ने बात कर के उसकी परेशानी को समझा और कुछ काम जैसे सिलाई सीखने को कहा। वह सीखने के लिए सहमत हो गया। वह कहता है कि मेहनत–मजदूरी करना मुश्किल है। सिलाई सीखकर एक छोटी दुकान में बैठने का जरिया हो जाएगा। इस से वह अपनी आजीविका चला सकता है। ऐसे कई अन्य उदाहरण गाँवों में हैं।

संस्था का प्रयास है कि सिलाई सीख कर महिलाएं और नवयुवतियाँ आय वृद्धि करें। इसके कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। इसमें कुछ महिलाओं व नवयुवतियों ने दुकानें खोल रखी है। कोई अपने गाँव व परिवार के लिये कपड़े सिल कर पैसा बचा रहे हैं। जिन्होंने दुकान खोल रखी है वे तीन–चार हजार रुपया प्रति माह कमाती हैं। शादी विवाह के समय दस से पन्द्रह हजार रुपये के बीच आय होती है। महिलाएं अपने गाँव के अतिरिक्त आस–पास के

गाँवों के लिये कपड़े सिलती हैं। वे एक माह में लगभग ढ़ाई हजार से तीन हजार रुपया कमाती हैं। जो महिलाएं अपने व परिवार के लिये कपड़े सिलती हैं वे सिलाई के लिये दर्जी को दिये जाने वाले पैसे को बचा रही हैं।

बुनाई का कौशल भी आय वृद्धि में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सिलाई के साथ–साथ प्रशिक्षण केन्द्र से लगभग पच्चीस गाँवों की सौ से अधिक महिलाओं और किशोरियों ने बुनाई सीखी। महिलाएं दूर–दूर के गाँवों से आ कर बुनाई सीख कर आय बढ़ा रही हैं। सिलाई की अपेक्षा बुनाई अधिकतर जाड़ों के मौसम में चलती है। कुछ महिलाएं बताती हैं कि जाड़ों के मौसम में चालीस से पचास स्वेटर बुन लेती हैं। एक स्वेटर की कीमत लगभग आठ सौ रुपया होती है। लागत छोड़कर बीस से पच्चीस हजार रुपया प्रति वर्ष कमा लेती हैं।

वर्तमान में मनीआगर गाँव में एक ब्यूटीशियन प्रशिक्षण केन्द्र चलता है। इस केन्द्र का उद्देश्य भी प्रशिक्षण ले कर आय बढ़ाना है। एक महिला ने प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद अपनी दुकान खोल रखी है, उनकी अच्छी आय हो रही है। कुछ किशोरियाँ बताती हैं कि शादी–विवाह के अवसर काफी पैसा ब्यूटी पार्लर में जाता था अब खुद ही काम कर लेने से बचत हो रही है।

महिलाओं की आमदनी बढ़ाने के लिए सब्जी उत्पादन भी एक अच्छा माध्यम है। संस्था का प्रयास है कि महिलाएं सब्जी उत्पादन से अपनी आय बढ़ायें। इसके लिए सर्वप्रथम 2012–14 में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सहयोग से महिला संगठन लमुडियार ने गाँव में पॉली हाउस व पॉली टैंक बनाये। इस कार्य से उनके गाँव में पानी की समस्या हल हुई और सब्जी का अच्छा उत्पादन हुआ। महिलाओं ने सब्जी बेच कर आमदनी बढ़ाने का काम किया। इसी तर्ज पर बानठौक गाँव में गोष्ठी के दौरान जंगली जानवरों के आतंक की बात हुई। महिलाओं ने बताया कि सुअर, बंदर अब घरों के नजदीक आ रहे हैं, ग्रामवासी खेतों को सुरक्षित नहीं रख पा रहे। चर्चा के दौरान पॉली हाउस बनाने की बात हुई। वर्ष 2017–18 में बानठौक गाँव में चौदह पॉली हाउस बनाये गये। पॉली हाउस के कारण जंगली जानवरों से सब्जी बची, उत्पादन भी अच्छा हुआ। कुछ महिलाओं ने सब्जी बेच कर पैसा कमाया। महिलाओं की सब्जी उत्पादन में रूचि बढ़ी। महिलाओं की रूचि देखकर वर्ष 2021–22 में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सहयोग से चौदह पॉली हाउस बनाये गये। इस बार पॉली हाउस में लगने वाली लकड़ी, बांस व बनाने की जिम्मेदारी खुद महिलाओं ने ली। इस बार भी सब्जी का अच्छा उत्पादन हुआ। महिलाएं बताती हैं कि सब्जी का उत्पादन घर में हो

जाता है। बाजार से नहीं खरीदते हैं। इस प्रकार उनका पैसा बच जाता है। साथ ही, घर में ही उत्पादन होने से लोग ताजी, पोषक तत्वों से भरपूर सब्जियाँ खा रहे हैं। यह स्वास्थ्यवर्धन के लिये एक अच्छा तरीका है।

वर्तमान समय में नवयुवतियाँ घर के काम, खेती, पशुपालन की उपेक्षा नौकरी या कौशल विकास को अधिक महत्व देती हैं। पहले की अपेक्षा घरेलू खर्चे भी अधिक हैं। आय के लिए महिला व पुरूष दोनों काम करते हैं। आय वृद्धि से जहाँ वे स्वयं सन्तुष्ट होते हैं, वही समाज में एक अच्छा संदेश भी जाता है।

आय वृद्धि से महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ा है। जो धन उनकी कमाई का है, उन्हें मिलता है। यह उन्हें अच्छा लगता है और अधिक मेहनत करने की प्रेरण मिलती है। आय वृद्धि से महिलाओं को आगे बढ़ने का मौका मिलता है। जो लोग आर्थिक कारणों से आगे नहीं बढ़ पाते थे वे संस्था के साथ जुड़ कर बढ़े हैं। वे स्वेच्छा से खर्च कर सकते हैं। उन की निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है। कितना खर्च करना है, कितना बचाना है, इसका निर्णय महिलाएं स्वयं ही ले रही हैं। इससे सामाजिक विकास भी होता है।

महिलाओं की आय वृद्धि से पारिवारिक बदलाव आते हैं। जहाँ परिवार को एक अच्छा सहयोग मिलता है, वहीं परिजन उन्हें सम्मान देना सीखते हैं। इस तरह उन्हें भी एक कमाऊ व जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में देखा जाता है।

सिलाई, बुनाई, ब्यूटीशियन व सब्जी उत्पादन के अतिरिक्त महिलाओं के लिये आय वृद्धि के अन्य स्रोत हो सकते हैं। दुकान खोलकर आय वृद्धि हो सकती है। सिलाई के साथ अन्य कॉस्मेटिक्स एवं रेडीमेड वस्तुओं को बेचा जा सकता है। इसका एक उदाहरण मैचून क्षेत्र के नगरखान गाँव में देखने को मिलता है। एक नवयुवती व एक अन्य महिला ने मनीआगर केन्द्र में सिलाई सीखकर नगरखान गाँव में दुकानें खोली हैं। वे सिलाई करती हैं और साथ ही कॉस्मेटिक्स तथा रेडीमेड सामान भी बेचती हैं।

क्षेत्र में महिलाएं मसाला उद्योग में मसालें पैंकिग का काम भी कर रही है। कुछ महिलाएं व किशोरियाँ दुग्ध डेयरी का काम करके अपनी आय बढ़ा रही हैं।

◆◆●◆◆

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र बिन्ता

माया जोशी

बिन्ता क्षेत्र में नवंबर 2017 में सिलाई केन्द्र खुला। लगभग दो साल में एक सौ छः महिलाओं और नवयुवतियों ने सिलाई सीखी। ये सभी महिलाएं अपने घर पर ही सिलाई करती हैं। तीन नवयुवतियों ने शादी के बाद अपनी सिलाई की दुकानें खोली हैं। उनका कहना है कि वे पन्द्रह से बीस हजार रुपया प्रति माह कमा रही हैं। इन सभी ने अपनी–अपनी दुकान में दो–दो अन्य महिलाएं काम करने के लिए रखी हैं। अपना व्यवसाय शुरू करने के कारण तीनों नवयुवतियाँ काफी खुश हैं।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान की मदद से पुनः मार्च 2022 से सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र खुला। इस केन्द्र में नेहा कैड़ा ने एक साल तक सिलाई सिखायी। पैंतालिस स्त्रियों ने सिलाई सीखी। कुछ स्त्रियाँ अपने घरों में कपड़े सिल रही हैं। किशोरियों–नवयुवतियों का कहना है कि जब शादी हो जायेगी तब अपने ससुराल में जाकर दुकानें खोलेंगी। उनका मानना है कि अभी दुकान खोलेंगे तो फिर एक–दो साल बाद शादी होने पर बन्द करनी पड़ेगी।

वर्तमान समय में केन्द्र में पुरानी और अनुभवी शिक्षिका रेनू अधिकारी सिलाई सिखा रही है। सुरना गाँव में रहने वाली एक स्त्री ने पिछले साल सिलाई सीखी थी। अब उस ने बिन्ता बाजार में सिलाई की एक दुकान खोली है। वह अन्य दर्जियों से कुछ कम पैसे लेती है तथापि आठ से दस हजार रुपया प्रति माह कमा रही है। उसका कहना है कि जब हाथ में अच्छी सफाई आ जायेगी तब सिलाई के पूरे पैसे लेगी। केन्द्र में सभी स्त्रियाँ खुशी से सिलाई सीखती हैं।

बिन्ता क्षेत्र में सिंचाई वाली जमीन है। महिलाएं खेती के द्वारा आय संवर्धन का कार्य करती हैं। महिलाएं पशु पालन का कार्य भी करती हैं। दूध बेच

कर अपनी आय बढ़ाती हैं। इस घाटी में धान खूब होता है। हर एक परिवार साल में बीस से पच्चीस हजार रुपये तक धान बेचता है। गेहूं भी लोगों के खाने भर के लिए पूरा हो जाता है। गाँवों में मडुआ, भट्ट, उड़द, गहत, मादिरा आदि मोटा अनाज भी खूब होता है लेकिन बन्दरों, सुअरों और आवारा जानवरों से महिलाएं काफी परेशान हैं। ये सभी जानवर खेतों में फसलों को हानि पहुँचा रहे हैं।

सिलाई केन्द्र में सभी महिला संगठनों की नवयुवतियाँ व महिलाएं सीखने के लिये आयीं। सुरना गाँव से एक, मटेला से छः नवयुवतियाँ, बिन्ता से चार महिलाएं व चार नवयुवतियाँ, नागेर से एक महिला व एक युवती, भतौरा से अट्ठारह युवतियाँ व चार स्त्रियाँ, बोरखोला से दो नवयुवतियाँ आयीं और सिलाई सीखी। इसके अलावा जाख, अल्मियाँ गाँव, देवलधार, सिमल्टी, पारकोट, नौलाकोट आदि गाँवों से महिलाएं सिलाई सीखने आयीं। अब वे घर में अपने व आस–पड़ोस की स्त्रियों के कपड़े सिलती हैं। चूंकि बिन्ता क्षेत्र में खेती का कार्य अधिक है तो दुकान खोलना संभव नहीं हो पाता। महिलाएं खेती को बहुत महत्व देती हैं। खेती से उन्हें अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है और बेचने के लिये भी हो जाता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ आजीविका के रूप में खेती को बहुत महत्व दिया जाता है।

◆◆●◆◆

आय वृद्धि के लिये प्रशिक्षण

रचना नेगी

शेप संस्था बधाणी द्वारा एक फरवरी 2018 को जाख गाँव में सिलाई प्रशिक्षण शुरू किया गया। इसमें सात गाँवों (जाख, सुंदरगाँव, कोली, दियारकोट, कुकड़ई, चौण्डली और पुडियाणी) की महिलाओं एवं किशोरियों ने भाग लिया। सिलाई सिखाने वाले मास्टर जी दो किलोमीटर पैदल चलकर समय पर सिलाई सिखाने पहुँच जाते। उनका नाम देवेन्द्र सिंह बिष्ट जी है। किसी भी कौशल को सिखाने व सीखने के लिए लगन और मेहनत चाहिए। यह गुण सिलाई के मास्टर जी और सीखने वालों में पूरी तरह से थे।

सर्वप्रथम मास्टर जी ने सुई में धागा फिट करना सिखाया। मशीन की सुई और कपड़ों पर तुरपन के काम में आने वाली सुई के बारे में बताया। उसके बाद तुरपन व काज बनाना सीखा। इस काम को सीखने में एक से दो महीने लग गये। उसके बाद मास्टर जी ने बड़ी सहजता के साथ ब्लाउज के काज एवं हुक, बटन लगाना सिखाया। मशीनों को खोलना, जोड़ना, मशीनों के अंगों की जानकारी तथा तेल का उपयोग करना सीखा ताकि मशीन अच्छी तरह से काम कर सके। उसके बाद हमने मशीनों को चलाना सीखा। पहले हाथ और बाद में पैडल वाली मशीन को चलाना सीखा।

मास्टर जी ने पुराने अखबारों से कटिंग करना सिखाया। इस जानकारी को कॉपी पर लिखने को कहा ताकि जो सीखा वह अच्छी तरह से याद रह सके। प्रशिक्षार्थी अखबार में कटिंग करते थे और मास्टर जी उसे सुई व तागे से सिलने को कहते। वे हर चीज को बड़ी सरलता के साथ सिखाते हैं। इसी तरह हम ने छोटे बच्चों के फ्रॉक, टोपी व अन्य चीजें बनानी सीख लीं। पहले उन्होंने इन सब कपड़ों की कटिंग अखबार पर सिखायी। उसके बाद कपड़े पर कटिंग करना व सिलना सीखा। इसी क्रम में उन्होंने हमें सरल माध्यम से प्लाजो की कटिंग करना व सिलना सिखाया। इसकी लम्बाई, चौड़ाई की माप आदि अच्छी तरह से सिखाने के बाद सिलना सिखाया। कहा कि जब तक हम खुद पाँच प्लाजो न सिल लें तब तक वे हमें दूसरी चीजें नहीं सिखायेंगे। तत्पश्चात् उन्होंने सामान्य सलवार की नाप लेना बताया और कटिंग सिखायी। इसी के साथ–साथ सूट की कटिंग भी बतायी। जब तक सभी को अच्छी तरह नहीं आ जाता तब तक वह कटिंग ही करवाते हैं। इस तरह हमने ठीक से कटिंग सीखने के बाद कपड़े को सिलना सीखा। सलवार पर प्लेटें देना, सलवार की बेल्ट बनाना सीखा।

मास्टर जी ने पेटीकोट चार कली व छः कली की कटिंग और कलियों को जोड़ना सिखाया। उसके बाद ब्लाउज की कटिंग और सिलना, कैंची सलवार, धोती सलवार, फुल पटियाला सलवार की कटिंग और सिलाई का काम सीखा। उसके बाद छोटे कॉलर व बड़े कॉलर के कपड़े, जो स्कूल व कॉलेज में पहने जाते हैं, सरल माध्यम से बनाने सीखे। मास्टर जी ने पैंट पायजामा की कटिंग अखबार पर सिखायी। बताया कि पैंट पायजामे में जांघ, घुटने व पैर की मोरी की ठीक नाप होनी चाहिये। इसके अतिरिक्त पैंट पायजामे की कमर में इलास्टिक लगती है। साथ ही जेब को भी नाप के साथ सिला जाता है। उसके बाद कर्त्ती को सिलना व अलग–अलग तरीके के बाजू सिलना बताया। इसी तरीके से मास्टर जी ने नयी–नयी तरीके की फ्रॉक बनाना बताया। इसमें अनारकली, बेल्ट वाली फ्रॉक, कलियों को जोड़कर फ्रॉक बनाना सीखा। आज मैं स्वयं के तथा अपनी माँ और बहन के कपड़े सिलती हूँ। इसके अतिरिक्त आस–पड़ोस की महिलाओं के कपड़े सिल कर प्रति माह एक हजार से पन्द्रह सौ रुपये कमाती हूँ।

इसी तरह अम्बिका बिष्ट कॉलेज जाने के साथ–साथ ग्रामवासियों और अपनी कॉलेज की दोस्तों के कपड़े सिल कर दो से ढ़ाई हजार रुपया महीना तक कमाती है। इसी क्रम में प्रीति रावत नये–नये तरीके के फ्रॉक व बाजुओं पर सिलाई तथा सूट, सलवार, ब्लाउज, पेटिकोट इत्यादि सिल कर महीने का पन्द्रह सौ से दो हजार रुपये तक कमाती है। श्रीमती ममता चौहान घर का पूरा काम करने के साथ–साथ सिलाई कर के ब्लाउज, पेटिकोट, सूट, सलवार सिलती हैं। वे एक हजार से पन्द्रह सौ रुपया प्रति माह तक कमा लेती हैं।

हमें अपने कौशल पर पूरा विश्वास है कि अगर नौकरी नहीं भी मिली तो सिलाई का कार्य कर के रोजगार कर सकते हैं। अपने हुनर को आगे बढ़ा सकते हैं। इसी के साथ राष्ट्रीय हिमालयी अध्यन मिशन परियोजना के तहत संस्था द्वारा महिला संगठनों की सदस्याओं को सब्जी के बीज उपलब्ध कराये गये। जैसे–फूलगोभी, पत्तागोभी, मटर, राई, भिंडी, मूली इत्यादि के बीज वितरित किये गये। महिलाओं ने सब्जी उत्पादन का कार्य अच्छी तरह से किया और मौसम के अनुसार सब्जियाँ घर पर ही उपलब्ध हुईं। इसके फलस्वरूप बाजार से सब्जी नहीं खरीदी। इससे पैसों की बचत हुई और अच्छी ताजी सब्जियाँ घर पर ही मिल गयीं। आसपास के अन्य ग्रामवासियों को भी इसका बहुत अच्छा फायदा मिला। अब आजीविका के काम को और आगे बढ़ाने के लिए बुनाई मशीन की जरूरत महसूस हो रही है। हम सिलाई के साथ–साथ बुनाई करके एक अच्छा कौशल सीख सकते हैं। इस तरह रोजगार के काम को अच्छी तरह से आगे बढ़ा सकते हैं।

◆◆●◆◆

घर में बहुत काम है

प्रियंका टाकुली

मेरा जन्म गोगिना गाँव में हुआ। हम चार भाई–बहन हैं। पिताजी बकरी चराते हैं। माताजी गृहणी हैं। मैं गोगिना हिनारी गाँव में रहती हूँ। मैंने इसी वर्ष बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की है। मैं बी. ए. करना चाहती हूँ। बी. ए. के साथ–साथ नौकरी भी करना चाहती थी लेकिन घर की परिस्थिति ठीक न होने के कारण एक साल तक कुछ नहीं कर सकी। जब 2022 में जाड़ों के मौसम में ग्राम शिक्षण केन्द्र के माध्यम से अल्मोड़ा जाने का मौका मिला तो पता लगा कि दुनिया कितनी रोचक है। गाँवों में अलग तरह का जीवन है पर अल्मोड़ा में लोग ग्रामवासियों की तरह नहीं रहते। उनका जीवन ग्रामीण परिवेश से भिन्न है।

मुझे सिलाई सीखते एक महीना हो गया है। अब मुझे लगता है कि सिलाई करना भी एक कला है। मुझे सिलाई में बहुत रूचि थी। मेरे घर में बहुत काम होता है। दो भैंस, दो बैल, एक गाय और एक उस का बछड़ा है। मैं सुबह पाँच बजे उठती हूँ। गोबर निकालती हूँ। साफ–सफाई करने के बाद नाश्ता बना कर घास काटने जाती हूँ। मैं सिलाई सीखने दस बजे जाती हूँ। गाय–भैंस ऊपर जंगल में रहते हैं। तीन घंटा आने जाने में लग जाता है। सुबह वहाँ पर सब काम करने के बाद सिलाई सीखने के लिये घर आती हूँ।

जब मैं पहले दिन सिलाई केन्द्र में गयी तो लगा कि यह काम नहीं सीख पाऊँगी लेकिन धीरे–धीरे सीख गयी। मैंने सब से पहले सिलाई मशीन के बारे में जानकारी ली। हमें सिलाई का काम पुष्पा चाची सिखाती हैं। हमें अच्छा समझ में आता है। उन्होंने सब से पहले तुरपन करना सिखाया। उस के बाद बटन–काज, हुक, सीधी सिलाई, समीज, बाबा सूट, पेटिकोट, सादा सलवार, पटियाला सलवार, सादा फ्रॉक, सूट आदि सिलना सिखाया। मैं समीज, पैन्ट, प्लाजो, फ्रॉक, सलवार आदि बना लेती हूँ। अब अपनी खुद की मेहनत से पैसे कमाने लगी हूँ। मेरा एक सपना पूरा हो गया है कि मैं खुद की मेहनत से आगे बढ़ रही हूँ। सिलाई करना एक सुन्दर कला है। साथ ही यह किसी भी व्यक्ति की आजीविका हो सकती है।

◆◆●◆◆

मेरी औली की यात्रा

रचना नेगी

मैं चमोली जिले में ब्लॉक कर्णप्रयाग के एक सुन्दर से गाँव जाख में रहती हूँ। औली मेरे गाँव से लगभग सौ किलोमीटर दूर होगा। कोई स्थान जितना सुनने में अच्छा लगता है, उससे ज्यादा खूबसूरत देखने में लगता है।

सत्रह मार्च को सुबह चार बजे मैं और कुछ दोस्त औली के लिए चले। जब घर से निकले तो बिल्कुल अंधेरा था। आकाश में तारों के साथ चन्द्रमा बहुत ही खूबसूरत लग रहा था। मन में औली देखने के लिये यात्रा करने की खुशी और उतावलापन था। जब हम सोनला पहुँचे तब जा कर थोड़ा–थोड़ा सा उजाला होने का संकेत मिला। ड्राइवर चाचा जी ने गाड़ी में तेल भरवाया। उसके बाद आगे बढ़ते गये। चमोली पहुँचने पर धूप की कुछ किरणें दिखायी देने लगी।

हमें नाश्ता करने के लिए मेरी एक दोस्त की मौसी जी के घर जाना था। वे मायापुर से आगे एक गाँव में रहती हैं। उनके घर पहुँचने के लिये लगभग एक किलोमीटर नीचे पैदल उतरना था। मौसी जी की एक गाय, एक बछड़ा और साथ में एक बैल था। मैं घर में एक बैल देखकर हँसने लगी। मौसी जी से पूछा कि एक बैल ही क्यों रखा है। मौसी जी ने बताया कि एक अन्य बैल गाँव में कोई अन्य परिवार पालेगा। इस तरह ज्यादा घास नहीं काटनी पड़ेगी और खेतों को जोतने का काम भी हो जायेगा। ये बात तो मेरे लिए नयी हो गयी। मौसी जी ने हमारे लिए रोटी, आलू की सब्जी, घी और चाय बनाकर रखी थी। सभी ने नाश्ता किया। मौसी जी के घर के सामने इतनी बड़ी–बड़ी चट्टानों को देखकर डर लग रहा था। मौसी जी ने बताया कि वे घास काटने के लिए उन चट्टानों में जाती हैं।

नाश्ता करने के बाद हम मौसी जी के घर से आगे निकले। उसके बाद सफर में आगे बढ़ते हुए बड़ी–बड़ी चट्टानों से भरी जगहों को पार कर हम एक खूबसूरत सी जगह जोशीमठ पहुँचे। वहाँ पर स्थित नृसिंह मन्दिर बहुत ही सुन्दर है। पुजारी जी ने बताया कि नृसिंह मन्दिर को नृसिंह बदरी भी कहा जाता है। ऐसा इसलिए कि जब श्री बद्रीनाथ जी के कपाट छः महीने के लिए बन्द किये जाते हैं तो श्री बद्री विशाल की अर्चना–पूजा यहीं होती है। बद्रीनाथ के साथ–साथ नृसिंह देवता के दर्शन करने चाहिए। तभी श्री बद्री विशाल की यात्रा पूरी मानी जाती है।

उसके बाद गढ़वाल राइफल, जो कि हमारी मुख्य सेना है, उसकी एक युनिट का स्थान देखा। वह स्थान बहुत ही साफ एवं सुन्दर था। हमारी सेना के जवान अपनी ड्यूटी कर रहे थे। थोड़ा आगे सुनिल गाँव में जा कर हमें भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस की एक टुकड़ी दिखायी दी। वह स्थान भी बहुत ही सुन्दर और साफ था। वहाँ पर भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस के जवान ड्यूटी पर तैनात थे। वहाँ भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस की महिलाएं भी ड्यूटी दे रही थीं। उन्हें देखकर मन में एक अलग सी खुशी का अनुभव हुआ। मेरा सपना भी यही है।

उसके बाद सफर में हम उस स्थान पर पहुँचे जहाँ घूमने के लिए आये थे। गाड़ी से उतरने के बाद हम लगभग सौ मीटर ऊपर चले। वहाँ पर एक व्यक्ति मिले। उन्होंने कहा कि हम उन्हें गाइड के लिए हायर कर लें। हम सभी ने एक स्वर में जवाब दिया कि हम एक–दूसरे के गाइड हैं। हमें गाइड की जरूरत नहीं है। उस गाइड भैया ने कहा कि बस एक हजार रुपये में काम करूंगा। हम सभी ने मना कर दिया।

मार्च के महीने में बर्फ नीचे तो पूरी तरह से पिघल गयी थी। इस कारण लगभग दो किलोमीटर ऊपर जाना था। बर्फ देखने के लिए सब ने मन बना लिया और सोचा कि ऊपर तो जाना ही है। वहाँ पर एयर लिफ्ट की टिकटें बिक रही थीं। यह सुविधा बस एक किलोमीटर ऊपर तक थी। एक व्यक्ति का टिकट पाँच सौ रुपये का था। फिर उन्होंने बताया कि ट्रॉली में ऊपर जाना होगा। वह तो बिल्कुल ही खुला था। मुझे देख कर ही डर लग गया। मन में आया कि अगर गिर गये तो हाथ–पैर टूट जायेंगे। इस कारण मैंने मना कर दिया और कहा कि मैं तो नहीं जाऊँगी, आप सब जाओ। मुझे छोड़ कर साथी भी कहाँ जाते? उन्होंने भी मना कर दिया। इसी को कहते हैं दोस्ती! मन में बड़ी खुशी हुई और हम पैदल–पैदल आगे बढ़ते गये।

कुछ समय चलने के बाद हम औली के तालाब के पास जा पहुँचे। वहाँ पर एक सुन्दर लकड़ियों से बना हुआ होटल था। वह भवन बाहर से बहुत सुन्दर दिखायी दे रहा था। उसके चारों ओर बहुत ही खूबसूरत व अलग–अलग प्रकार के फूलों के गमले लगे हुए थे। फूलों की छटा से होटल और भी ज्यादा खूबसूरत लग रहा था।

थोड़ा आगे चलते ही हमें एक घोड़े वाला मिल गया। उसने हमसे घोड़े की सवारी करने को कहा। हम में से कोई पहले तो घोड़े पर बैठा नहीं था। सभी ने हाँ बोल दिया। मुझे तो बैठने में डर ही लग रहा था। सब

जल्दी–जल्दी घोड़ों में बैठ गये। डरते हुए मैं भी बैठ गयी। कुछ दूर ही गये थे कि मेरा घोड़ा सब से अलग–अलग सा जाने लगा। वह मुझे उल्टे–उल्टे रास्ते ले जा रहा था। मैंने मन ही मन सोचा कि अगर आज इस घोड़े से ठीक से उतर गयी तो जीवन में ऐसी सवारी फिर कभी नहीं करूँगी। अन्ततः हम उस जगह पर पहुँच गये जहाँ से बर्फ शुरू हो रही थी। घोड़े से उतरने के बाद चैन की साँस ली। घोड़े वाले को दो सौ रुपये दिये। हमें वहाँ आये हुए एक व्यक्ति, उनकी पत्नी और बच्ची मिली। वे लोग उड़ीसा से आये हुए थे। उन्होंने हमें बिस्किट दिये। हमने उनसे काफी बातें की। उन्होंने बताया कि उन्हें यहाँ बहुत ही सुन्दर लगा।

हमने पूरे दो घंटे तक बर्फ का मजा लिया। चारों तरफ के पर्वतों को देखा। ठंडी–ठंडी हवा और वहाँ के खूबसूरत नजारे ने मन मोह लिया। वहाँ पर भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस के जवान स्कीइंग कर रहे थे, बिल्कुल आराम से। हम उन्हें देख रहे थे। स्कीइंग के बाद जवान नीचे आये तो हमने उनसे पूछा कि इसके लिए ट्रेनिंग करनी पड़ती होगी। जवानों ने बताया कि हाँ करनी तो होती है लेकिन आप लोगों को जितना मुश्किल लग रहा है उतना है नहीं। अभ्यास से स्कीइंग करना आ जाता है। बस संतुलन बनाना पड़ता है। इन सब बातों के बाद हम नीचे की ओर उतरने लगे। कुछ ही नीचे उतरे थे कि एक मन्दिर दिखायी दिया। हम सब ने सोचा कि ऊपर चढ़ते समय तो मन्दिर नहीं देखा था। अभी कैसे दिखायी दे गया? पास ही खड़े आस–पास के इलाके में रहने वाले एक व्यक्ति ने बताया कि उस समय घोड़े वाला दूसरे रास्ते से ऊपर गया था। उन्होंने बताया कि मन्दिर वन–देवता को समर्पित है। उसका नाम वन–देवता मन्दिर ही है। दर्शन करने के बाद हम नीचे की ओर उतरते गये।

औली में भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस का एक जवान अपनी ड्यूटी पर तैनात था। हाथ में राइफल थी। हम नीचे उतर कर सड़क में पहुँच गये। तीन बजे वहाँ से घर के लिए चले। मायापुर में खाना खाया। चमोली से थोड़ा आगे बढ़ने पर अंधेरा होने लगा था। सभी दोस्तों के घरों से फोन आ रहे थे। परिजन कह रहे थे कि आराम से आना। जल्दबाजी मत करना। साढ़े आठ बजे हम सभी घर पहुँच गये। इस सफर के अनुभव बहुत ही मजेदार थे। ऊँची–ऊँची सुन्दर पहाड़ियों के बीच बसा हुआ जोशीमठ और औली–यह बहुत ही खूबसूरत नजारा था। कभी समय मिले तो आप भी औली के सुन्दर दृश्य को देखने जरूर जायें।

◆◆●◆◆

रोजगार की आवश्यकता

ईशा बेरी

मैं ग्राम किमतोला में ग्राम शिक्षण केन्द्र चलाती हूँ। मुझे ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़े हुए तीन साल हो गये हैं। शिक्षण केन्द्र से जुड़ने के बाद मुझमें कई बदलाव आये। मेरे गाँव में लड़कियाँ कुछ रोजगार करना चाहती हैं, जिससे उनके दैनिक जीवन में कुछ बदलाव आये। कई लड़कियाँ तो बाहर नौकरी करने भी जा रही हैं। इससे उनके व्यक्तिगत जीवन में अच्छा असर हो रहा है। नौकरी करने से कॉलेज या अन्य पढ़ाई का खर्चा खुद उठाती हैं। उन्हें घर में अभिभावकों से पैसे मांगने की जरूरत नहीं पड़ती।

मेरे गाँव की महिलाओं व किशोरियों ने कई बार बैठकों में यही बात रखी है कि संस्था द्वारा हमारे लिए भी कुछ रोजगार का काम हो। हम अपने विकास के लिए कुछ कर सकें। साथ ही किशोरी संगठन व महिला संगठन की बैठकों में यही बात रखी जाती है कि संस्था द्वारा सिलाई प्रशिक्षण व कम्प्यूटर केन्द्र खोला जाये।

मेरे गाँव में शिक्षण केन्द्र खुलने के बाद महिलाओं में बहुत बदलाव आया है। मैं बैठक में कुछ भी तय करती हूँ तो उसे पूर्ण रूप से सभी लोग मिलजुल कर करते हैं। गाँव में महिलाओं की मुख्य आय का स्रोत खेतीबाड़ी का काम है।

◆◆●◆◆

लोग खेती को इच्छुक नहीं

उर्मिला रावत

हमारे गाँव का नाम बमियाला है। यह सुन्दर गाँव गोपेश्वर से चौबीस किमी की दूरी पर स्थित है। गाँव में महिलाओं की आय वृद्धि के लिये अनेक साधन हैं। इन कामों से महिलाओं को उचित दाम मिल सकता है परंतु अब लोग खेती के कार्य को करने के लिए इच्छुक नहीं है।

हमारे गाँव में महिलाएं रात–दिन मेहनत करके आलू का उत्पादन करती हैं लेकिन उत्पाद का उचित दाम नहीं मिल पाता। गाँव से गोपेश्वर ले जाने में काफी खर्च लगता है। अगर संगठन बनाकर आलू बेचें तो उचित दाम मिल सकता है। हमारे गाँव में आलू खूब होता है। महिलाएं संगठन में साथ मिलकर आलू के चिप्स बनाकर दुकानों में बेच सकती हैं। इससे उनकी आय में वृद्धि हो सकती है।

हमारे गाँव में चौलाई भी अत्यधिक मात्रा में उगाई जाती है। खेती में मेहनत करने के बाद भी उसका उचित दाम नहीं मिल पाता। गाँवों से व्यापारी पचास रुपये किलो में चौलाई खरीद लेते हैं। बाजार में उसे अस्सी रुपये किलो से अधिक दामों में बेचा जाता है। महिलाएं संगठन के माध्यम से दुकान लगा कर बेचें तो अधिक दाम मिल सकता है।

बमियाला गाँव में राजमा अत्यधिक मात्रा में होती है। जंगली जानवरों के द्वारा राजमा को बहुत नुकसान हो रहा है। अधिक मेहनत के बावजूद राजमा का उचित दाम नहीं मिल पा रहा। इस कारण महिलाएं इस की खेती करने को इच्छुक नहीं हैं।

हमारे गाँव में लोगों की आमदनी दूध बेचने पर निर्भर है। महिलाएं मेहनत करके घास–चारे का प्रबंध करती हैं। गाय, भैंसों का भरण–पोषण करती हैं। गाँव से दूध बीस से तीस रुपया लीटर जाता है। गोपेश्वर जाकर वह लगभग साठ रुपया लीटर में बिकता है। महिलाओं को दूध का उचित दाम नहीं मिल पाता। लोगों के पलायन का यही कारण है। लोग मेहनत करते हैं पर उसका उचित दाम नहीं मिल पाता और किसान गरीब ही रहते हैं।

अगर गाँव में कोई महिला सिलाई–बुनाई का काम करती है तो वह अपने ही गाँव या बाजार में दुकान खोल कर रोजगार बढ़ा सकती है। साथ में अन्य महिलाओं को काम सिखा कर भी रोजगार चला सकती है। दूरस्थ क्षेत्र होने के कारण महिलाएं सिलाई–बुनाई नहीं सीख पाती हैं, ना ही रोज गोपेश्वर

सीखने के लिए जा सकती हैं। यह तो महिलाओं की समस्याएं हैं। सम्भावनाएं सोचें तो हम सामाजिक बदलाव के लिए अनेक काम कर सकती हैं। जैसे सभी महिलाएं संगठन बनाकर अलग–अलग ग्रुपों में अनेक प्रकार के कामों को कर सकती हैं। उदाहरण के लिये महिलाएं घर में मिर्च, धनिया व हल्दी उगा कर ओखल में कूट कर पैकेट बनायें। बाजार में बेच कर अपनी आमदनी को बढ़ावा दे सकती हैं।

आजकल का जमाना कुछ अलग सा हो गया है। पहले दफ्तरों में जाकर स्वयं सभी कार्य करना पड़ता था। अब सब काम ऑनलाइन हो गया है। जैसे रोजगार गारण्टी योजना के अन्तर्गत पहले एक पेज में हाजरी लगाई जाती थी

लेकिन अब फोटो खींचकर हाजरी लगाना भी एक काम हो गया। यदि कोई महिला ऑनलाइन काम ठीक प्रकार से कर सकती है तो उसे इस फील्ड में काम करना चाहिये।

घर में लगाने के लिए पर्दे एक जरूरी वस्तु हैं। महिलाएं सिलाई तो करती ही हैं। कपड़ों के अलावा पर्दे बना कर गाँवों और बाजार में बेच सकती हैं। इससे उनकी आय में वृद्धि हो सकती है।

गाँव में नींबू होते हैं लेकिन हम उन का उपयोग नहीं कर पाते। नींबू का अचार बना कर उसे बाजार में बेचना आय वृद्धि का एक साधन हो सकता है। हमारे गाँव में बुरांश अत्यधिक मात्रा में होता है। बुरांश का जूस निकाल कर बाजार में बेचना भी आय वृद्धि का माध्यम है।

महिलाओं की आय वृद्धि की सम्भावनाएं तो अधिक हैं लेकिन वे यह सोचकर कुछ काम नहीं कर पाती कि लोग क्या कहेंगे। उनके मन में डर होता है। संगठन में मिल कर सभी काम करें तो महिलाएं आय वृद्धि कर सकती हैं।

लगन व निष्ठा से सीखें

खष्टी रौतेला

मैं ग्राम गोगिना, जिला बागेश्वर, की निवासी हूँ। मैं उत्तराखण्ड ओपन युनिवर्सिटी से स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रही हूँ। मुझे पढ़ना–लिखना, खेलना, घूमना, कविताएं और कहानियाँ रचना बहुत पसंद है। इसके साथ ही कताई–बुनाई में भी रूचि है। मेरे संयुक्त परिवार में तेरह सदस्य हैं। कोई भी सरकारी लाभ नहीं उठाता है। हमारे पास गाय–भैंस–बकरियाँ हैं। ये ही वे संसाधन हैं जिस से हमारी रोजी–रोटी का प्रबन्ध होता है।

वर्ष 2021 में मैंने बारहवीं कक्षा की परीक्षा अव्वल अंकों से उत्तीर्ण की। आगे पढ़ना चाहती थी पर व्यवस्था नहीं हो पायी। अभिभावकों पर भाई–बहनों की जिम्मेदारी तथा घर में अन्य सदस्यों का उत्तरदायित्व भी है। घर की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए मैंने परिजनों की बात मान ली और ओपन विश्वविद्यालय से पढ़ाई करने के लिए राजी हो गयी। अब मैं पढ़ाई के साथ–साथ घर के कामों में भी हाथ बँटाती हूँ।

गाँव में बरसात के मौसम में धान, मंडुआ, झांर, चौलाई और मक्के की फसलें होती है। साथ में राजमा, सोयाबीन, उड़द आदि दालें होती हैं। सर्दियों के मौसम में जौं, गेहूँ, सरसौं, प्याज, आलू, लहसुन की खेती करते हैं। मेरे घर में अनेक प्रकार के फलों के पेड़ हैं।

मुझे स्वयं की पढ़ाई के साथ–साथ दूसरों को पढ़ाना अच्छा लगता है। लक्ष्य है कि भविष्य में अध्यापिका बनूँ और बच्चों को पढ़ाऊँ। उन्हें एक अच्छे नागरिक के रूप में तैयार करूँ। मैं स्वयं की पढ़ाई के साथ–साथ अपने ही गाँव

के राजकीय प्राथमिक विद्यालय गोगिना में शिक्षा–कर्मी के रूप में कार्य करती हूँ। मुझे स्कूल में पढ़ाना अच्छा लगता है। पढ़ाई और बच्चों के प्रति रूचि होने से मैं अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाती हूँ।

बच्चों को पढ़ाते–पढ़ाते न जाने कब डेढ़ साल बीत गये, पता ही नहीं चला। अब जब किसी भी दिन अवकाश होता है तो मेरा मन घर में बिल्कुल नहीं लगता। इस कारण मैंने ट्यूशन पढ़ाना शुरू किया है। साथ ही केन्द्र में कम्प्यूटर सीखने लगी। मुझे पहले से ही कम्प्यूटर सीखने में रूचि थी। मैं ट्यूशन की छुट्टी के बाद कम्प्यूटर सीखने जाती हूँ। पहले दिन कम्प्यूटर को खोलना, बंद करना, माउस चलाना, उसके बाद फोल्डर बनाना, डिलिट करना, रिनेम करना, सेव करना ये सब बताया गया। मुझे कम्प्यूटर सीता दीदी सिखाती है। उनका सिखाने का तरीका मुझे अच्छा लगता है।

जब मैं पहली बार टाइपिंग करना सीख रही थी तो हाथ कॉप रहे थे। मुझे ये सब काम करना बहुत कठिन लग रहा था। मैं पन्द्रह मिनट में दस–बारह शब्द ही लिख पायी पर हार नहीं मानी। कोशिश करती रही। अब हिन्दी व इंग्लिश टाइपिंग अच्छी तरह से कर लेती हूँ। मैं केवल दो महीने ही सीख पायी क्योंकि कम्प्यूटर दूसरे गाँव में ले जाने का आदेश आ गया। इस कारण कम्प्यूटर में आगे नहीं सीख पायी। मैंने कभी भी कम्प्यूटर प्रमाण पत्र लेने के लिए नहीं सीखा। मुझे कम्प्यूटर सीखने में रूचि थी पर शायद किस्मत भी साथ नहीं दे रही है। फिर भी हमेशा यही कोशिश करूँगी कि यदि भविष्य में अपने शौक और पढ़ाई को पूरा करने का मौका मिले तो लगन व निष्ठा से सीखूँगी।

◆◆●◆◆

रोजगार

कंचन डसीला

आज के समय में पैसे कौन नहीं कमा रहा पर गाँवों में बहुत से लोग बेरोजगार भी हैं। कुछ लोग तो अपना रोजगार छोटे–मोटे कामों से कर लेते हैं। जैसे मशीन चलाना, बुनाई करना आदि। जो लोग बेरोजगार हैं उनके लिए ऐसा क्या किया जाए जिससे वे रोजगार पा सकें? पैसों की जरूरत तो सभी को है। सभी लोगों को रोजगार मिलना चाहिए। हमारी संस्था से भी सभी के लिए कोई न कोई रोजगार होना चाहिए ताकि वे अपनी आजीविका चला सकें।

गाँवों में तो लोग अपना गुजारा घरेलू कामों से कर लेते हैं, जैसे खेती करना। आजकल खेती करके भी लोगों को फायदा नहीं हो रहा है। जंगली जानवरों का इतना ज्यादा आतंक है कि वे अनाज को पूरा पकने से पहले ही नष्ट कर देते हैं। इस से लोगों को बड़ा दुख होता है। शहरों में तो लोगों को कुछ भी रोजगार मिल जाता है पर गाँव में ऐसा नहीं होता। इस कारण गाँवों में लोग कभी–कभी ऐसी हालत में पहुँच जाते हैं कि माँ–पिता बच्चों की फीस देने में भी असमर्थ हो जाते हैं।

महिलाओं और नवयुवतियों को एक साथ लाना जरूरी है ताकि उन्हें भी रोजगार मिले। महिलाओं और युवतियों के लिए नये रोजगार आने चाहिये। हमारे गाँव में महिलाएं बेरोजगार हैं। वे हम से कहती रहती हैं कि उनके लिए भी कोई रोजगार का साधन होता तो कुछ आय–सृजन कर पातीं। क्या उनके लिए कोई रोजगार हो सकता है?

◆◆●◆◆

कम्प्यूटर केन्द्र काण्डई

अंजली बर्त्वाल

मैं ग्राम काण्डई, जिला चमोली, में कम्प्यूटर केन्द्र की शिक्षिका हूँ। हमारे गाँव में एक अप्रैल 2023 को नव ज्योति महिला कल्याण संस्थान गोपेश्वर द्वारा कम्प्यूटर केन्द्र खोला गया। इस का संचालन अल्मोड़ा में स्थित उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा होता है। हमारे गाँव दोगड़ी–काण्डई में महिलाओं में जागरूकता होने के कारण और उनके अथक प्रयासों से वे गाँव में कम्प्यूटर केन्द्र खोलने में सफल रहीं।

काण्डई गाँव में जहाँ पर केन्द्र खोला गया है वहाँ पहले कोई साधन उपलब्ध नहीं थे। महिलाओं ने केन्द्र की मरम्मत और बिजली की व्यवस्था करने के लिए स्वयं पूंजी जमा की। यह कार्य महिलाओं द्वारा एकजुट हो कर किया गया। उन्होंने उस जगह की साफ–सफाई की। तत्पश्चात् गाँव में नियमित रूप से केन्द्र खोला जाने लगा। केन्द्र में नौ बच्चों का पंजीकरण किया गया। बच्चों के तीन ग्रुप बनाये गये हैं। जिसमें तीन बच्चे तीन से चार बजे तक आते हैं। तीन बच्चे चार से पाँच बजे तक और तीन बच्चे पाँच से छः बजे तक आते हैं। सोमवार को केन्द्र बन्द रहता है। सभी बच्चे नियमित रूप से केन्द्र में आते हैं। रविवार के दिन केन्द्र और उसके आसपास साफ–सफाई की जाती है। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा केन्द्र में सभी व्यवस्थाएं उपलब्ध की गयी हैं। केन्द्र में इन्वर्टर की व्यवस्था है। बिजली चले जाने के बावजूद इन्वर्टर कम्प्यूटरों को चार्ज करता है। इससे बच्चों को सीखने में व्यवधान नहीं होता और समय का सदुपयोग होता है।

मैं तो दिल से उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा और नव ज्योति महिला कल्याण संस्थान गोपेश्वर तथा ग्रामीण महिलाओं का धन्यवाद करती हूँ। मुझे केन्द्र में शिक्षिका के रूप में चयनित किया है। इससे स्वयं का विकास हो रहा है। साथ ही मैं अपने गाँव के बच्चों के विकास और उनकी शिक्षा को आगे बढ़ाने में योगदान दे रही हूँ। यह मेरे जीवन में एक गौरवशाली क्षण है क्योंकि शिक्षा देने के साथ–साथ में स्वयं का विकास होते हुए महसूस करती हूँ।

◆◆●◆◆

परिश्रम के हिसाब से दाम कम मिलता है

पायल बिष्ट

ग्रामीण महिलाओं द्वारा गाँव में रहकर रोजगार बढ़ाने और आय में वृद्धि के लिये कोई साधन बनाने हेतु बहुत से कार्य किये जाते हैं किन्तु उन्हें उत्पाद का पूरा दाम नहीं मिल जाता। महिलाओं द्वारा काम पूरी मेहनत से किया जाता है पर जब इसे आय वृद्धि के रूप में देखा जाये तो परिश्रम के हिसाब से दाम बहुत ही कम मिलता है। महिलाओं की मेहनत और उत्पाद की बिक्री के बीच की कड़ी बनने वाले व्यक्ति ज्यादा मुनाफा कमा लेते हैं।

गोपेश्वर के आस–पास बसे गाँवों में अधिकतर महिलाओं की आय का मुख्य स्रोत दुग्ध व्यवसाय है। हमारे गाँवों में महिलाओं द्वारा सबसे अधिक दुग्ध व्यवसाय ही किया जाता है। डेयरी ग्रामीण महिलाओं से तीस रुपया लीटर के दाम में दूध खरीदती है। बाजार में दूध पचपन रुपये लीटर में मिलता है। उसी दूध की दही व छाछ बनाकर महंगे दामों में बेचा जाता है। इस से उन का बहुत फायदा होता है। महिलाओं को उस का आधा प्रतिशत पैसा भी नहीं मिल पाता। अगर महिलाएं संगठन के माध्यम से डेयरी खोल कर स्वयं उस दूध को बाजार में जा कर बेचें या ऐसी कोई व्यवस्था बने तो उन्हें अधिक फायदा होगा। अगर महिलाएं उस दूध का घी बना कर बेचें तो भी ज्यादा फायदा होगा। इस से उन की आय में वृद्धि हो सकती है।

गाँव में अधिकतर महिलाएं सिलाई व बुनाई करती हैं। वे अपने परिवार या आस–पास के लोगों के लिये ही काम कर पाती हैं। अगर महिलाओं द्वारा दुकान खोल कर या नजदीकी किसी बाजार में सम्पर्क कर के हाथ से बुनी हुई चीजों को बेचा जाये तो उन्हें ज्यादा फायदा होगा। जिस महिला को सिलाई व बुनाई पूर्ण रूप से आती है वह गाँव में अन्य लोगों को सिखा कर, दुकान खोल कर, या प्रशिक्षण दे कर आय वृद्धि कर सकती है।

कोटेश्वर और आस–पास के गाँवों में मुख्य रूप से आलू व प्याज का उत्पादन अधिक होता है। ठेकेदार कम दाम में खरीद कर बाजार में अधिक दामों में आलू–प्याज बेचते हैं। इससे महिलाओं को हानि होती है। वे उतना पैसा नहीं कमा पाती जितना उन्होंने सब्जी को उगाने में खर्च किया और मेहनत की। अगर महिलाएं खुद दुकानदारों से बात करें या खुद दुकान खोल कर सब्जी बेचें तो उनकी आय में वृद्धि हो सकती है।

कोटेश्वर क्षेत्र में मडुआ का उत्पादन अधिक होता है। अधिक पैदावार होने के कारण महिलाएं उसका मूल्य नहीं समझ पातीं। गाँव में जो लोग मडुआ खरीदने आते हैं उसे बहुत ही कम दामों में बेच देती हैं। अगर महिलाओं को इसकी जानकारी हो तो मडुआ अधिक दामों में बेचकर आय वृद्धि कर सकती हैं।

गाँव में ऐसी बहुत सी चीजें होती हैं जिनका अचार बना सकते हैं। जैसे आम, नींबू का अचार तथा सब्जियों में तिमल, लिंगुणा, लहसुन का अचार तैयार हो सकता है। ये सब चीजें गाँवों में आसानी से उपलब्ध हैं। अगर महिलाओं को अचार बनाने का प्रशिक्षण दिया जाए तो वे दुकान खोल कर, अचार बेच कर आय में वृद्धि कर सकती हैं।

गोपेश्वर क्षेत्र में संतरे का उत्पादन अधिक होता है। अधिक मात्रा में होने के कारण ग्रामवासी उसकी उपयोगिता समझ नहीं पाते तथा कम दामों में बेच देते हैं। अगर संतरों की बजाय जूस बनाकर बेचा जाये तो उससे अधिक फायदा होगा। बुरांश का जूस बनाया जाये तो भी आय वृद्धि हो सकती है।

कीवी के पेड़ लगा कर भी आय वृद्धि कर सकते हैं। विभिन्न सरकारी योजनाओं के तहत कीवी के पेड़ मिल रहे हैं। इन पेड़ों को बन्दरों व सुअरों के कारण नुकसान भी नहीं होता है।

मसाले का उत्पादन कर के भी आय वृद्धि हो सकती है। हल्दी, मिर्च, धनिया, लहसुन, अदरक के उत्पादन को बढ़ावा दिया जाये। इसे पीसकर बेचा जाये तो आय वृद्धि हो सकती है। इन फसलों को बन्दरों के द्वारा नुकसान भी नहीं पहुँचाया जाता। तेजपत्ता का मसाला तथा हर्बल पाउडर बना कर बेचने से भी आय वृद्धि हो सकती है।

महिलाओं की आय वृद्धि के लिए बहुत से रोजगार गाँव में ही उपलब्ध है। महिलाओं द्वारा ये सभी कार्य संगठन के माध्यम से एकजुट होकर किये जायें तो आय में बढ़ोत्तरी होगी।

◆◆●◆◆

खेती के साथ सिलाई से आय बढ़ायी

शान्ति रावत

बिन्ता–सुरना क्षेत्र की महिलाएं जल, जंगल, जमीन से जुड़ी हैं। महिलाएं मूल रूप से खेती से जुड़ी हुई हैं। वे घर का बहुत सा खर्चा खेती से चलाती हैं। खेतों से धान, भट्ट, गहत, अदरक, हल्दी, गडेरी, मिर्च आदि बेच कर अपनी आजीविका बढ़ाती हैं। खेतों से घास ला कर पशु पालन का काम करती हैं। गाँव सुरना में दुग्ध–उत्पादन किया जाता है। गाँव की लगभग सभी महिलाओं ने गायें और भैंसें पाल रखी हैं। दूध के अलावा घी बेच कर आय वृद्धि करती हैं। बिन्ता क्षेत्र में महिलाओं को खेती से ज्यादा लगाव है। वे लहलहाते हुए खेतों को देख कर खुश रहती हैं। बुजुर्ग महिलाएं अगर खेतों को बंजर देखती हैं तो अपनी पुरानी दिनचर्या बताती हैं और आज की नवयुवतियों से अपने काम की तुलना करती हैं। वे कहती हैं कि अपने जमाने में वे घर का खर्चा खेती से ही चलाती थी। धान, मडुवा, मिर्च आदि जो भी होता उसे आस–पास के इलाके में बेच कर बच्चे बड़े किये। आज तो बन्दर, सुअरों ने सारी फसल नष्ट कर दी है।

बिन्ता क्षेत्र में महिलाएं व नवयुवतियाँ सिलाई सीख कर आय वृद्धि कर रही हैं। बिन्ता क्षेत्र की महिलाओं ने सिलाई सीख कर दुकानें खोल लीं और वे अच्छा पैसा कमा रही हैं। क्षेत्र में चार किशोरियों और दो महिलाओं ने अपनी सिलाई की दुकान खोल रखी है। वे घर के काम के साथ–साथ सिलाई से तीन–चार हजार रुपये प्रति माह कमा रही हैं। सुरना गाँव में भी दो महिलाओं ने जूस बनाने का प्रशिक्षण लिया। वे जूस बना कर बाजार में बेचती हैं और स्थानीय मेलों में स्टॉल लगाती हैं। बिन्ता क्षेत्र के भतौरा गाँव में श्रीमती कमला कैड़ा जी ने पौधों की नर्सरी बना रखी है। वे बहुत सी महिलाओं को रोजगार देती हैं। जैसे बाँज के बीज इकट्ठा करना और फिर पैक करना, क्यारी बनाना, पौधे उगाना इत्यादि।

क्षेत्र की महिलाएं संगठन के माध्यम से सरकारी योजनाओं का लाभ उठा रही हैं। वे संगठन के माध्यम से झाड़ी काटना, रास्तों की सफाई आदि कामों को करती हैं। पहाड़ों के घाटी क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाओं की आय वृद्धि जल, जंगल जमीन से हो सकती है। गाय पालकर दूध, दही, घी से पैसा कमाना, गाय का गोबर खेतों में डालना और अच्छी फसल का उत्पादन करना, जैविक

खेती से शुद्ध अनाज उगाना, जंगल से लकड़ी ला कर बेचना इत्यादि ऐसे अनेक कार्य हैं जो बिन्ता–घाटी क्षेत्र में महिलाएं निरंतर कर रही हैं।

लगभग पन्द्रह साल पहले इस क्षेत्र में महिलाओं को एकजुट करना मुश्किल हो जाता था। जब संस्था के प्रतिनिधि महिला संगठनों की बातें कहते तो महिलाएं सुना–अनसुना कर देतीं। वे अपने काम तक ही सीमित रहती थीं। उसके बाद क्षेत्र में ग्राम शिक्षण केन्द्र खोले गये। केन्द्र खोलने से गाँवों में संगठन बने। पुराने संगठन पुनः सक्रिय हुए। संगठन बनने के बाद जब इस क्षेत्र की महिलाएं उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा में गोष्ठियों में प्रतिभाग करने के लिये गयीं तो वहाँ अन्य महिलाओं की बातें सुन कर बहुत उत्साह हुआ। शीघ्र ही बदलाव भी देखने को मिला। उसके बाद महिलाओं ने गाँव में रास्तों और सड़क की सफाई की। काला बांसा उखाड़ा ताकि जंगली सुअर झाड़ियों में न छिप सके। संगठन के माध्यम से महिलाएं एक दूसरे की मदद करती हैं। बच्चों के चहुँमुखी विकास के लिये केन्द्र की व्यवस्था भी महिला संगठन के सहयोग से ही हुई।

गाँवों में हर माह महिला संगठनों की बैठक होती है। इन बैठकों में गाँव की समस्याओं के साथ–साथ व्यक्तिगत बातें भी होती हैं। महिलाएं समस्याओं को सुलझाने के लिये विचार–विमर्श करती हैं और फिर सभी एक–दूसरे की मदद करती हैं। गाँव में अनेक समस्याओं को महिलाओं ने आपस में चर्चा कर के स्वयं ही सुलझा लिया है।

◆◆●◆◆

मेहनत के अनुरूप लाभ मिले

रेखा बिष्ट

आज के समय में महिलाएं लगभग सभी क्षेत्रों में पुरूषों से कंधे से कंधा मिला कर चल रही हैं। तथापि कुछ क्षेत्रों में पर्याप्त शिक्षा व संसाधनों की कमी के कारण ग्रामीण महिलाओं को अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने का मौका नहीं मिल पाता है। देखा जाये तो महिलाओं में प्रतिभा की कमी नहीं है लेकिन अपनी घरेलू जिम्मेदारियों के कारण वे प्रतिभा को छुपा देती हैं।

आधुनिक युग में महिलाएं घर से ही अपना रोजगार शुरू कर सकती हैं। महिलाएं झिझक व अन्य कारणों से अपना काम शुरू नहीं कर पातीं। इसमें सबसे बड़ी समस्या है विपणन में असफलता का डर, उधारी आदि वसूलने की समस्या तथा दौड़–भाग करने में असमर्थता।

गोपेश्वर–मंडल क्षेत्र में अधिकतर महिलाएं दुग्ध व्यवसाय कर रही हैं। कई महिलाओं की आजीविका का साधन दुग्ध व्यवसाय पर ही निर्भर है। वे जितनी मेहनत दुग्ध उत्पादन में करती है, उसका आधा मूल्य भी नहीं मिल पाता। वे दूध बाहरी लोगों के पास या डेयरी में बेच रही हैं। मूल्य का निर्धारण डेयरी ही कर रही है। इससे महिलाओं को सही मूल्य नहीं मिल पा रहा। बाहरी लोग गाँवों से दूध जिस मूल्य पर ले जा रहे हैं, वही बाजार में जाकर दो गुनी कीमत पर बेचा जाता है। इससे महिलाओं में निराशा फैल जाती है। इतनी मेहनत के बाद भी महिलाएं आय वृद्धि कर पाने में असमर्थ है। उन्हें जानकारी नहीं है कि वे स्वयं दूध बाजार में बेच सकती हैं। बाजार में जो भाव है उसी भाव पर दूध बेच कर आय वृद्धि कर सकती हैं। यदि आय वृद्धि होगी तो स्त्रियाँ घर का खर्च ठीक से चला पायेंगी। साथ ही वे जो मेहनत करती हैं उस के अनुरूप दाम मिलेगा।

कुछ समय पहले महिलाएं खेती–बाड़ी करती थीं। खेतों में मेहनत भी अधिक करती थीं। इससे परिवार का भरण–पोषण अच्छी तरह से हो जाता था। जिन परिवारों के पास रोजगार का कोई अन्य साधन नहीं था वे पूरी तरह खेती बाड़ी पर निर्भर थे। आज के समय में महिलाएं खेती कर रही हैं, मेहनत भी कर रही हैं पर जलवायु परिवर्तन व जंगली जानवरों के खेतों में आने के कारण कुछ प्राप्त नहीं हो पा रहा है। जिससे पूरी मेहनत बर्बाद हो जाती है। इस कारण महिलाओं के पास दुग्ध–व्यवसाय ही एक साधन बच जाता है। समस्या सिर्फ

यह है कि हम उसका मूल्य निर्धारण कैसे करें? दुग्ध व्यवसाय को आय संवर्धन का साधन कैसे बनायें जिससे यह काम ग्रामवासियों को लाभ दे सके।

इस समस्या का समाधान करने के लिए सबसे पहले महिलाओं को एकजुट होकर एक दूसरे की राय लेनी चाहिए। चर्चा हो कि दुग्ध व्यवसाय से आय वृद्धि कैसे करें? महिला संगठनों व ग्राम संगठनों की बैठक करनी चाहिए। इस बैठक में दुग्ध व्यवसाय व उससे हो रहे फायदे और नुकसान पर चर्चा करनी चाहिए। बैठक में हर कोई अपनी राय बताये। इसमें समस्या का समाधान भी होगा।

अगर महिला संगठन दुग्ध व्यवसाय स्वयं ही करते तो आय वृद्धि हो सकती है। आजकल गाँवों में पढ़ी–लिखी महिलाएं रहती हैं। किसी इच्छुक महिला को यह जिम्मेदारी दी जाये कि वह बाजार में दूध का मूल्य पूछकर, किसी होटल या दुकानदार से दूध बेचने की बात करे, अपना व्यवसाय शुरू करे। इस तरह उस महिला को स्वयं तथा गाँव की अन्य महिलाओं को लाभ मिलेगा। जो दूध हम डेयरी में आधी कीमत में बेच रहे हैं उसका पूरा लाभ मिल सकेगा।

अगर महिला संगठन की सदस्याएं बाजार में दूध बेचने में असमर्थ हैं तो गाँव के किसी बेरोजगार व्यक्ति को यह जिम्मेदारी दी जाये। जो दूध का मूल्य निर्धारित किया जायेगा उसमें से इस व्यक्ति को मासिक धनराशि दी जा सकती है। इसका निर्णय सामुहिक बैठक में लिया जाना चाहिए। यह व्यवस्था ऐसी बने कि न उस व्यक्ति को और न ही महिलाओं को घाटा हो। इसमें दोनों के बीच अच्छा तालमेल बना रहेगा। जो महिलाएं गाय, भैस पालने में मेहनत कर रही हैं, उन्हें भी दूध बेचने से मुनाफा होगा।

अगर किसी कारणवश दूध बच जाता है तो उसका पनीर या घी बना सकते है। आज के समय में पनीर गाँव में ही बेचा जा सकता है। इस में दूध बेचने वाले व्यक्ति का सहयोग रहेगा और उसे भी अच्छी आय मिल सकती है। इस प्रकार महिलाएं दुग्ध व्यवसाय करके आय वृद्धि कर सकती हैं। जितनी मेहनत वे कर रही हैं उतना लाभ भी प्राप्त होना चाहिये।

◆◆●◆◆

ग्राम शिक्षण केन्द्र फडियाली

मनीषा महरा

मैं ग्राम फडियाली, जिला पिथौरागढ़, में ग्राम शिक्षण केन्द्र का संचालन करती हूँ। मुझे केन्द्र चलाते हुए चार साल हो गये हैं। मुझे केन्द्र चलाना अच्छा लगता है। केन्द्र में छब्बीस बच्चे आते हैं। इसमें अठारह लड़कियाँ और आठ लड़के हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र गाँव के मन्दिर परिसर में एक कमरे में चलता है। कमरे की व्यवस्था अच्छी है। खेलने के लिए मैदान भी है।

केन्द्र से जुड़ कर बहुत बदलाव आया। गाँव में सब लोग जानते हैं कि मैं ग्राम शिक्षण केन्द्र की शिक्षिका हूँ। केन्द्र में बच्चों को पढ़ाती हूँ। गाँव की अन्य लड़कियों से अलग मेरी पहचान है। मुझे अपने केन्द्र के काम को लेकर जिज्ञासा रहती है। नई–नई चीजें देखने व उनके बारे में जानकारी लेने के लिए उत्सुकता होती है।

संस्था द्वारा केन्द्र खुलने के बाद हमारे गाँव में बहुत से परिवर्तन हुए हैं। महिलाएं गाँव की सफाई करने के लिये रास्तों की झाड़ियाँ काटती हैं। खुद भी साफ–सफाई से रहती हैं। बच्चों को साफ–सफाई के साथ केन्द्र में भेजती हैं। वे बच्चों की पढ़ाई में भी ध्यान दे रही हैं।

हमारे गाँव में महिलाओं की आय का मुख्य स्रोत खेती है। खेतों में मेहनत करके महिलाएं अनाज बेचती हैं। भट्ट, गहत, मसूर, मडुआ, मादिरा, धान आदि बेच कर महिलाएं आमदनी प्राप्त करती हैं। गाँव में लगभग सभी लोग जानवर पालते हैं। गाय, भैंस का दूध भी बेचते हैं। बकरी, बैल, भैंस, गाय, बछड़ा आदि जानवरों को बेच कर भी आय प्राप्त करते हैं।

बहुत सी महिलाएं घास काट कर लूटा बेचती हैं। हमारे गाँव में आम के बहुत सारे पेड़ हैं। आम भी अधिक होते हैं। महिलाएं आम का अचार बनाती है और बेचती हैं। आम भी बेचती हैं। महिलाएं अच्छी आमदनी प्राप्त करती हैं। गाँव में कुछ लोग मछली पालन भी कर रहे हैं। सब्जी का उत्पादन भी हो रहा है। इससे उनकी आजिविका चल रही है। ऐसा भी नहीं है कि ग्रामीण महिलाएं सिर्फ गाँव में काम करके ही पैसे कमा सकती है। वे शहर में जा कर जॉब कर सकती हैं। बहुत सी महिलाओं के काम करने के लिये अनेक साधन शहरों में उपलब्ध हैं। आजकल लगभग सभी महिलाएं पढ़ी–लिखी हैं। गाँवों में कोई आशा कार्यकर्ता है तो कोई आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ता बनी हैं।

◆◆●◆◆

उचित दाम नहीं मिलते

पूनम रावत

ग्रामीण महिलाएं अधिक मेहनत करती हैं लेकिन उचित दाम नहीं मिल पाते। पहले की अपेक्षा देखा जाए तो परिवर्तन भी काफी हो रहा है। पहले तो लोगों को पता ही नहीं होता था कि जो हम खेतों में उत्पादन करते हैं उसे बेच भी सकते हैं। आय वृद्धि के लिये बदलाव इस कारण भी हो रहा है कि लोग स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से रोजगार करना सीख रहे हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में लोग सब्जी उत्पादन कर के किसी व्यक्ति या दुकानदार के माध्यम से बाजार में बेचने के लिए दे देते हैं। जैसे–आलू, बैगन, कद्दू, लौकी, तोरई, भिंडी, गोभी, प्याज इत्यादि। इस कारण महिलाओं को उचित दाम नहीं मिल पाते हैं। व्यापारी ग्रामीणों से बीस रुपया किलो के दाम में आलू खरीदते हैं तथा बाजार में तीस–चालीस रुपया किलो में बेचते हैं। इसी प्रकार अन्य सब्जियों के भी उचित दाम नहीं मिल पाते। इस कारण से सब्जियों को बेच कर आय वृद्धि करने में समस्याएं होती हैं।

दूध का व्यवसाय गाँव की लगभग सभी महिलाओं की आय का स्रोत है। दुग्ध व्यवसाय महिलाओं द्वारा ही किया जाता है। दुग्ध बेचने के लिए भी कई तरह के माध्यमों का सहारा लिया जाता है। जैसे–दूध डेयरी और प्राइवेट व्यापारी गाँवों से दूध ले लेते हैं। डेयरी वाले तो सरकारी होते हैं। वे मशीन में फैट के हिसाब से पर्ची देते हैं तथा बोनस भी देते हैं। प्राइवेट व्यापारी तीस रुपया प्रति लीटर या उस से कम दाम में लोगों से खरीद कर बाजार में महंगे दामों में बेचते है। महिलाओं को कह देते हैं कि दूध की गुणवत्ता सही नहीं थी। इस प्रकार की समस्याएं होती रहती हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वाधिक मात्रा में मडुवे का उत्पादन होता है। महिलाओं या ग्रामीणों को पता ही नहीं है कि इसके अधिक दाम मिलते हैं। ग्रामवासी इसे

यूँ ही बर्बाद कर देते हैं। कभी कोई बाहर का व्यक्ति मडुआ खरीदने आता है तो बहुत कम दामों में बेच देते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में संतरे तथा नारंगी का उत्पादन सर्वाधिक होता है। यदि किसी महिला को पता है, क्योंकि उनका बाजार में आना जाना होता है या बच्चे पढ़ाई करने के लिये बाजार जाते हैं, तो उचित मूल्य मिल पाता है। वे लोग सही दामों में नारंगी तथा संतरे बेचते हैं। कुछ महिलाओं का बाजार में आना–जाना कम होता है। वे सस्ते दामों में नारंगी–संतरा बेच देती हैं। अगर प्रत्येक ग्रामवासी को उचित जानकारी हो तो लोग फलों को सही दामों में बेच कर अधिक लाभ कमा सकते हैं।

हर गाँव में बहुत सी चीजें होती हैं जिसका हम अचार बना सकते हैं। जैसे लिंगुड़ा, नींबू, तिमल, आम, आंवला इत्यादि का अचार बनाया जा सकता है। इससे लाभ भी प्राप्त हो सकता है। इस साल महिला समूहों को अचार तथा जूस बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। महिलाओं ने इसमें हिस्सा लिया और जूस बना कर बेचा। इस में भी महिलाओं को अधिक जानकारी न होने के कारण अच्छे दाम नहीं मिल पाये। महिलाओं ने बुरांश, ऐलोवेरा और नारंगी का जूस बनाया।

ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर महिलाएं सिलाई तथा बुनाई करती हैं। मगर वे अपने घर तक सीमित रह जाती हैं। अगर महिलाओं का इधर–उधर सम्पर्क हो तो वे सिलाई तथा बुनाई में भी मुनाफा कमा सकती हैं। आजकल सूट की सिलाई तीन सौ रुपया हो गई है। स्वेटर की कीमत सात सौ से आठ सौ रुपये तक हो गई है। अगर किसी महिला को पूरी सिलाई आती है तो वह गाँव में दुकान खोल कर अपना रोजगार शुरू कर सकती है। इसी तरह कोई अन्य महिला बुनाई का व्यवसाय कर सकती है। इन सभी व्यवसायों के अलावा ग्रामीण परिवार मुर्गी पालन तथा मत्स्य पालन भी कर सकते हैं। इस में भी आय वृद्धि की सम्भावनाएं हैं।

◆◆●◆◆

गाँव बदल रहे हैं

रेनू आर्या

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के साथ जुड़ कर हमारे गाँव की सभी महिलाओं में बहुत बदलाव आया है। गाँव में महिलाएं अपने–अपने कामों में व्यस्त रहती हैं। हर एक स्त्री कुछ न कुछ काम करती रहती है। किसी ने भैंस पाली है तो दूध, दही बेच रही है। साथ ही, कुछ स्त्रियाँ दूध, दही के अलावा मट्ठा भी बेचने लगी हैं। कुछ लोगों ने तो बकरियाँ पाल रखी हैं। वे बकरियाँ बेच कर अपने घर परिवार का खर्चा उठा रही हैं। गाँव में बहुत बदलाव आ रहा है। महिलाओं और उनके परिवारों में भी इस बदलाव का प्रभाव देखने को मिल रहा है। अब महिलाएं आय संवर्धन के काम करके पैसा कमाने लगी हैं।

महिलाओं ने सिलाई बुनाई का काम सीख कर स्वयं, बच्चों और परिवार के अन्य सदस्यों के कपड़े सिलने शुरू किये हैं। बुनाई का काम भी महिलाएं करती हैं। बहुत सी महिलाएं सिलाई–बुनाई का काम बहुत लगन से कर रही हैं। वे लोगों के कपड़े सिल कर आय बढ़ा रही हैं। इस तरह उनका पैसा भी बच जाता है क्योंकि वे जो कपड़े दूसरों को सिलवाने के लिये देती थी अब स्वयं घर में ही बना लेती हैं। इस तरह वे अपने घर का खर्चा भी उठाती है और आय बढ़ाती हैं।

हमारे गाँव में लड़कियाँ कुछ न कुछ काम में लगी रहती हैं। बहुत सी लड़कियाँ घर से बाहर शहरों में काम करने गयी हैं। वे हर महीने अपने घर के लिए पैसे भेजती हैं। इससे घर वालों को मदद मिलती है। जो लड़कियाँ घर में ही रहती हैं वे गाँव में काम कर रही हैं। कुछ लड़कियाँ सिलाई कर रही हैं। हमारे गाँव की सभी लड़कियाँ घर का काम करती हैं। जैसे–खेतों का काम दुधारू जानवरों के लिए घास काट कर लाना आदि।

अब गाँव के आस–पास के क्षेत्र में सूखी घास भी पर्याप्त मात्रा में नही मिल पा रही। इस वजह से आस–पास के गाँवों में जो भी लोग रहते हैं उन्होंने सूखी घास की कीमत बढ़ा दी है। लोग बहुत परेशान हैं क्योंकि ग्रामवासियों का आधा पैसा घास खरीदने में ही लग जा रहा है। किशोरियाँ, महिलाएं जंगलों से घास काट कर लाती हैं जिससे उन्हें सूखी घास न खरीदनी पड़े और पैसा बच जाये। जो पैसे वे पहले बाहर घास खरीदने में देती थीं, अब वह बच जाता है। इससे गाँव के सभी लोगों को फायदा हो रहा है।

हमारे गाँव में महिलाएं, किशोरियाँ बहुत श्रम करती हैं। जंगलों से लकड़ियाँ लाकर अपने घर में गैस भराने के लिये पैसे बचाती हैं। अब सिलेंडर में गैस भराना बहुत महंगा हो गया है। इस कारण लोग गैस के चूल्हे का कम उपयोग करने लगे हैं। महिलाएं, लकड़ियाँ भी बेचती हैं, इससे कुछ आय हो जाती है। कुछ महिलाएं बिच्छू घास बेचकर पैसा कमा रही हैं। इससे गाँव की सफाई भी हो रही है। कुछ महिलाएं कंकड़–पत्थर भी तोड़ती हैं।

कुछ लड़कियाँ पार्लर का काम करती हैं। वे शादियों में दुल्हन और उसके परिजनों का मेकअप कर के धन कमाती हैं। पूछने पर वे बताती हैं कि काम करने से बहुत अच्छा लगता है। उनकी बातें सुन कर मुझे भी बहुत अच्छा लगता है। संस्था के सहयोग से हमारे कसून गाँव की स्त्रियाँ भी आगे बढ़ रही हैं। अब वे विकास के मुद्दों को थोड़ा–बहुत समझती हैं। वे स्वाभिमान और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहती हैं। संगठन बनने से महिलाओं में एक–दूसरे के प्रति सहयोग और सामंजस्य बनाने की भावना विकसित हुई है। यह एक प्रेरणादायक कदम है। समाज में सभी लोग एक दूसरे का सहयोग करें और प्रोत्साहन देते हुए काम करें तो निश्चित तौर पर हमारे गाँव तथा उत्तराखण्ड के अन्य गाँवों में एक अच्छी सोच मजबूत होगी। महिलाएं आगे बढ़ेंगी तो उनके परिवारों तथा गाँवों में भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

◆◆●◆◆

कम्प्यूटर केन्द्र का संचालन

ज्योति पंवार

मैं अपने गाँव बछेर में कम्प्यूटर केन्द्र की संचालिका हूँ। बछेर गाँव में कम्प्यूटर केन्द्र का संचालन एक फरवरी 2020 से शुरू हुआ। नवज्योति महिला कल्याण संस्थान व उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा के सहयोग से गोपेश्वर के आसपास के गाँवों में ग्राम शिक्षण केन्द्र और कम्प्यूटर केन्द्र खोले गये हैं। इन केन्द्रों के माध्यम से गाँवों में बच्चों, किशोरियों और महिलाओं को शिक्षित किया जाता है। ये दोनों संस्थाएं गाँव की महिलाओं व उनके संगठनों से जुड़ी है। गाँवों में महिलाओं की उन्नति, शिक्षा, विकास व पर्यावरण के विषयों पर कार्य करती रहती हैं।

कम्प्यूटर केन्द्र गाँव के बीचों–बीच स्थित है। इसका संचालन गाँव की धर्मशाला में दोपहर तीन से छः बजे तक किया जाता है। केन्द्र में बारह बच्चे आते हैं। इसमें चार किशोरियाँ हैं। बच्चों की तीन टोलियाँ बनाई गयी हैं। एक समय में चार विद्यार्थी उपस्थित रहते हैं। तीनों टोलियाँ अपने–अपने निर्धारित समय पर उपस्थित होती हैं। केन्द्र में चार कम्प्यूटर, एक प्रिंटर, इनवर्टर और बैटरी है। केन्द्र में एक अलमारी है जिस में सामान रखा रहता है। केन्द्र में बच्चों के लिए बहुत सी किताबें रखी गयी हैं। किशोरियाँ, किशोर तथा बच्चे इन किताबों को पढ़ते हैं। बहुत से बच्चे किताबें घर में पढ़ने के लिये भी ले जाते हैं।

मुझे अपने गाँव में कम्प्यूटर केन्द्र का संचालन करना बहुत अच्छा लगता है। केन्द्र में आये हुए बच्चों को कम्प्यूटर के बारे में बताना भी मेरी पसंद का काम है। जितना ज्ञान मुझे कम्प्यूटर के बारे में है उसे बताने से मुझे भी सभी बातें याद रहती हैं। इससे मेरा ज्ञान भी बढ़ता है। अगर घर पर ही रहती तो मेरा ज्ञान सीमित रहता। अभ्यास न होने के कारण कुछ समय बाद कम्प्यूटर के बारे में स्वयं मुझे भी याद नहीं रहता। यह एक बहुत अच्छा मौका मिला है।

जब मैं संस्था से जुड़ी तो जुलाई में कम्प्यूटर प्रशिक्षण के लिये उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा में गयी थी। पाँच दिन का प्रशिक्षण हुआ। हमें कम्प्यूटर की बेसिक बातें बतायी गयी। पहले बच्चों को माउस नियंत्रण करना सिखाना था। इसके लिये पेटिंग सॉफ्टवेयर उपलब्ध है। उसके बाद बच्चों को हिन्दी टाइपिंग करवानी है। इसमें एक से चालीस तक के अभ्यास हैं। इससे बच्चों को कुंजी के बारे में पता चलता है कि किस कुंजी पर

क्या अक्षर आता है। इस सॉफ्टवेयर से बच्चों को टाइपिंग टैस्ट भी मिलता है। इससे पता चलता है कि बच्चा किस गति से टाइपिंग कर रहा है।

तीसरा सॉफ्टवेयर माइक्रोसॉफ्ट वर्ड है। इसमें बच्चों को होम, इन्सर्ट, पेज ले आउट, प्रिंट, सेव, फाइल आदि के बारे में बताया जाता है। माइक्रोसॉफ्ट वर्ड में हिन्दी के चौदह अभ्यास हैं। एक अभ्यास पाँच पृष्ठों का होता है। इन अभ्यासों से हिन्दी की सभी कुंजियों का अध्ययन किया जाता है। किस कुंजी पर हिन्दी का कौन सा अक्षर आता है, यह पता चलता है। बच्चों को फाइल सेव करना, फोल्डर बनाना बताया जाता है। वर्ड के सभी कमाण्ड बताये जाते हैं। विंडोज के कमाण्ड का अभ्यास किया जाता है। जब सारे अभ्यास पूरे हो जाते हैं तो माइक्रोसॉफ्ट वर्ड में हिन्दी टाइपिंग की जाती है। एक माह के अभ्यास के बाद अंग्रेजी टाइपिंग शुरू करायी जाती है। उसके बाद एक्सेल का परिचय किया जाता है। इसमें बच्चे जोड़, घटाना, गुणा, भाग सीखते हैं। पावर प्वांइट का उपयोग प्रेजेंटेशन बनाने के लिए किया जाता है। इसमें बच्चे अपने केन्द्र के बारे में प्रेजेंटेशन बनाते हैं। इस में ऐनिमेशन, स्टाइल, स्लाइड शो आदि के बारे में सीखते हैं। केन्द्र में सभी बच्चों की अपनी–अपनी फाइलें हैं। उसके बाद बच्चों को प्रिंट करवाना सिखाया जाता है। बच्चे प्रिंट करने में अधिक रूचि लेते हैं।

कम्प्यूटर कोर्स तीन महीने का है। यह पचहत्तर दिन का कोर्स है। इस कोर्स को करने से विद्यार्थी को कम्प्यूटर का बेसिक कार्य करना आना चाहिए। कोर्स पूरा होने पर एक परीक्षा ली जाती है। परीक्षा पत्र एक सौ पच्चीस अंक का होता है। इसमें पन्द्रह अंक लिखित परीक्षा के लिए होते हैं। पचास अंकों का कम्प्यूटर में माइक्रोसॉफ्ट वर्ड में हिन्दी व अंग्रेजी के पैराग्राफ दिये जाते हैं। दोनों पैराग्राफ पचास–पचास अंकों के होते हैं। पाँच अंक की तालिका बनाने को दी जाती है। इसमें केन्द्र के बच्चों की संख्या का वर्णन किया जाता है। पाँच अंक हिन्दी के ऐसे अक्षर टाइप करने के लिये रखे गये हैं जो की–बोर्ड में नहीं होते। उन्हें सिम्बल द्वारा लाया जाता है। जिन बच्चों के पिचासी अंक से कम आते हैं उन्हें फिर पन्द्रह दिन का समय अभ्यास के लिये दिया जाता है। जब से प्रमाण पत्र की व्यवस्था हुई तब से बच्चे कम्प्यूटर केन्द्र में आने के लिये अधिक उत्सुक होने लगे। प्रमाण पत्र से उन्हें ऐसा लगता है कि कम्प्यूटर कोर्स करने के बाद कुछ मिला है। जो बच्चे पचहत्तर दिन का कोर्स पूरा कर के परीक्षा पास करते हैं वे गर्व के साथ प्रमाण पत्र प्राप्त करते हैं।

मेरा दूसरा प्रशिक्षण जून 2023 में हुआ। इस प्रशिक्षण में हमें एम.एस.वर्ड, एक्सेल, पावर प्वांइट के बारे में बताया गया। हर साफ्टवेयर के बारे में छोटी से छोटी बातों का अध्ययन कराया गया। वर्ड में पेज सैट, मार्जिन, एक्सेल में जोड़, घटाना, गुणा, भाग व उपस्थिति तालिका, फीस चार्ट बनाना सिखाया गया। पावर प्वांइट में अच्छे प्रेजेंटेशन बनाना सीखा। इन्वर्टर के बारे में भी बताया गया। प्रशिक्षण में लिखित कम और प्रैक्टिकल ज्यादा बताया जाता है। इस से समझने में अधिक आसानी होती है। मैंने दोनों प्रशिक्षणों से बहुत सी नयी बातें सीखीं।

हमारे गाँव के केन्द्र में इक्कीस बच्चों को सर्टिफिकेट मिल गये हैं। अभी अठारह बच्चों को प्रमाण पत्र दिये जाने हैं। जब महिलाओं की गोष्ठी होती है तभी बच्चों को सर्टिफिकेट दिये जाते हैं। जिन बच्चों का कोर्स पहले पूरा हो गया था उनके सर्टिफिकेट बाल–मेले में दिये गये थे। उस वक्त आठ बच्चों को प्रमाण पत्र दिये गये। यह बाल मेला बमियाला गाँव में हुआ था। इसमें बच्चों की भाषण प्रतियोगिता रखी गयी थी। बच्चों ने भाषणों में कम्प्यूटर के बारे में भी बताया। उसके बाद गाँव बछेर में महिला गोष्ठी रखी गयी थी। इसमें आठ बच्चों को महिला संगठन की अध्यक्षा और अन्य सदस्याओं द्वारा सर्टिफिकेट दिया गया।

मुझे केन्द्र में जाना अच्छा लगता है। बच्चों के साथ समय बिताने से उनकी क्षमता को परखने में आसानी होती है। किस बच्चे में कौन से गुण और क्या कमी है, इसका पता चलता है। परस्पर बातचीत से बच्चों की लिखने व समझने की क्षमता भी बढ़ती है। संस्था के साथ जुड़ने से बहुत कुछ सीखने को मिला है। इससे मुझे एक मौका मिला है, कुछ करने और आगे बढ़ने के लिये। सीखने से ज्यादा सिखाने में ज्ञान की वृद्धि होती है, यह मेरा मानना है।

◆◆●◆◆

आय का अर्थ

अनामिका राणा

मैं ग्राम दोगड़ी–काण्डई, जिला चमोली, में रहती हूँ। मैं सेन्टर दोगड़ी–काण्डई से आय–वृद्धि पर एक छोटी सी टिप्पणी लिख रही हूँ। यदि इस टिप्पणी में मेरे द्वारा कोई त्रुटि होती है तो क्षमा करना।

आय एक खपत और बचत है। घर–परिवार, देश और व्यापार और यहाँ तक कि पूरी दुनिया को चलाने में मजदूरी, वेतन, लाभ, भुगतान, किराया आदि सभी कार्यों में आय का उपयोग होता है। धन को जमा कर के अर्जित संपत्ति, जिसमें लाभ कमाया जाता है, उसे आय कहा जाता है। आम–तौर पर आय शब्द का उपयोग सेवा या उत्पाद के लिये प्रयोग नहीं होता। आय का अर्थ एक निर्धारित समय के दौरान प्राप्त हुए धन और संपत्ति से होता है। आय दो प्रकार की होती हैं, मौद्रिक आय और वास्तविक आय।

आय किसी भी राष्ट्र की आर्थिक स्थिति के आकलन का विश्वसनीय मापदण्ड है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने से प्रति–व्यक्ति आय में वृद्धि होती है। वर्तमान युग में प्रत्येक देश अपने–अपने तरीके से विकास की योजनाएं बनाता है। हर एक राष्ट्र का लक्ष्य अपने उत्पादक संसाधनों की क्षमता को बढ़ा कर अधिक आय प्राप्त करना है।

वस्तुओं का अधिक उत्पादन होगा तो व्यक्तियों की आय अधिकतम होगी। ऐसा होने पर राष्ट्र मे उच्चतम आर्थिक विकास की स्थिति आती है। बिना उत्पाद को बढ़ाये लोगों की आय में वृद्धि नहीं हो सकती और न ही विकास हो सकता है। विकास तभी होगा जब देश या राज्यों के पास धन हो। धन के अभाव में आर्थिक विकास नहीं होता और देश तथा राज्य गरीबी की स्थिति में चले जाते हैं। इस से गाँवों में भी आर्थिक विपन्नता हो जाती है।

◆◆●◆◆

व्यक्तिगत परिवर्तन हुआ

माला आर्या

मैं ग्राम नामिक, तहसील मुनस्यारी, जनपद पिथौरागढ़ की निवासी हूँ। मैं सन् 2019 से नामिक गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र का संचालन कर रही हूँ। इन वर्षों में मेरा अनुभव बहुत अच्छा रहा। मेरी शिक्षा केवल दसवीं तक ही हो पायी परंतु संस्था से जुड़ने के बाद व्यक्तिगत रूप से स्वयं में जो परिवर्तन देखा वह वाकई में लाजवाब है। मेरा गाँव आज भी पुरानी परंपराओं पर आधारित है। संस्कृति, सभ्यता के अनुरूप बेटियों को आज भी आजादी नहीं मिलती है। इन परिस्थितियों के बीच में मैंने स्वयं को इस संस्था से जोड़े रखा जिस से व्यक्तित्व विकास का मौका मिला।

आज शहरों में हो रहे विकास का प्रभाव पहाड़ के गाँवों में भी प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जाता है। गाँव में लोग अनेक उद्यमों को बढ़ावा दे रहे हैं। उत्तराखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा शिक्षण केन्द्रों के माध्यम से भी अनेक परिवर्तन देखने को मिले हैं। संस्था द्वारा नामिक और आसपास के कुछ अन्य गाँवों में बच्चों को केन्द्र के माध्यम से उनकी अभिरूचि के अनुरूप शिक्षित किया जा रहा है। कहानी में अभिरूचि वाले बच्चों को कहानियों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। खेल में रूचि रखने वाले बच्चों को खेल–सामग्री व अन्य सहायक सामान उपलब्ध है, जो कि हमारी संस्था की विशेषता है। संस्था ग्रामीण बच्चों को केन्द्र में रख कर स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप काम करती है जिसमें ग्रामवासी पूरी तरह शामिल रहते हैं।

संस्था ने सामाजिक रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण के लिये अनेक प्रकार के सुधार किये हैं। नामिक गाँव में ही देखें तो महिलाओं द्वारा संगठन बनाया गया। महिलाओं ने संगठित हो कर समाज में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ आवाज उठायी। समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया।

संस्था द्वारा महिलाओं को समय–समय पर अल्मोड़ा गोष्ठियों में भाग लेने के लिये बुलाया गया। उन्हें गाँव के बाहर के स्थान देखने और शिक्षण के साथ बहुत कुछ नया सीखने को मिला। उन्होंने इस सीख को अपने जीवन में उतारा और अपने समाज को नई दिशा देने के लिये अनेक प्रयास किये। आज महिलाएं सुसंगठित होकर समाज में अनेक प्रकार के सार्वजनिक कार्य करती हैं। महिला संगठन शिक्षा, सामाजिक, धार्मिक कार्यों में लगातार अपना योगदान दे रहा है।

संस्था के सहयोग से महिलाओं ने जो स्वयं में बदलाव किये, समाज के लिए कार्य किये, वे वास्तव में एक बड़ी उपलब्धि हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का अभाव है। लोग पूर्ण रूप से जागरूक नहीं हैं। संचार, सड़क, सुख–सुविधाओं का अभाव है। महिलाएं कर्मठ और साहसी हैं। अब महिलाओं को उद्यम बढ़ाने, स्वरोगार आदि के लिये प्रशिक्षण दिया जा रहा है। नामिक–गोगिना क्षेत्र में महिलाएं कताई–बुनाई में निपुण होती हैं। सिलाई का प्रशिक्षण, जिसमें महिलाएं सर्वाधिक रूचि रखती हैं, निरंतर दिया जा रहा है। आज हमारे गाँव नामिक के साथ–साथ गोगिना, रातिर गाँवों में भी सिलाई, कम्प्यूटर का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। लोहार कुड़ा तोक में भी महिलाएं इस काम को सीख कर स्वरोजगार के नये साधन बना रही हैं।

व्यक्तिगत रूप से विकास के संदर्भ में विचार किया जाये तो नवयुवतियाँ सर्वाधिक सफल रही हैं। ग्रामीण क्षेत्र में बेटियों को आज भी घर से दूर भेजना चिंताजनक विषय बना रहता है। इस का सर्वाधिक प्रभाव शिक्षा पर पड़ता है। बेटियाँ हाई स्कूल, इण्टर तो कर लेती हैं परन्तु आगे की शिक्षा एक चुनौती बन जाती है। इस कारण उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। ऐसी परिस्थिति में एकमात्र विकल्प रहता है कि समय से शादी कर दी जाये। इस कारण लड़कियों का विकास रूक जाता है, वे जागरूक नहीं हो पाती हैं।

संस्था के माध्यम से बहुत परिवर्तन हुआ है। संस्था द्वारा किशोरियों को समय–समय पर एक साथ बुला कर किशोरी संगठन बना कर प्रशिक्षित किया गया। इस से लड़कियाँ नये कार्यों को सीखने के लिये उद्यत हुईं। इसका उदाहरण मैं स्वयं हूँ। मैं दसवीं तक ही पढ़ाई कर पायी। उसके बाद घर के काम–काज में ही समय बीतने लगा। अन्य कोई कौशल कभी सीखा नहीं, देखा भी नहीं था। इसी बीच मेरी बड़ी बहन ग्राम शिक्षण केन्द्र में शिक्षिका बनी। उसकी काबीलियत और विकास देख कर मेरे परिजन भी बहुत उत्साहित हुए थे। मैं अपनी बहन के साथ किशोरी के रूप में अल्मोड़ा गयी। प्रशिक्षण के दौरान किशोरियों ने बहुत सी नयी बातें और कौशल सीखे। यह सब कुछ मेरे लिए बिल्कुल नया था। मेरे लिये यह एक आकर्षक और पसंदीदा काम के तौर पर उभरा। बाद में इस संस्था ने एक कार्यकर्त्ता के रूप में मुझे चुना। मैंने यह मौका नहीं गँवाया। आज व्यक्तिगत रूप से जो विकास, परिवर्तन मैंने स्वयं अनुभव किया है, वह वास्तव में बहुत सी अन्य किशोरियों ने भी अनुभव किया है।

महिलाओं और नवयुवतियों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर के अपने सपनों को पूरा करने की दिशा में अनेक प्रयास किये हैं। वे अपनी जरूरतें पूरा करने में सक्षम हो रही हैं। परिवार का खर्चा चला रही हैं। संस्था द्वारा सिलाई, बुनाई में प्रशिक्षण देने से नवयुवतियों को आजीविका बढ़ाने के लिये सक्षम बना दिया गया। संस्था ने निरंतर इन क्षेत्रों में ध्यान दिया और कार्यों को बढ़ावा दे कर सभी किशोरियों व महिलाओं के लिए नये अवसर उपलब्ध कराये। इन अवसरों का लाभ लगभग सभी ने उठाया और अपनी आजीविका के अनुरूप कार्यों को बढ़ावा भी दिया।

प्रशिक्षण के अनुरूप महिलाएं सिलाई में निपुण हैं। बुनाई में भी महिलाएं रूचि दिखा रही हैं। महिलाएं सिलाई–बुनाई, गाय–भैंस पाल कर घी बेचना आदि कार्यों से आय बढ़ा रही हैं। आधुनिकता के चलते अब ब्यूटी पार्लर की चाह भी देखने को मिल रही है। गाँव–घरों में अभी इसका प्रचलन कम है लेकिन गाँवों से कस्बों की ओर आने पर हर महिला ब्यूटी पार्लर की सैर अवश्य कर के आती है। ब्यूटी पार्लर रोजगार हेतु आय का एक अच्छा स्रोत बन सकता है। आने वाले समय में ग्रामीण क्षेत्रों में ब्यूटी पार्लर के चलने की बहुत संभावनाएं हैं।

फलोत्पादन से भी अच्छी आमदनी हो सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में फलों का उत्पादन प्रचुर मात्रा में होता है। आज शुद्ध प्राकृतिक रूप से मिलने वाले फलों की माँग अधिक है। इस के अतिरिक्त फलों को जूस, अचार आदि बनाने में प्रयोग किया जाता है। जैविक खेती से प्राप्त फलों जैसे संतरे, प्लम, कीवी इत्यादि से आय के स्रोतों को बेहतर बनाया जा सकता है। संतरे के जूस की जरूरत हमेशा रहती है। खास कर गर्मियों में जूस की जरूरत रहती है। कीवी का जूस सबसे महंगा बिक रहा है। प्लम से अचार और चटनी बनायी जाये तो यह भी आय वृद्धि का साधन हो सकता है। संगठन में मिल कर काम करने से महिलाएं आमदनी में वृद्धि कर सकती हैं।

वर्तमान समय में बेटियों ने शिक्षा और खेल के क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किये हैं। अवसर मिलने पर बेटियाँ हर क्षेत्र में आत्म–निर्भर बन सकती हैं। हमारे नामिक–शामा क्षेत्र में भी लड़कियों को उचित प्रशिक्षण और सलाह मिले तो वे खेल के क्षेत्र में बहुत आगे निकल सकती हैं। बर्फ से ढ़की चोटियों के बीच दुर्गम इलाके में रहने वाली लड़कियों को उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता अन्यथा वे हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा सकती हैं।

◆◆●◆◆

ग्राम शिक्षण केन्द्र पल्यूं

सपना आर्या

मैं ग्राम शिक्षण केन्द्र पल्यूं में शिक्षिका का कार्य करती हूँ। पल्यूं गाँव का विकास खण्ड भैसियाछाना और जिला अल्मोड़ा है। मेरी माँ ग्राम पल्यूं में आंगनबाड़ी की शिक्षिका हैं। मैंने 14 मार्च 2023 से ग्राम शिक्षण केन्द्र का संचालन किया। मैं कक्षा एक से आठ तक की कक्षा के बच्चों को खेल के माध्यम से गतिविधियाँ कराती हूँ। केन्द्र में रोज बाइस से पच्चीस बच्चे आते हैं। किशोरियाँ भी किताबें पढ़ने के लिए ले जाती हैं। मुझे केन्द्र चलाना बहुत अच्छा लग रहा है।

हमारे गाँव में सिलाई केन्द्र भी चलता है। इस केन्द्र का संचालन पूनम आर्या करती हैं। गाँव की कुछ महिलाएं एवं नवयुवतियाँ सिलाई सीखने जाती हैं। सभी प्रशिक्षार्थी पहले अखबारों में काटना सीखते हैं। उस के बाद पुराने कपड़ों में अभ्यास करते हैं। पूनम दी द्वारा सूट, ब्लाउज, पेटीकोट, पैंट–पायजामा, प्लाजो, फ्रॉक, छोटे बच्चों के कपड़े आदि सिलना सिखाया जाता है। महिलाओं में शीला देवी, मीना देवी, मंजू मिश्रा, गीता बिष्ट इत्यादि ने अच्छी सिलाई सीखी। नवयुवतियों में सपना, निर्मला, नीतू ने लगन से सीखा है। सिलाई सीखने के बाद थोड़ा–थोड़ा करके दो महिलाओं ने पैसा कमाना शुरू किया। फिर एक अन्य महिला भी कपड़े सिलने लगी। वे जो पैसा कमाती हैं, उसका कुछ हिस्सा बचा कर बैंक में जमा करती हैं।

हमारे गाँव में सिलाई केन्द्र खोलने से महिलाओं एवं नवयुवतियों को बहुत लाभ हुआ। वे सिलाई के साथ–साथ खेती बाड़ी और घर का काम भी करती हैं। गाँव में धान, गेहूँ, मादिरा, मडुआ, जौं, आलू, प्याज की खेती की जाती है। ग्रामवासी थोड़ा अनाज–सब्जी बाजार में बेचते हैं। मेहनत करके

थोड़ा–थोडा पैसा कमाते हैं। महिलाएं भैंस, गाय और बकरियाँ पालती हैं। थोड़ा अपने घर और थोड़ा दूध, घी, दही बेच कर पैसा कमा लेती हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र में किताबें, ब्लैक–बोर्ड, जोड़ो ज्ञान सामग्री इत्यादि के साथ ही खेल सामग्री जैसे–कैरम, लूडो, शतरंज, बैडमिंटन, रस्सी कूद, फुटबॉल आदि रखे हुए हैं। केन्द्र में लगभग छः सौ किताबें हैं। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान से नंदा और मुस्कान पत्रिकाएं भी आती हैं। बच्चों की रूचि खेल, भावगीत और हाव–भाव के साथ कहानी सुनने और सुनाने में है। शिक्षण केन्द्र खुलने से बच्चों में परिवर्तन आया है। उन्हें पढ़ने के लिए नई किताबें तथा प्रयोग करने के लिए नई गतिविधियाँ मिलीं। किशोरियों को उपयोगी किताबें उपलब्ध हुई तथा मंच पर बोलने का मौका भी मिला।

पल्यूं गाँव में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा काम शुरू करने के बाद महिलाओं का संगठन बना। महिला सम्मेलनों और गोष्ठियों में जाने तथा अपनी बात कहने का अवसर मिला। मुझे बच्चों को शिक्षित करने का मौका मिला है। अल्मोड़ा में प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बच्चों के साथ करने के लिए बहुत सी नयी गतिविधियाँ सीखीं। मुझे महसूस होता है कि जो मैंने केन्द्र में सीखा वह आगे जाकर जरूर काम आयेगा। ग्राम शिक्षण केन्द्र को और अधिक रोचक बनाने के लिए बच्चों को नई–नई शैक्षिक व खेल गतिविधियाँ सिखा सकते हैं।

सस्ते दाम में बेचना पड़ता है

साक्षी बिष्ट

आय वृद्धि के लिए बहुत से रोजगार गाँव में ही उपलब्ध है। ग्रामीण महिलाएं आय वृद्धि के लिए कई कार्य करती हैं। इसमें महिलाओं को कुछ समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। सबसे बड़ी समस्या उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं का उचित दाम न मिल पाना है। महिलाएं आय वृद्धि के लिये कार्य तो करती हैं परन्तु उत्पाद को बेचने के लिए उचित बाजार उपलब्ध नहीं हो पाता। इस कारण उन्हें अपने उत्पादों को सस्ते दामों में बेचना पड़ता है।

मण्डल क्षेत्र में अधिकतर महिलाओं की आय का साधन दुग्ध उत्पादन है। अधिकांश महिलाएं दुग्ध व्यवसाय पर निर्भर हैं। उचित बाजार उपलब्ध न होने

के कारण महिलाओं को दूध डेयरी में देना पड़ता है। डेयरी से उन्हें अपनी मेहनत के अनुरूप दाम नहीं मिलते। महिलाओं को दूध कम दामों में देना पड़ता है। डेयरी उसी दूध को अधिक दामों में बाजार में बेचती है। दही, पनीर आदि अन्य चीजें बना कर महंगे दामों में बेचे जाते हैं। इससे फायदा तो होता है परन्तु महिलाओं को ज्यादा फायदा नहीं होता, उनकी आय में वृद्धि नहीं हो पाती है।

आय संवर्धन के लिए मत्स्य पालन एक बहुत अच्छा साधन है। गाँव में कुछ महिलाओं द्वारा मत्स्य पालन का कार्य भी किया जा रहा है। मत्स्य पालन में उत्पादन अच्छा होता है। अगर सही तरीके से मछलियों की देखभाल की जाये तो फायदा होता है। इसमें मछलियों के लिए जो भोजन मंगवाया जाता है वह बहुत महंगा मिलता है। मत्स्य पालन में वैसे तो बहुत सी अलग–अलग प्रकार की मछलियों को पाला जाता है परन्तु अधिकतर लोग ट्राउट मछली को पालते हैं। वैसे महिलाएं संगठन के माध्यम से मछली से अन्य उत्पादन भी कर

सकती हैं। मछली का अचार, मछली को सुखाकर बेचना इत्यादि लोकप्रिय व्यवसाय हो सकते हैं। इससे उनकी आय में वृद्धि हो सकती है।

महिलाएं अपनी आय बढ़ाने के लिए जूस और अचार भी बना सकती है। यदि संगठन में कार्य करके अलग–अलग फलों का जूस बनायें तो आय बढ़ सकती है। पहाड़ी फलों जैसे तिमल, बेडू आदि का अचार या जैम बन सकता है। महिलाएं इस कार्य को संगठन के माध्यम से कर सकती हैं। सभी महिलाएं कार्य को अलग–अलग बाँट कर अच्छी तरह से कर सकती हैं। इससे महिलाओं को उत्पादित चीजों का उचित दाम भी प्राप्त हो जायेगा।

घरेलू उत्पाद जैसे घर की दालें, मसाले इत्यादि बेचने का कार्य भी किया जा सकता है। सिलाई–बुनाई द्वारा बनाये गये कपड़ों से भी आय को बढ़ाया जा सकता है। सिलाई–बुनाई द्वारा कुछ महिलाएं अपनी आय बढ़ा रही हैं। कई महिलाएं सिलाई–बुनाई नहीं कर पाती हैं क्योंकि उन्हें समय नहीं मिल पाता। वे घर में होने वाली दालों जैसे–गहत, सोयाबीन, राजमा, भट्ट को बेच कर आय बढ़ा सकती हैं। पहाड़ी मसालों को एकत्रित करके उन्हें अच्छे दामों में बेच सकती हैं। महिलाएं संगठन के द्वारा अच्छी तरह से पैकिंग करके बेच सकती है। बाजार में सीधे किसी दुकानदार से बात करके उसके पास भी सामान बेचा जा सकता है। यह आय वृद्धि का एक बहुत अच्छा साधन बन सकता है।

संगठन के माध्यम से महिलाएं अपनी बातों को समाज के सामने रख पा रही हैं। उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा है। आय बढ़ने से महिलाएं अपनी जरूरत की चीजें स्वयं ले पाती हैं। अपने परिवार के खर्च को चलाने में भी सहयोग करती हैं। जो आय महिलाओं के पास पहले से है उसमें बढ़त होती है और एक भावनात्मक बल मिलता है। कुछ अन्य नये कार्य करने के लिए उत्साह भी उत्पन्न होता है। इससे अन्य महिलाओं को प्रेरणा मिलती है तथा कुछ और कार्य करने की इच्छा शक्ति भी जगती है।

◆◆●◆◆

महिलाओं के लिए आय के साधन

सरिता रावत

महिलाओं की आय बढ़ाने के लिए बहुत से साधन हैं। सिलाई, बुनाई, सब्जी उत्पादन के अलावा अन्य ऐसे अनेक कार्य हैं जिनसे आय बढ़ सकती है। महिलाएं बच्चों को पढ़ा कर और खेती करके आय बढ़ा सकती हैं। पशु पालन से दूध और घी बना कर बेचा जा सकता है। नवयुवतियों को ब्यूटी पार्लर का काम भाता है तो वे इस कौशल को सीख कर दूसरों को सिखा सकती हैं। खुद का पार्लर भी खोल सकती हैं। इस से उन की आय में वृद्धि होगी और वे आगे बढ़ेंगी।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान द्वारा भी ऐसे अनेक प्रयास किये जा रहे हैं जिनसे महिलाओं को आय प्राप्त हो। संस्था के कारण महिलाएं सिलाई, कम्प्यूटर, बच्चों को पढ़ाना इत्यादि कार्य करने में सक्षम हो रही हैं।

महिलाओं की आय में वृद्धि से सामाजिक जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। अगर आय में वृद्धि होने लगे तो समाज में महिला का नाम आता है। इससे आस–पास के लोगों को खुशी होती है। दूसरों को भी प्रेरणा मिलती है कि महिलाएं आगे बढ़ रही हैं। इससे लोगों का नजरिया भी बदलता है, वे स्त्रियों को आदर से देखते हैं।

आय में वृद्धि होगी तो समाज में स्त्रियों का नाम होगा और वे दूसरों पर निर्भर नहीं रहेंगी। सामाजिक बदलाव बहुत ही आवश्यक है। अनेक नवयुतियाँ अपनी आगे पढ़ने की इच्छाएं पूरी कर रही हैं। किशोरियाँ अपने सपनों को पूरा करने की हिम्मत जुटा रही हैं। अगर हमारे समाज में बदलाव हो तो न कोई गरीब रहेगा, न पीछे रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज में जाने, बोलने की प्रेरणा मिलती है। आय में वृद्धि से हर महिला, नवयुवती कुछ न कुछ ऐसा कार्य कर रही है जिस से वह आगे बढ़ सके।

आय में वृद्धि से व्यक्तिगत जीवन पर भी प्रभाव होता है। हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है तो हम आगे बढ़ने की सोचते हैं। बोलचाल में परिवर्तन होता है। यह आभास होता है कि हम कुछ ऐसा कार्य कर रहे हैं जिस से हमारी आवश्यकताएं और सपने पूरे हो रहे हैं। यह एक व्यक्तिगत बदलाव है। हम बाहर जाना, बोलना, उठना–बैठना बहुत सी बातें सीखते है। अगर कोई महिला कुछ ऐसा काम करे जिससे आय प्राप्त हो तो वह उस काम को रूचि से करेगी। इसका प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है।

व्यक्तिगत जीवन में एक महत्वपूर्ण बदलाव यह भी है कि पहले महिलाओं को बाहर नहीं जाने दिया जाता था। कोई किशोरी अगर अकेले किसी काम के लिए, जैसे परीक्षा देने, जाती तो उसके साथ परिवार का कोई सदस्य जाता। परिवार तथा ग्राम समाज में लोग सोचते कि लड़की कैसे जायेगी वह डरती है। अब वह डरती नहीं। कहाँ गलत है, कहाँ सही इसकी जानकारी रखती है। अब उसके अन्दर का डर चला गया। वह अपने कार्य पूरे करने का जोश रखती है। इसका सीधा प्रभाव हमारे व्यक्तिगत जीवन पर पड़ा है।

आय में वृद्धि का पारिवारिक जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है। अगर आय में वृद्धि होगी तो पारिवारिक आवश्यकताएं पूरी होंगी। दैनिक जीवन में आने वाली छोटी–बड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति होगी। कई परिवार आर्थिक स्थिति खराब होने की वजह से अपनी जरूरतों को पूरा नहीं कर पाते हैं। बच्चे पढ़ नहीं सकते, किताबें नहीं खरीद पाते। ऐसे कई जरूरतें होती हैं जो लोग पूरी नहीं कर पाते। अगर आय में वृद्धि होगी तो वे अपनी पारिवारिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। आजकल अनेक महिलाएं अपने परिवार की आवश्यकताओं को स्वयं अर्जित की गयी आय से चला रही हैं। अगर आय में कमी होती है तो दैनिक आवश्यकताएं पूर्ण नहीं हो पाती और उन्हें दुखों का सामना करना पड़ता है।

अगर आय में वृद्धि होगी तो हमारी आवश्यकताएं पूर्ण होंगी और परिजन आगे बढ़ सकेंगे। उन्हें अच्छा खाना, पढ़ना, कपड़ा मिलेगा। घर की स्थिति भी ठीक रहेगी। घर में आय बढ़ने से परिवार में बदलाव आयेगा। तभी ग्रामवासी, विशेषकर स्त्रियाँ, अपने सपने और इच्छाओं को पूरा कर सकते हैं।

◆◆●◆◆

नये अवसर मिल रहे

ईशा रौतेला

मैं ग्राम गोगिना की निवासी हूँ। मैंने बारहवीं तक पढ़ाई की है और इस में अच्छा परीक्षाफल भी प्राप्त किया। मैं कोविड–19 के कारण कक्षा दस की बोर्ड परीक्षा ठीक से नहीं दे पायी। इस कारण मुझे बारहवीं की बोर्ड परीक्षा में बहुत डर लग रहा था। फिर भी बारहवीं की बोर्ड परीक्षा अच्छी तरह समाप्त हुई तथा मैंने अच्छे अंक प्राप्त किये। मैं उत्तराखण्ड ओपन यूनिवर्सिटी से स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रही हूँ। मुझे सिर्फ घर का काम नहीं करना था इसलिए मैंने सिलाई सीखने की सोची।

मैं रोज सुबह नौ बजे सिलाई सेंटर में जाती हूँ। उस के बाद बारह बजे कम्प्यूटर सीखने जाती थी। मगर किसी कारणवश कम्प्यूटर का कोर्स पूरा नहीं कर पायी। कम्प्यूटर केन्द्र में बच्चों की संख्या बहुत कम हो गयी थी। इस कारण कम्प्यूटर गोगिना से शिफ्ट हो गये। मैंने कम्प्यूटर का कोर्स लगभग दो महीने ही किया। हम ने पहले दिन कम्प्यूटर के बारे में जाना। जैसे–कम्प्यूटर को खोलना, बन्द करना आदि। उसके बाद फोल्डर बनाना, डिलिट करना, माउस, यू. पी. एस. के बारे में सीखा। उसके बाद टाइपिंग करना सीखा। पहले दिन बहुत कठिन लगा। पहले हिन्दी में टाइपिंग सीखी। रोज टाइपिंग करने से अभ्यास हो गया और आसान लगने लगा। मैं धीरे–धीरे ठीक से टाइपिंग करना सीख गई। अब मैं हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में टाइपिंग करने लगी। कम्प्यूटर का कोर्स पूरा नहीं कर पायी इसका मुझे अफसोस है।

आजकल मैं सिलाई सीखने जाती हूँ। मैंने सबसे पहले तुरपन करना, बटन–काज, हुक–काज बनाना सीखा। सिलाई पुष्पा रौतेला सिखाती हैं। शुरूआत में अखबार पर समीज की कटिंग की। सभी कपड़ों की कटिंग सबसे

पहले अखबार पर ही की ताकि कपड़े पर कटिंग करने में गलती न हो। मैंने कपड़े में सबसे पहले बाबा सैट, कुर्त्ता, पैन्ट, प्लाजो, कुर्त्ती, फ्रॉक–प्लाजो बनाया। माँ के लिये ब्लाउज, पेटीकोट, कुर्त्ता–सलवार व बहन के लिए कुर्त्ती–पैन्ट व फ्रॉक–प्लाजो भी बनाया। अब मैं अन्य लोगों के लिए कपड़े सिलती हूँ। मैं सिलाई पूरे मन से सीख रही हूँ ताकि पहले तो अपने व परिवार के कपड़े खुद सिल सकूँ। जब अच्छी तरह से सिलाई सीख लूँगी तब दुकान खोलने की इच्छा है। मेरी आकांक्षा है कि अपनी जरूरतों को खुद पूरा कर पाऊँ, किसी पर आश्रित न रहूँ।

मैं अपने सारे शौक पूरे करना चाहती हूँ। इस के लिये गाँव में जो भी कार्यक्रम आता है, उस में भाग लेती हूँ। संस्था के कारण गाँव में रह कर ही आगे बढ़ने के अनेक अवसर मिल रहे हैं। इन अवसरों का लाभ उठाने से किशोरियाँ और नवयुवतियाँ अनेक कौशल सीख रही हैं। अपने सपने पूरा कर रही हैं। यही संस्था द्वारा किये जा रहे कार्यों की मूल धारणा भी है। महिलाएं, नवयुवतियाँ, किशोरियाँ नये कौशल सीखें, शिक्षा को आगे बढ़ायें, आय वृद्धि करें और आत्म सम्मान के साथ जीना सीखें, यही संस्था की चाह है। इस उद्देश्य को पूरा करने में हमारी संस्था सफल भी हो रही है।

◆◆●◆◆

प्यारा उत्तराखण्ड

खष्टी रौतेला

देवभूमि में विराजता एक भू खण्ड,
यही है मेरा प्यारा उत्तराखण्ड।
पहाड़ और नदियाँ इस की शान,
सब यहाँ अपने, न कोई अनजान।
पहाड़ी–मैदानी इलाके पाये जाते,
गढ़वाल, कुमाऊँ के हम कहलाते।
चार धाम प्रसिद्ध, यहाँ की धरोहर,
लगते प्यारे, सभी हैं मनोहर।
अतुलनीय सौंदर्य का नहीं घमण्ड,
यही है मेरा प्यारा उत्तराखण्ड।
सौन्दर्य से लिप्त यहाँ की संस्कृति,
अनुपम छटा, अतुलनीय प्रकृति।
कई जाति बोली के लोग करते निवास,
सभी रहते एकता के साथ।
हिमालय पर्वत यहाँ की शान,
इसी पर्वत से खिलता, भारत देश महान।।

◆◆●◆◆

उत्तराखंड महिला परिषद्

उत्तराखण्ड महिला परिषद् जागरूक एवं क्रियाशील ग्रामीण महिलाओं का एक संगठन है जिसने ग्राम समुदाय में विकास की मुख्य–धारा से अलग एक वैकल्पिक विकास के लिये क्रियान्वयन के तौर–तरीके विकसित किये हैं। उत्तराखण्ड में ग्रामीण महिलाओं के सबसे बड़े संगठन के रूप में प्रतिष्ठित महिला परिषद् का काम पहाड़ी जिलों में फैली हुई स्वैच्छिक संस्थाओं और ग्राम–स्तरीय संगठनों ने संभाला है। परिषद् समाज में व्याप्त असमानताओं में परिवर्तन लाने के लिए कटिबद्ध है।

उत्तराखण्ड में महिला संगठनों के साथ कार्यों की शुरूआत 1988 से हो गयी थी। विकास संबंधी समस्याओं को संस्थात्मक, व्यवहारिक एवं वैचारिक मध्यस्थता देने की जरूरत को समझते हुए, चार सौ पैंसठ महिला संगठनों की सोलह हजार सदस्याओं तथा बाइस स्वैच्छिक संस्थाओं की सम्मिलित आवाज ने 7 फरवरी, 2000 को उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा में उत्तराखण्ड महिला परिषद् का गठन किया। परिषद् की सदस्याओं में जाति, शैक्षणिक पृष्ठभूमि, उम्र के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता। बड़ी संख्या में पचास वर्ष से अधिक उम्र की महिलाएं कभी भी विद्यालय नहीं गयी हैं परंतु बीस से पचास वर्ष की अधिकतर महिलाएं पढ़ी–लिखी हैं। यह जरूरी नहीं कि गाँव की समृद्ध अथवा सब से ज्यादा पढ़ी–लिखी महिला ही परिषद् की सबसे क्रियाशील सदस्य हो। इस जनधारणा के विपरीत कि आर्थिक रूप से मजबूत या शिक्षित महिला ही अच्छा नेतृत्व कर सकती है, गाँवों में खेती कर रही प्रौढ़ महिलाएं परिषद् की अधिक क्रियाशील सदस्य हैं।

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, ग्रामीण महिलाओं के ऊपर विकास कार्यक्रमों को नहीं थोपती बल्कि उन्हें ग्राम शिक्षण केन्द्रों की शिक्षिकाओं, पुरूषों, अध्यापकों, युवाओं, स्थानीय अधिकारियों तथा अन्य संगठनों से प्रत्यक्ष रूप से मेल–जोल रखने तथा सीखने के अवसर प्रदान करती है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि परिषद् केवल उन्हीं कामों को महत्व दे, जो ग्रामीण महिलाओं द्वारा स्वयं आयोजित तथा क्रियान्वित किये जा सकें। स्त्री–पुरूष या फिर जातिगत असमानता से सम्बन्धित भावनाएं और बाधाएं गोष्ठियों में खुल कर सामने आते हैं। परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड के पहाड़ी इलाके में बदलाव लाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

जमीन–प्रबन्धन से जुड़े कार्यों में नर्सरी लगाना, चारा उत्पादन, घेराबंदी, खाद बनाना, रोक बाँध बनाना तथा जानवरों की मुक्त चराई पर सम्मिलित रूप से रोक लगाना, जंगलों को बचाना, वनीकरण एवं प्राकृतिक सम्पदाओं का पुनरूत्पादन आदि काम सम्मिलित हैं। इसके अलावा पानी से जुड़ी समस्याओं का समाधान (जैसे–पुराने स्रोतों का जीर्णोद्धार, वर्षा जल संरक्षण, पॉलीथीन की टंकियाँ, फेरो–सीमेंट टैंक आदि) संगठनात्मक तरीके से किया जाता है। स्वास्थ्य और स्वच्छता कार्यक्रमों में शौचालय बनाना, महिलाओं एवं नवयुवतियों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, व्यक्तिगत सफाई, घर एवं गाँव की स्वच्छता, पोषण संबंधी जानकारियों को फैलाना एवं इस से संबंधित गतिविधियों का संचालन आदि कार्य सम्मिलित रहे हैं। साथ ही, महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम भी संचालित किया गया।

आय संवर्धन के लिये जल–संचय टैंक बना कर फल–सब्जी का उत्पादन बढ़ाना, पॉलीहाउस में सब्जी उत्पादन, फलदार वृक्षों को बढ़ावा, सिलाई–बुनाई, ब्यूटीशियन प्रशिक्षण, होम स्टे, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, पहाड़ी अनाजों एवं फलों का प्रस्संकरण तथा विपणन आदि कार्य स्थानीय संस्थाओं द्वारा विभिन्न ग्राम–संकुलों में संचालित किये जा रहे हैं। कुछ नवयुवतियों ने अपने व्यवसाय शुरू किये हैं। सैकड़ों स्त्रियाँ घर में ही सिलाई और बुनाई का काम कर के स्वयं तथा परिजनों, पड़ोसियों के लिये कपड़े बना रही हैं। इस से बाजार में दर्जी को देने के बदले धन की बचत हो रही है। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक असमानता संबंधी विषयों पर शिक्षण के लिए गोष्ठियाँ, सेमीनार, कार्यशालाएं तथा प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। परिषद् की अनेक सदस्याएं पंचायत प्रतिनिधि बन कर ग्रामीण महिलाओं की आवाज को बढ़ा रही हैं। हर वर्ष परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड के विभिन्न पहाड़ी जिलों में महिला सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं।

संगठन की सदस्याएं विकास कार्यक्रमों में नीतिगत बदलाव की माँग करती हैं। विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी योजनाएं जो ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, खनन, कृषि, जंगल, पानी, आय–वृद्धि और पंचायती राज व्यवस्था के लिए क्रियान्वित हो रही हैं, उनके बारे में ग्रामीण महिलाओं की अपनी समझ, जानकारी और अनुभव हैं। साथ ही, उत्तराखण्ड महिला परिषद् के रूप में काम करते हुए महिलाओं ने अपनी एक वैकल्पिक समझ व कार्य–विधि विकसित की है। इन्हीं अनुभवों को आधार बनाकर उत्तराखण्ड महिला परिषद् की सदस्याएं, सरकारी नीतियों और योजनाओं में बदलाव की माँग कर रही हैं।

sevanidhi.almora @sevanidhi6198 usnpss